युग निर्माता राव जोधा

डॉ. मोहनलाल गुप्ता

राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर

प्रकाशक

राजस्थानी ग्रन्थागार

प्रकाशक एवं वितरक

सोजती गेट, जोधपुर (राज.)

फोनः 0291-2657531, 2623933 (O)

फोनः 0291-2432567 (R)

मोबाइलः 94142 43804, 94141 00334

e-mail : info@rgbooks.net
website : www.rgbooks.net

ISBN - 978-93-84168-27-8

प्रथम संस्करण : 2014

मूल्य : एक सौ पचास रुपये मात्र (150.00)

राजस्थानी ग्रंथागार के लिए टाईप सेटिंग परिहार डीटीपी एवं भारत प्रिण्टर्स, जोधपुर द्वारा मुद्रित

Yug Nirmata Rao Jodha

Author : Dr. Mohanlal Gupta ✯ 94140 76061
Publisher : Rajasthani Granthagar, Jodhpur ✯ 0291-2657531
First Edition : 2014 ✯ **Price :** Rs. 150.00

भूमिका

भारत में चौदहवीं शताब्दी का अंत तैमूर लंग के भयानक आक्रमण से हुआ। यह आक्रमण उत्तर भारत के लिये ऐसा नासूर बन गया जिसमें से शताब्दियों तक भारत की आत्मा का रक्त रिसता रहा। तैमूर लंग द्वारा उत्तरी भारत में लाखों लोगों की हत्या कर दिये जाने, हिन्दू तीर्थों का विनाश कर दिये जाने, बड़ी संख्या में गायों को मार दिये जाने, भारत के श्रेष्ठ कर्मकारों को पकड़कर समरकंद ले जाये जाने एवं दिल्ली का समस्त वैभव धूल में मिला दिये जाने के कारण दिल्ली सल्तनत धधकते हुए शमशान में बदल गई। तैमूर के लौट जाने के बाद, 1947 ई. तक ऐसी कोई भारतीय शक्ति उठ खड़ी न हुई जो दिल्ली को राजधानी बनाकर पूरे भारत पर शासन कर सके। विदेशी आक्रांता इसके अपवाद रहे।

दिल्ली की ऐसी जर्जर स्थिति के कारण पूरे भारत में अफरा-तफरी मच गई और बंगाल, गुजरात, मालवा, ताप्ती नदी घाटी में स्थित खानदेश, काश्मीर, जौनपुर, सिंध तथा मुल्तान के प्रांत दिल्ली की अधीनता त्यागकर स्वतंत्र राज्यों के रूप में स्थापित हो गये। दक्षिण में बहमनी राज्य तथा शक्तिशाली विजयनगर साम्राज्य का उदय हुआ।

राजपूताना में इस समय तक प्रतिहारों, चौहानों और परमारों की कमर टूट चुकी थी किंतु मेवाड़ अपने उत्थान के चरम पर था। आम्बेर के कच्छवाहे तथा मारवाड़ के राठौड़ यद्यपि विगत कुछ

शताब्दियों से अस्तित्व में थे किंतु मेवाड़ की शक्ति के समक्ष वे कुछ भी न थे। इसी राजनीतिक पृष्ठ-भूमि में पंद्रहवीं शताब्दी के दूसरे दशक में राव जोधा का जन्म हुआ। उसके जन्म से ठीक चार साल पहले दिल्ली के तख्त पर हर तरह से निर्बल, सैयद बैठे जिनके कमजोर हाथों में दिल्ली सल्तनत की नैया बुरी तरह हिचकोले खाने लगी थी तथा मेवाड़ के सिसोदियों को और अधिक मजबूत हो जाने का अवसर मिल गया था।

राव जोधा के जन्म के समय मेवाड़ की गद्दी पर मेवाड़ का प्रबलतम महाराणा कुम्भा शासन कर रहा था। जिस समय कुम्भा के संकेत पर राव जोधा के पिता रणमल की हत्या हुई तथा मारवाड़ राज्य को मेवाड़ में मिलाया गया, उस समय जोधा 22 वर्ष का नवयुवक था। कुम्भा जैसे प्रबल राजा की दाढ़ में से मण्डोर जैसे साधनहीन राज्य को निकालना एक निराश्रित, पितृहीन एवं राज्य विहीन राजकुमार के लिये असम्भव सा कार्य था। जोधा ने इस असम्भव दिखने वाले कार्य को सम्भव करके दिखाया। उसने तथा उसके पुत्रों ने लगभग पूरे थार मरुस्थल को अपने घोड़ों की टापों से रौंदकर अपने लिये एक विशाल राज्य की स्थापना की। जोधा के वंशजों ने भारत में दूर-दूर तक अपने राज्य स्थापित कर लिये। इतना ही नहीं मारवाड़ राज्य, भारत का तीसरा सबसे बड़ा राज्य बन गया। इस अद्भुत राजा ने भारत के इतिहास को ऐसे स्वर्णिम पृष्ठ प्रदान किये जो अन्य राजाओं के वश की बात नहीं थी।

यह पुस्तक उसी महान राजा 'राव जोधा' को एक विनम्र श्रद्धांजलि है जिसने साढ़े तीन दशकों तक अपने शत्रुओं से लोहा लिया तथा देशी एवं विदेशी शक्तियों को अपने अधीन करके हिन्दू संस्कृति, धर्म और राष्ट्र की रक्षा की। मैं इस पुस्तक के प्रकाशन के लिये राजस्थानी ग्रंथागार के मालिक श्री राजेन्द्र सिंघवी का आभार व्यक्त करता हूँ। आशा है पाठकों को यह पुस्तक पसंद आयेगी। शुभम्।

-डॉ. मोहनलाल गुप्ता
63, सरदारक्लब योजना,
वायुसेना क्षेत्र, जोधपुर

मोबाइल फोन: **94140 76061**
www.rajasthanhistory.com

अनुक्रमणिका



जसवंतथड़ा की पहाड़ी पर राव जोधा की मूर्ति

राव जोधा के पूर्वज

अनसुलझी गुत्थी

राव जोधा का पूर्वज राव सीहा पहला व्यक्ति था जो मारवाड़ में आया। उसी ने मरुस्थल में अपने राज्य की स्थापना का कार्य आरम्भ किया। सीहा कौन था और कहाँ से आया था, इस सम्बन्ध में इतिहासकारों में प्रबल मतभेद हैं। मारवाड़ के राठौड़ मानते आये हैं कि वे कन्नौज के राजा जयचंद के वंशज सीहा की संतान हैं। चंद बरदाई ने अपने ग्रंथ पृथ्वीराज रासो में कन्नौज के राजा विजयचंद्र तथा जयचंद्र को गाहड़वाल वंश का बताया है और उन्हें कमधज्ञ तथा राठौड़ लिखा है। कर्नल टॉड ने पृथ्वीराज रासो के उक्त वर्णन को आधार बनाकर मारवाड़ के राठौड़ों को जयचंद का वंशज तथा गाहड़वाल क्षत्रिय मान लिया है। भाटों ने भी इसी मत को स्वीकार कर लिया है। जबकि आधुनिक शोधों से यह स्पष्ट हो चुका है कि गाहड़वाल, राठौड़ नहीं थे, राठौड़ों की एक सुदीर्घ परम्परा कन्नौज के गाहड़वालों से भी कई शताब्दी पहले से चली आ रही थी। कन्नौज के गाहड़वालों और निकटवर्ती क्षेत्रों के राठौड़ों में वैवाहिक सम्बन्ध होते थे। इसलिये ये दोनों एक ही कुल के नहीं हो सकते। हॉर्नली पहले विद्वान थे जिन्होंने यह कहा कि राठौड़,

गहड़वालों से भिन्न हैं। कुछ विद्वानों की मान्यता है कि जोधपुर के राठौड़ मालखेड़[1] के राठौड़ों से निकले हैं।

कर्नल टॉड की गड़बड़

बांकीदास ने राठौड़ों की शाखाओं और उपशाखाओं के जो नाम दिये है उनमें गाहड़वालों का नाम नहीं है। अतः अनुमान लगाया जाता है कि बांकीदास के समय तक राठौड़ों को गाहहड़वाल नहीं माना जाता था। यह बाद में तब हुआ जब कर्नल टॉड ने पृथ्वीराज रासो को आधार बनाकर भ्रमवश राठौड़ों को गाहड़वाल मान लिया। भारत के प्राचीन क्षत्रिय राजवंश अपना सम्बन्ध सूर्यवंश, चन्द्रवंश एवं यदुवंश में से किसी एक के साथ मानते थे। गाहड़वाल सूर्यवंशी थे जबकि मारवाड़ के राठौड़ों को चंद्रवंशी माना जाता है। मारवाड़ के राठौड़ों के अतिरिक्त भी विभिन्न शाखाओं के राठौड़ों ने अपने शिलालेखों एवं ताम्रलेखों में स्वयं को चंद्रवंशी बताया है। इस आधार पर भी गाहड़वाल और राठौड़ एक नहीं हो सकते।

गौरीशंकर ओझा द्वारा व्यक्त संभावना

मारवाड़ के राठौड़ों के मूल पुरुष राव सीहा के मृत्यु स्मारक में उसे राठौड़ लिखा गया है तथा बीकानेर के महाराजा रायसिंह की बीकानेर दुर्ग की वि.सं. 1650 की वृहत् प्रशस्ति में भी उसके

[1] मूल नाम मान्यखेड़ था। यह दक्षिण भारत में स्थित था।

लिये गाहड़वाल वंश का प्रयोग न होकर राठौड़ वंशीय लिखा गया है। विभिन्न विद्वानों के मतों तथा अब तक प्राप्त ठोस तथ्यों के आधार पर गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने यह संभावना व्यक्त की है कि राजपूताना के वर्तमान राठौड़, बदायूं के राठौड़ों के वंशधर हो सकते हैं। हम भी इसी मत पर विश्वास करते हैं, जब तक कि कोई और ऐतिहासिक प्रमाण सामने नहीं आ जाता। पर्याप्त संभव है कि मुहम्मद गौरी ने 1194 ई. में जब राजा जयचंद पर आक्रमण किया तब बदायूं के राठौड़, जयचंद की सहायता के लिये युद्ध में उपस्थित हुए हों तथा जयचंद की पराजय के बाद विभिन्न स्थलों पर भटकते हुए मरुस्थल में आने को विवश हुए हों और बाद में लिखी गई ख्यातों में, राठौड़ों को कन्नौज से आया हुआ होने के कारण जयचंद का वंशज घोषित कर दिया गया हो।

मरुस्थल ही क्यों ?

प्राचीन काल में बहुत से राजा अपने राज्य के नष्ट हो जाने पर मरुस्थल में भाग आया करते थे। प्रतिहार नागभट्ट, शत्रुओं से परास्त होकर मरुस्थल में भाग आया था ताकि स्वप्न में भी उसे युद्ध के दर्शन न हों। भाटी, भटनेर का राज्य हाथ से निकल जाने पर मरुस्थल में चले आये थे। कर्नल टॉड ने लिखा है- 'सीहा, कन्नौज राज्य से भयभीत होकर भाग गया.......राजा जयचंद के वंश के कितने ही लोग मरुदेश में जा बसे थे।'

मरुस्थल की राजनीति में राठौड़ों का उदय

राव सीहा

राव सीहा के बारे में भाटों से लेकर मुहणोत नैणसी तथा कर्नल टॉड ने अनेक कपोल कल्पित बातें लिखी हैं जो ऐतिहासिक घटना क्रम की कसौटी पर खरी नहीं उतरतीं। इन लेखकों ने सीहा का काल 1118 ई. से 1273 ई. के बीच फैला दिया है। जो कि सही नहीं हो सकता। यह संभव है कि इन लोगों द्वारा लिखी गई बातों में से अधिकांश बातें सही हों किंतु सत्य बातें कौनसी हैं, कहा नहीं जा सकता।

जोधपुर राज्य की ख्यात में लिखा है कि राव सीहा, वरदाई सेन का पौत्र और सेतराम का पुत्र था। पाली से लगभग 22 किलोमीटर उत्तर-पश्चिम में स्थित बीठू गांव से राव सीहा का मृत्यु स्मारक मिला है जिसे स्थानीय भाषा में देवली कहते हैं। इस देवली के ऊपरी भाग में शत्रु की छाती में भाला मारते हुए अश्वारूढ़ सीहा की सुंदर मूर्ति बनी हुई है। इससे अनुमान होता है कि वह युद्ध क्षेत्र में लड़ते हुए काम आया। इस स्मारक पर एक लेख उत्कीर्ण है जिसके अनुसार राव सीहा की मृत्यु वि.सं. 1330 (1273 ई.) में हुई। केवल यही तथ्य राव सीहा के बारे में निर्विवाद रूप से सही माना जा सकता है। इस आधार पर, राठौड़ों के मरुस्थल की राजनीति में आगमन का समय 1273 ई. से कुछ दशक पूर्व माना जा सकता है।

राव सीहा अपने 200 आदमियों के साथ मरुस्थल में आया तथा उसने पालीवाल ब्राह्मणों के अनुरोध पर मुसलमान लुटेरों के विरुद्ध युद्ध करके मरुस्थल की राजनीति में हस्तक्षेप आरम्भ किया। इसी के साथ, राठौड़ों द्वारा मरुस्थल में मारवाड़ राज्य की स्थापना का काम आरम्भ हुआ। सीहा ने कई गांवों पर अधिकार कर लिया। वह मुसलमानों से लड़ते हुए काम आया। सीहा का अधिकार क्षेत्र पाली के निकट था और उसी क्षेत्र में उसकी मृत्यु हुई। मृत्यु के समय सीहा की आयु 80 वर्ष अनुमानित की जाती है। विभिन्न ख्यातों में सीहा की स्त्रियों की संख्या 6 तक बताई गई है। ज्ञात तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि इनमें से एक स्त्री पार्वती, कोलूमण्ड के सोलंकी राजा की पुत्री थी। मूथा नैणसी ने सीहा के पुत्रों की संख्या 5 तथा दयालदास सिंढायच ने 50 बताई है। अधिकांश ख्यातों में उसके 3 पुत्र बताये गये हैं- आस्थान, सोनिंग और अज। ये तीनों पुत्र सीहा की चावड़ी रानी से उत्पन्न हुए।

राव आस्थान

सीहा की मृत्यु के बाद आस्थान (अश्वत्थामा) उसका उत्तराधिकारी हुआ। ख्यातों के अनुसार आस्थान ने खेड़[2] के गोहिलों को छल से मारकर उनका राज्य छीना तथा खेड़ को अपनी राजधानी बनाया। इस कारण उसके वंशज 'खेड़ेचा'

---

[2] इसे भिरड़कोट भी कहते थे।

कहलाये। आस्थान ने भीलों को मारकर ईडर पर अधिकार किया और अपने छोटे भाई सोनिंग को दे दिया। सोनिंग के वंशज ईडरिया राठौड़ कहलाये। आस्थान ने अपने छोटे भाई अज को द्वारिका की तरफ भेजा। अज ने वहाँ के चावड़ा राजा विक्रमसेन को मारकर उसका सिर जलदेवी को चढ़ाया तथा द्वारिका के प्रदेश पर अधिकार कर लिया। इस कारण अज के वंशज 'बाढ़ेज' कहलाये। जब फीरोजशाह नामक किसी मुस्लिम आक्रांता ने पाली को लूटा और स्त्रियों आदि को पकड़ लिया तब आस्थान ने खेड़ से आकर उससे युद्ध किया तथा पाली के तालाब के निकट अपने 140 राजपूतों के साथ काम आया। जोधपुर राज्य की ख्यात, कर्नल टॉड तथा विश्वेश्वर नाथ रेउ के अनुसार आस्थान के आठ पुत्र हुए। दयालदास की ख्यात तथा बांकीदास ने उसके छः पुत्रों का उल्लेख किया है। निश्चित रूप से इतना ही कहा जा सकता है कि आस्थान वि.सं. 1330 (1273 ई.) में अपने पिता का उत्तराधिकारी हुआ और वि.सं. 1366 (1309 ई.) से पूर्व किसी समय उसकी मृत्यु हुई। रेउ ने आस्थान की मृत्यु तिथि 15 अप्रेल 1291 अथवा 2 मई 1992 को होनी अनुमानित की है।

राव धूहड़

आस्थान के बाद उसका पुत्र धूहड़ राठौड़ों का राजा हुआ। उसने 140 गांव जीतकर, अपने पिता द्वारा छोड़े गये राज्य की वृद्धि की। धूहड़ के समय लुम्ब ऋषि नामक एक ब्राह्मण, कन्नौज से राठौड़ों की कुलदेवी चक्रेश्वरी (आदि पक्षिणी) की मूर्ति लेकर

आया। राव धूहड़ ने इस मूर्ति को नागणा गांव में स्थापित किया। ख्यातों में लिखा है कि इस देवी ने धूहड़जी को नागिन रूप में स्वप्न में दर्शन दिये। इस कारण यह नागणेची के नाम से प्रसिद्ध हुई। कुछ स्रोतों के अनुसार राव धूहड़ इस मूर्ति को कर्णाटक से लेकर आया। उन दिनों में मण्डोर परिहारों के अधिकार में था। धूहड़ ने परिहारों को परास्त करके मण्डोर छीन लिया किंतु परिहारों ने फिर से मण्डोर पर अधिकार कर लिया। तरसींगड़ी गांव के निकट परिहारों से युद्ध करते हुए राव धूहड़ की मृत्यु हुई। पचपदरा के निकट तिगड़ी (तरसींगड़ी) गांव के तालाब से राव धूहड़ की देवली (मृत्यु स्मारक) मिली है। इस देवली पर अंकित लेख के अनुसार राव धूहड़ की मृत्यु वि.सं. 1366 (1309 ई.) में हुई।[3] विश्वेश्वर नाथ रेउ ने धूहड़ का राज्यकाल 1292 से 1309 ई. स्वीकार किया है। राव धूहड़ के सात पुत्र हुए।

राव रायपाल

धूहड़ की मृत्यु होने पर 1309 ई. में उसका ज्येष्ठ पुत्र रायपाल खेड़ की गद्दी पर बैठा। उसने अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिये परिहारों पर आक्रमण किया तथा मण्डोर पर अधिकार

[3] 1366 ई. की एक देवली पचपद्रा के निकट गांव के तालाब से प्राप्त हुई है जिसमें आस्थान के पुत्र धूहड़ की मृत्यु के बारे में लिखा गया है। अतः यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि आस्थान भी इस तिथि से पूर्व मृत्यु को प्राप्त हो चुका था।

कर लिया किंतु वह अधिक समय तक मण्डोर पर अधिकार नहीं रख सका। रायपाल ने बाड़मेर के निकट परमारों को पराजित किया तथा उनसे महेवा और आसपास की भूमि छीन ली। एक बार रायपाल के राज्य में अकाल पड़ गया। इस पर रायपाल ने अपनी प्रजा में अन्न बंटवाया। इस कारण उसे महीरेलण अर्थात् इन्द्र कहा जाने लगा। रायपाल संभवतः 1313 ई. में मृत्यु को प्राप्त हुआ। रायपाल के चौदह पुत्र थे।

राव कनपाल

रायपाल के बाद राव कनपाल 1313 ई. से 1323 ई. के बीच राठौड़ों का राजा हुआ। उसके समय में खेड़ तथा महेवा का पूरा क्षेत्र राठौड़ों के अधिकार में था तथा उसकी सीमाएं जैसलमेर के भाटियों के राज्य से लगती थीं। इसलिये भाटियों और राठौड़ों में युद्ध होते रहते थे। कनपाल के पुत्र भीम ने भाटियों को काक नदी के उस पार धकेल कर काक नदी को राठौड़ों और भाटियों के बीच की सीमा नियत किया। कनपाल का पुत्र भीम तथा बाद में स्वयं कनपाल भी भाटियों एवं मुसलमानों की संयुक्त सेनाओं से लड़ते हुए काम आये। कनपाल के तीन पुत्र थे- भीम, जालणसी तथा विजपाल।

राव जालणसी

कनपाल के बाद जालणसी 1323 ई. से 1328 ई. के बीच राजा बना। उसने उमरकोट के सोढ़ों को दण्डित किया तथा सोढ़ों के

मुखिया का साफा छीन लिया। ख्यातों के अनुसार उसी दिन से मारवाड़ के राठौड़ों ने साफा बांधना आरम्भ किया। जालणसी ने खेड़ राज्य पर चढ़कर आये मुसलमान आक्रांताओं से युद्ध करके उनके नेता हाजी मलिक को अपने हाथों से मारकर अपने चाचा की मृत्यु का बदला लिया। जालणसी ने भीनमाल पर आक्रमण करके सोलंकियों को दण्डित किया। यह भी भाटियों और मुसलमानों की संयुक्त सेना से युद्ध करते हुए काम आया। उसके तीन पुत्र थे- छाडा, भाकरसी तथा डूंगरसी।

राव छाडा

जालणसी के बाद उसके ज्येष्ठ पुत्र छाडा ने 1328 से 1344 ई. की अवधि में राज्य किया। उसने अपने राज्य की सीमा पर स्थित सोढ़ों तथा जैसलमेर के भाटियों से दण्ड वसूल किया। भाटियों ने अपनी पुत्री की विवाह छाडा से करके सुलह कर ली। इसके बाद छाडा ने पाली, सोजत, भीनमाल और जालोर पर चढ़ाई करके उन प्रदेशों को लूटा। जब राव छाडा इस युद्ध यात्रा के बाद जालोर के निकट रामा गांव में ठहरा हुआ था तब सोनगरों एवं देवड़ों ने अचानक हमला करके छाडा को मार डाला। छाडा के सात पुत्र थे।

राव तीडा

छाडा का उत्तराधिकारी राव तीडा हुआ जिसने 1344 से 1357 ई. तक राज्य किया। ख्यातों में लिखा है कि तीडा महेवा की गद्दी पर बैठा। महेवा को राव रायपाल ने अपने राज्य में मिलाया था।

इसलिये अनुमान किया जा सकता है कि रायपाल से लेकर तीडा के शासन की अवधि के किसी काल में राठौड़ों की राजधानी खेड़ से महेवा स्थानांतरित हो गई तथा यह खेड़ राज्य के स्थान पर महेवा राज्य कहलाने लगा। तीडा के समय में मारवाड़ के अधिकांश क्षेत्रों पर मुसलमानों का शासन हो गया। तीडा की मृत्यु किसी मुसलमान शासक से लड़ते हुए हुई। उसके तीन पुत्र थे- कान्हड़देव, त्रिभुवनसी तथा सलखा। सलखा को तीडा के जीवन काल में ही मुसलमानों द्वारा बंदी बना लिया गया।

कान्हड़देव

नैणसी की ख्यात तथा कुछ अन्य ख्यातों में तीडा के बाद कान्हड़देव तथा त्रिभुवनसी के गद्दी पर बैठने का उल्लेख आता है। जैसे ही कान्हड़देव महेवा की गद्दी पर बैठा, मुसलमानों ने महेवा पर आक्रमण करके महेवा पर अधिकार कर लिया किंतु कुछ ही समय बाद कान्हड़देव ने महेवा पर पुनः अधिकार कर लिया।

त्रिभुवनसी

कान्हड़देव के मारे जाने पर त्रिभुवनसी महेवा का राजा बना। कुछ समय बाद उसे सलखा के पुत्र मल्लीनाथ[4] ने मार डाला और महेवा पर अधिकार कर लिया। ख्यातों में लिखा है कि मल्लीनाथ ने

[4] मल्लीनाथ, त्रिभुवनसी का भतीजा था।

युद्ध में घायल त्रिभुवनसी के घावों पर नीम की पत्तियों में विष मिलवाकर लगवा दिया जिससे त्रिभुवनसी की मृत्यु हुई।

राव सलखा

सलखा को उसके पिता के जीवन काल में ही मुसलमानों ने बंदी बना लिया था जिसे बड़ी कठिनाई से छुड़वाया जा सका। जिस समय कान्हड़देव राजा हुआ, उसने सलखा को एक गांव की जागीर दी किंतु जब महेवा पर मुसलमानों ने अधिकार कर लिया तो सलखा ने महेवा का कुछ भाग मुसलमानों से छीनकर भिरड़कोट में अपना राज्य जमाया। जोधपुर राज्य की ख्यात के अनुसार सलखा एक छोटा ठाकुर था और सिवाणा के निकट गापेड़ी गांव में रहता था, जहाँ उसके ज्येष्ठ पुत्र मल्लीनाथ का जन्म हुआ। टॉड के अनुसार सलखा के वंशज सलखावत कहलाये। टॉड के समय में सलखावत राठौड़, महेवा तथा राड़धरा में बड़ी संख्या में विद्यमान थे तथा वहाँ के भोमिये थे। रेउ ने सलखा का राज्यकाल 1357 से 1374 ई. स्वीकार किया है। मुसलमानों ने एक दिन सलखा पर अचानक चढ़ाई करके उसे मार डाला।

रावल मल्लीनाथ

जोधपुर राज्य की ख्यात के अनुसार राव सलखा के दो रानियां थीं जिनसे उसके चार पुत्र मल्लीनाथ, जैतमाल, वीरम तथा सोमित एवं एक पुत्री विमली हुई, जिसका विवाह जैसलमेर के रावल घड़सी के साथ हुआ। सलखा की मृत्यु के बाद उसका ज्येष्ठ

पुत्र मल्लीनाथ 1374 ई. में महेवे और खेड़ का स्वामी हुआ। वह अपनी रानी के कहने से तपस्या करके सिद्ध पुरुष बना तथा उसने कूण्डा पंथ की स्थापना की। ख्यातों में मल्लीनाथ को माला कहा गया है। उसके तथा उसके वंशजों द्वारा शासित क्षेत्र मालानी कहलाया। उसने रावल की पद्वी धारण की। उसके वंशज रावल या महारावल कहलाते रहे। उसका पुत्र जगमाल भी प्रतापी योद्धा हुआ। 1378 ई. में मुसलानों ने 13 दलों की एक विशाल सेना लेकर माला पर आक्रमण किया। माला ने 13 दलों की इस विशाल सेना को परास्त कर दिया। इस घटना की स्मृति में मारवाड़ में एक कहावत है- 'तेरह तुंगा भांगिया माले सलखाणी।'

वीरमदेव

मल्लीनाथ का छोटा भाई वीरमदेव था। मल्लीनाथ के पुत्र जगमाल तथा वीरमदेव में अनबन रहती थी इसलिये वीरम, महेवा में न रहकर, खेड़ में गुढ़ा (ठिकाना) बांध कर रहता था। महेवा में खून करके कोई अपराधी वीरमदेव के गुढ़े में शरण मांगता तो वीरम उसे अपने पास रख लेता। इस पर जगमाल में और वीरमदेव में झगड़ा बढ़ गया और वीरमदेव महेवा राज्य का त्याग कर, जैसलमेर, नागौर तथा जांगलू आदि प्रदेशों में लूटमार करने लगा। बाद में वह जोहियावाटी में जाकर जोहियों के साथ रहने लगा। 1383 ई. में उसने जोहियों को मारकर उनके राज्य पर अधिकार करना चाहा। इस प्रयास में वीरमदेव मारा गया। वीरमदेव की चार रानियां थीं जिनसे उसे पांच पुत्र हुए। वीरमदेव की मृत्यु के समय

उसका पुत्र चूण्डा कम आयु का था। उसकी मां भटियाणी, वीरमदेव की पटराणी थी तथा वह वीरमदेव के पीछे सती हो गई। इसलिये चूण्डा अपने ताऊ मल्लीनाथ के पास जाकर महेवा में रहने लगा।

राव चूण्डा (चामुंडराय)

चूण्डा का जन्म कब हुआ और अपने पिता की मृत्यु के समय उसकी अवस्था कितनी थी, यह कहना कठिन है। विभिन्न ख्यातों में चूण्डा के सम्बन्ध में अलग-अलग वृत्तांत दिये गये हैं। इनके आधार पर कहा जा सकता है कि वीरम की मृत्यु के बाद चूण्डा कालाऊ गांव में आल्हा चारण के यहाँ रहने लगा। जब चूण्डा आठ-नौ वर्ष का हुआ तो आल्हा उसे रावल मल्लीनाथ के पास ले गया। जब चूण्डा बड़ा हुआ तो मल्लीनाथ ने उसे गुजरात की तरफ अपनी सीमा की चौकसी करने के लिए नियत किया। एक बार चूण्डा ने घोड़ों के व्यापारियों से उनके घोड़े छीनकर अपने राजपूतों में बांट दिये। जब रावल मल्लीनाथ से इसकी शिकायत की गई तो मल्लीनाथ ने सौदागरों को उन घोड़ों का मूल्य चुकाया तथा चूण्डा को अपने राज्य से निकाल दिया।

चूण्डा, ईंदा परिहारों के पास जाकर रहने लगा। कुछ दिनों बाद उसने डीडवाणा को लूटा। इसके बाद उसने ईंदा परिहारों के सहयोग से मण्डोर पर अधिकार करने की योजना बनाई। एक दिन उसने अपने सैनिकों को घास की गाड़ियों में छिपाकर मण्डोर दुर्ग

के भीतर भेज दिया तथा वहाँ के मुस्लिम शासक को मारकर मण्डोर पर अधिकार कर लिया। जब चूण्डा के ताऊ रावल मल्लीनाथ को ज्ञात हुआ कि चूण्डा ने मण्डोर पर अधिकार किया है तब उसने मण्डोर आकर चूण्डा की प्रशंसा की। मण्डोर आठवीं शताब्दी से परिहारों के अधिकार में चला आ रहा था किंतु चौदहवीं शताब्दी में मुसलमानों ने अधिकार कर लिया था। ईंदा नहीं चाहते थे कि मण्डोर फिर से मुसलमानों के हाथों में जाये। इसलिये ईंदो ने विचार किया कि मण्डोर का दुर्ग राठौड़ों के पास रहने दिया जाये। ईंदों के मुखिया राय धवल ने चूण्डा की शक्ति बढ़ाने के लिये अपनी पुत्री का विवाह चूण्डा के साथ कर दिया तथा उसे दहेज में मण्डोर का दुर्ग दे दिया। इस सम्बन्ध में यह सोरठा प्रसिद्ध है-

इन्दां रो उपकार, कमधज मत भूलौ कदे।
चूंडो चंवरी चाढ, दी मण्डोवर दायजे।।

ज्यातिषियों ने चूण्डा का राज्याभिषेक कर दिया और वह मण्डोर का राव कहलाने लगा। यह घटना 1394 ई. के लगभग घटित होनी अनुमानित है। मण्डोर प्राप्त हो जाने पर चूण्डा ने मण्डोर राज्य में रहने वाले सिंधल, कोटेचा, मांगलिया, आसायच आदि राजपूतों को अपनी सेवा में रख लिया। इसके बाद चूण्डा ने आसपास के मुसलमानों को खदेड़ना आरम्भ किया। उसने खाटू, डीडवाना, सांभर, अजमेर तथा नाडौल आदि स्थानों से शाही अधिकारियों को खदेड़ दिया। इस काल में दिल्ली के तख्त पर तुगलक शासन कर रहे थे तथा उसकी ओर से गुजरात में गवर्नर

जफर खाँ नियुक्त था। जब उसे ज्ञात हुआ कि चूण्डा मुसलमानों को उजाड़ रहा है तो वह सेना लेकर मण्डोर पर चढ़ आया। लम्बी घेराबंदी के बाद भी वह चूण्डा को परास्त नहीं कर सका। इस पर वह चूण्डा से नाममात्र की शपथ लेकर कि अब चूण्डा मुसलमानों को तंग नहीं करेगा, वापस गुजरात लौट गया।

1399 ई. में राव चूण्डा ने नागौर पर चढ़ाई की और वहाँ के खोखर शासक को मार कर नागौर पर अधिकार कर लिया। राव मल्लीनाथ ने भी इस कार्य में चूण्डा की सहायता की। चूण्डा अपने पुत्र सत्ता को मण्डोर में रखकर स्वयं नागौर में रहने लगा। चूण्डा ने भाटियों के राजा राणागदे को मारा और उसका माल लूटकर नागौर ले आया। मोहिलों की बहुत सी भूमि पर अधिकार करने के कारण मोहिल[5] आसराव माणिकरावोत ने चूण्डा से अपनी पुत्री ब्याह दी। कुछ ही समय में चूण्डा ने डीडवाना, सांभर, अजमेर तथा नाडौल पर भी अधिकार कर लिया।

चूण्डा की सफलताएं अपने समय की तुलना में बहुत बड़ी थीं। उस काल में मरुस्थल में भाटी, सांखला, जोहिया, परिहार, चौहान तथा मुसलमान सक्रिय थे। उनसे निरंतर लड़ते रहना और अपने लिये एक नया राज्य बनाकर उसका विस्तार करते रहना अत्यंत कठिन कार्य था किंतु चूण्डा आजीवन इस कार्य को करता रहा। चूण्डा ने अपने राज्य की सीमाएं निर्धारित करने का प्रयास

[5] मोहिल, चौहानों की एक शाखा है।

किया तथा अपने अधीनस्थ सहयोगियों को सामंत व्यवस्था में ढालने का काम किया।

जोधपुर राज्य की ख्यात, मुंहणोत नैणसी की ख्यात, कविराजा श्यामलदास तथा कर्नल टॉड ने चूण्डा के चौदह पुत्रों और एक पुत्री का उल्लेख किया है। उनके नामों में कुछ भिन्नता है किंतु सत्ता, रणमल, कान्हा, अरडकमल तथा हंसाबाई सहित अधिकांश नाम एक जैसे ही हैं। चूण्डा का बड़ा पुत्र रणमल था किंतु चूण्डा ने अपनी मोहिल रानी के कहने पर उसके पुत्र कान्हा को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया तथा रणमल से कहा कि वह कहीं और जाकर रहे। रणमल, पिता की आज्ञा मानकर पिता का राज्य त्यागकर मेवाड़ के महाराणा लाखा के पास चला गया जो रणमल का बहनोई भी था।

रणमल के चले जाने के कुछ दिनों बाद मोहिल रानी के दुर्व्यवहार से व्यथित होकर कई राजपूत सरदार चूण्डा से नाराज हो गये और रणमल के साथ चले गये। जब नागौर पर भाटी एवं मुसलमान एक साथ चढ़कर आये तो राव चूण्डा ने उनका सामना किया तथा 15 मार्च 1423 को लड़ते हुए काम आया। चूण्डा के मारे जाने पर सत्ता ने मण्डोर में और कान्हा ने जांगलू में सेना का संगठन किया। नागौर पर मुहम्मद फीरोज का अधिकार हो गया। चूण्डा ने चांडासर बसाया था, जहाँ रणमल की माता रहती थी, जो चूण्डा के साथ सती हुई। टॉड के अनुसार राठौड़ों के इतिहास में राव चूण्डा का प्रमुख स्थान है।

राव कान्हा

राव चूण्डा की मृत्यु हो जाने पर रणमल ने मेवाड़ से आकर अपने सौतेले छोटे भाई कान्हा को मण्डोर का टीका दिया और स्वयं सोजत में रहने लगा। राव चूण्डा को मारने में देवराज सांखला का भी हाथ था। इसलिये कान्हा ने जांगलू में जाकर सांखलों को मारने का विचार किया।

सांखलों ने रणमल से सहायता मांगी। इस पर रणमल अपनी सेना लेकर सारूंडा पहुंच गया। त्रिभुवनसी के पुत्र ऊदा (राठौड़) ने रणमल से कहा कि आप ढील करें तो अच्छा होगा क्योंकि यदि कान्हा मारा गया तो आपको ही भूमि मिलेगी और यदि सांखला मारा गया तो जांगलू आपके अधिकार में आ जायेगा। यह सुनकर रणमल सारूंडा में ही ठहरा रहा। इस युद्ध में कान्हा की विजय हुई और सांखला राजा के चारों पुत्र मारे गये। इस आशय का एक दोहा इस प्रकार से है-

सधर हुआ भड़ सांखला, ग्यो भाजै काझाल।
वीर रतन ऊदौ विजो, बछो नै पुनपाल।।

इस युद्ध कुछ दिनों बाद पेट में शूल की बीमारी होने से कान्हा का भी देहांत हो गया। दयालदास की ख्यात के अनुसार कान्हा ने लगभग ग्यारह महीने राज्य किया।

राव सत्ता

कान्हा की मृत्यु के बाद चूण्डा का पुत्र सत्ता राठौड़ों का राजा हुआ। उसके बारे में ख्यातों में परस्पर विपरीत बातें लिखी हुई हैं। उनमें से सत्य और असत्य का निर्धारण करना कठिन है। ख्यातों के अनुसार सत्ता अपने अंतिम समय में अंधा हो गया था और मदिरा पान बहुत करता था। यह भी निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि सत्ता के राजा बनने के बाद सत्ता के पुत्र नरबद और सत्ता के भाई रणधीर में विवाद उत्पन्न हो गया। सत्ता के अधिकतर भाई भी सत्ता के विरोधी हो गये। इस कारण उन्होंने सत्ता के स्थान पर रणमल को राजा बनाने का निर्णय लिया।

ख्यातों पर निर्भर है सत्रह राजाओं का इतिहास

राव सीहा से लगाकर राव रणमल तक कुल 17 राजा हुए। इनका वास्तविक इतिहास अब तक अंधकार में है। इन राजाओं के इतिहास के विश्वसनीय स्रोत के रूप में राव सीहा और राव धूहड़ के मृत्यु शिलालेखों को छोड़कर कोई भी विश्वसनीय सामग्री प्राप्त नहीं हुई है। इसलिये राव सीहा से लेकर रणमल तक सत्रह राजाओं के वृत्तान्त के लिए ख्यातों का ही आश्रय लेना पड़ता है। इनमें से कुछ तथ्यों की पुष्टि दूसरे वंशों के समकालीन इतिहास से होती है।

रणमल द्वारा मेवाड़ राज्य की रक्षा

रणमल के सम्बन्ध में भी विभिन्न ख्यातों में परस्पर विरोधी और असत्य बातें मिलती हैं। उनमें से अधिकांश बातें इतिहास की कसौटी पर खरी नहीं उतरतीं। फिर भी ज्ञात सामग्री के आधार पर निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि रणमल ने अपने पिता के जीवित रहते ही पिता का राज्य त्याग दिया और वह नागौर से चलकर नाडोल के निकट धणला गांव में जाकर ठहरा जहाँ सोनगरा चौहान राज्य करते थे। उसने चौहानों से युद्ध करके उन्हें परास्त किया।

मेवाड़ की शरण में

रणमल कुछ दिनों तक धणला में रहकर चित्तौड़ के महाराणा लाखा के पास चला गया जो कि रणमल का बहनोई भी था। चूण्डा की बहिन हंसाबाई का विवाह महाराणा लाखा से इस शर्त पर हुआ था कि यदि हंसा बाई की कोख से पुत्र उत्पन्न होता है तो वही मेवाड़ का शासक बनेगा। यद्यपि इस विवाह के समय महाराणा लाखा का पुत्र चूण्डा युवा था किंतु चूण्डा के कहने पर महाराणा लाखा ने यह शर्त मान ली तथा हंसाबाई से विवाह कर लिया। जब रणमल महाराणा लाखा के पास रहने आया तो लाखा ने उसे चालीस गांवों के साथ धणला गांव भी जागीर में दिया जहाँ से रणमल ने चौहानों को मार भगाया था। कुछ समय में ही रणमल,

महाराणा लाखा का विश्वासपात्र बन गया तथा मेवाड़ की सेनाओं का नेतृत्व करने लगा। उसने अजमेर पर विजय प्राप्त करके अजमेर को मेवाड़ राज्य में सम्मिलित कर दिया। इससे लाखा, रणमल से अत्यधिक प्रसन्न हो गया।

मेवाड़ की राजनीति में प्रवेश

1421 ई. में राणा लाखा की मृत्यु होने पर उसका 12 वर्षीय पुत्र मोकल मेवाड़ की गद्दी पर बैठा। उसका जन्म रणमल की बहन हंसाबाई की कोख से हुआ था। मोकल की अल्पायु के कारण स्वर्गीय महाराणा लाखा का बड़ा पुत्र चूण्डा उसका अभिभावक बना और उसने मोकल के नाम पर मेवाड़ का शासन चलाया। कुछ ही समय में हंसाबाई और चूण्डा के बीच अविश्वास पनपने लगा। हंसाबाई को संदेह होने लगा कि अवसर मिलने पर चूण्डा मेवाड़ के सिंहासन को हस्तगत कर लेगा। जब दोनों के बीच विवाद बढ़ने लगे तो चूण्डा मेवाड़ छोड़कर माण्डू के सुल्तान की सेवा में चला गया। इस घटना में, हंसाबाई और उसके भाई रणमल की भूमिका के सम्बन्ध में ख्यातों में परस्पर-विरोधी विवरण मिलते हैं। मेवाड़ के अनेक ख्यातकारों तथा वीर विनोद के लेखक श्यामलदास के अनुसार चूण्डा, माण्डू जाते समय राघवदेव के अतिरिक्त, अन्य सभी भाईयों को अपने साथ ले गया। राघवदेव को मोकल एवं पैतृक राज्य मेवाड़ की सुरक्षा के निमित्त चित्तौड़ छोड़ गया। चूण्डा के जाने के बाद मेवाड़ राज्य में रणमल की स्थिति सर्वोपरि हो गई। उसने महाराणा मोकल की निष्ठापूर्वक सेवा की और महाराणा के

विरुद्ध उठने वाले विद्रोहों का दमन किया। रणमल के बढ़ते हुए प्रभाव से सिसोदिया सामन्त घबरा उठे और उन्हें लगने लगा कि एक दिन मेवाड़ पर राठौड़ों की सत्ता स्थापित हो जायेगी। अतः उन्होंने रणमल का विरोध करना आरम्भ कर दिया। रणमल को भी अपने नेतृत्व में राठौड़ सैनिकों की एक शक्तिशाली सेना खड़ी करनी पड़ी, जिसका व्यय मेवाड़ राज्य को उठाना पड़ा।

सौतेले भाई को राजतिलक

1423 ई. में रणमल के पिता राव चूण्डा की, नागौर के युद्ध में मृत्यु हो गई। यह सूचना मिलने पर रणमल मेवाड़ से मण्डोर आया तथा पिता को दिये हुए वचन के अनुसार उसने अपने सौतेले भाई कान्हा का राजतिलक किया। इसके बाद रणमल, मेवाड़ न जाकर मारवाड़ राज्य के सोजत गांव में रहने लगा। भाटियों ने रणमल के पिता चूण्डा को मारा था इसलिये रणमल भाटियों का क्षेत्र लूटने लगा। भाटियों ने सुलह करने के लिये अपने चारण भुज्ञा संढ़ायच को रणमल के पास भेजा। भुज्ञा के यशगान करने से रणमल प्रसन्न हो गया। इस पर भाटियों ने अपनी कन्या रणमल से ब्याह दी। इसके बाद रणमल ने भाटियों का क्षेत्र लूटना बंद कर दिया। इसी भटियाणी रानी की कोख से रणमल के बड़े पुत्र जोधा का जन्म हुआ।

रणमल को मण्डोर राज्य की प्राप्ति

राव सत्ता के छोटे भाई रणधीर ने, रणमल को मण्डोर राज्य पर अधिकार करने के लिये उकसाया। उसका तर्क था कि रणमल को मण्डोर पर अधिकार कर लेने का पूरा अधिकार है क्योंकि चूण्डा ने राज्य कान्हा को दिया था न कि सत्ता को। रणमल ने रणधीर का अनुरोध स्वीकार कर लिया तथा 1427 ई. में मेवाड़ की सेना की सहायता से मण्डोर पर आक्रमण किया। सत्ता के पुत्र नरबद ने रणमल का सामना किया किंतु नरबद परास्त हो गया। रणमल ने मण्डोर पर अधिकार कर लिया। मण्डोर पर अधिकार कर लेने के बाद रणमल, मण्डोर को अपनी राजधानी बनाकर राज्य करने लगा। रणमल का राज्य मण्डोर से लेकर पाली, सोजत, जैतारण और नाडौल तक था। रणमल ने झाबर में कचरा सींधल, जेतारण में तोगा सींधल, बगड़ी में चरडा सींधल तथा सोजत में नाढ़ा सींधल को मारा। सींधलों से निबटकर रणमल ने केल्हण भाटी[6] को मारकर बीकमपुर को लूटा और बिहारी पठान हसन खाँ से जालोर छीन लिया। राव रणमल ने गंगा स्नान के उद्देश्य से तीर्थ यात्रा की तथा गया तीर्थ में जाकर बहुत से दान-पुण्य किये।

---

[6] केल्हण भाटी की पुत्री कोडमदे से रणमल का विवाह हुआ जिसके गर्भ से जोधा का जन्म हुआ।

रणमल के लौट जाने पर मेवाड़ की दुर्दशा

रणमल के मण्डोर चले जाने के बाद मेवाड़ राज्य की दुर्दशा होने लगी। मोकल यद्यपि युवा हो गया था किंतु शासन का बहुत सा काम अब भी हंसाबाई करती थी। चूण्डा जैसा प्रतापी राजकुमार, अपने अन्य भाइयों एवं मेवाड़ी सरदारों के साथ, माण्डू के सुलतान की सेवा कर रहा था जो कि चित्तौड़ का शत्रु था। मेवाड़ की कमजोरी भांप कर मालवा के सुल्तान होशंगशाह ने मेवाड़ राज्य के अधीन स्थित गागरोण दुर्ग पर आक्रमण किया। दुर्ग का रक्षक अचलदास खींची, जो मोकल का संबंधी भी था, लड़ता हुआ मारा गया और गागरोण पर होशंगशाह का अधिकार हो गया। नागौर के मुस्लिम शासक फिरोजखाँ से भी मोकल का संघर्ष हुआ, जिसमें मेवाड़ को पराजय का सामना करना पड़ा। बून्दी के हाड़ाओं ने भी मेवाड़ की सीमाओं का अतिक्रमण किया और माण्डलगढ़ तक का क्षेत्र अधिकृत कर लिया। गोड़वाड़ के क्षेत्र में सिरोही के शासक ने अव्यवस्था फैला दी। इस प्रकार, मोकल के शासनकाल में मेवाड़ के प्रभुत्व एवं प्रभाव में कमी आने लगी। ऐसी स्थिति में गुजरात के सुल्तान अहमदशाह ने मेवाड़ पर आक्रमण कर दिया। उसने डूंगरपुर, केलवाड़ा और देलवाड़ा के क्षेत्रों में भारी लूटमार की। महाराणा मोकल उसका सामना करने के लिए सेना सहित चित्तौड़ से रवाना हुआ। 1433 ई. में जब वह जीलवाड़ा क्षेत्र में पड़ाव डाले हुए था तो उसके दो चाचाओं- चाचा और मेरा, जो कि महाराणा

क्षेत्रसिंह की अवैध सन्तान थे, ने महाराणा मोकल की हत्या कर दी।

पुनः मेवाड़ की ओर

अपने भांजे मोकल की हत्या का समाचार सुनते ही रणमल ने अपने सिर से साफा उतार कर फेंटा बांध लिया और प्रतिज्ञा की कि जब तक हत्यारों को मार न डालूंगा, सिर पर पगड़ी नहीं बाँधूंगा। रणमल अपने 500 सिपाहियों को अपने साथ लेकर चित्तौड़ के लिये रवाना हो गया। चाचा तथा मेरा कोटड़ा अथवा पई के पहाड़ों में भाग गये और मेरों की सुरक्षा में रहने लगे। रणमल ने मेरों को महाराणा की सेवा में रखवाकर, उनकी सहायता से पहाड़ों के बीच छिपे हुए चाचा व मेरा को मार डाला तथा 6 वर्ष के बालक कुंभकर्ण (महाराणा कुम्भा, 1433-1468 ई.) को मेवाड़ की गद्दी पर बैठाया। कुम्भा का शासन निष्कंटक बनाने के लिये रणमल ने मेवाड़ के विद्रोही सरदारों को मेवाड़ से निकाल कर अपने विश्वास के बहुत से राठौड़ों को महत्त्वपूर्ण पदों पर नियुक्त कर दिया।

रणमल का चरमोत्कर्ष

कुम्भा के 12-13 वर्ष की आयु होने तक रणमल ही मेवाड़ राज्य का वास्तविक शासन चलाता रहा। उसने अनेक युद्ध अभियानों में मेवाड़ की सेना का नेतृत्व किया तथा सारंगपुर (मालवा), नागौर, गागरौन, नराणा (जयपुर), खाटू, चाटसू (जयपुर) आदि युद्ध अभियानों में विजय प्राप्त की। 1435-36 ई. में

रणमल ने मेवाड़ की ओर से बूंदी पर आक्रमण किया। बूंदी के शासक बेरीसाल ने आत्मसमर्पण कर दिया और माण्डलगढ़ क्षेत्र मेवाड़ को वापस लौटा दिया। बेरीसाल ने कुम्भा की अधीनता तथा उसे वार्षिक कर चुकाना स्वीकार किया। बूदी के हाड़ओं का दमन रणमल की शक्ति का चरमोत्कर्ष था।

रणमल की हत्या

रणमल द्वारा राठौड़ सरदारों को मेवाड़ राज्य में महत्त्वपूर्ण पद दे दिये जाने से सिसोदिया सरदारों में रणमल के विरुद्ध असंतोष पनप गया और वे कुम्भा के कान भरने लगे कि रणमल सिसोदियों का राज्य हड़पना चाहता है। कुछ समय बाद रणमल को कुम्भा के चाचा राघवदेव पर संदेह हो गया कि वह कुम्भा को हटाने का षड़यंत्र कर रहा है। इसलिये रणमल ने राघवदेव को छल से दरबार में बुलवाया तथा कुम्भा के सामने ही राघवदेव की हत्या करवा दी। इस घटना के बाद कुम्भा का मन रणमल से फिर गया तथा उसने रणमल के विरुद्ध अपने वंश के सिसोदिया गुट का समर्थन करना आरम्भ कर दिया। कुम्भा ने अपने पिता के हत्यारों के साथियों- महपा और अक्का को क्षमा कर दिया तथा उन्हें चित्तौड़ लौटने की अनुमति दे दी। वे लोग मांडू से लौट आये और महाराणा की सेवा करने लगे। इसके बाद कुम्भा का ताऊ चूण्डा भी मेवाड़ लौट आया।

थोड़े दिनों में ही अक्का ने कुम्भा का विश्वास जीत लिया। उसने कुम्भा को विश्वास दिलाया कि रणमल अपनी सैन्य-शक्ति के सहारे मेवाड़ का सिंहासन हड़पना चाहता है। मेवाड़ के सरदारों ने रणमल की प्रेयसी दासी भारमली को अपनी ओर मिला लिया। भारमली ने कुम्भा से कह दिया कि रणमल, मेवाड़ पर अधिकार करना चाहता है। इस पर कुम्भा ने अपने आदमियों को रणमल की हत्या करने की सहमति दे दी। भारमली ने एक रात रणमल को खूब शराब पिलाई। जब रणमल बेसुध हो गया तब सिसोदिया सरदारों ने रणमल को उसी की पगड़ी से पंलग पर बांध दिया। इसके बाद महपा और उसके साथियों ने रणमल को मौत के घाट उतार दिया। रणमल की हत्या होने के पश्चात् महाराणा कुम्भा ने मण्डोर राज्य पर भी अधिकार कर लिया। वि.सं. 1496 (1439 ई.) के राणपुर के शिलालेख में कुम्भा की मण्डोर विजय का उल्लेख है। अतः इस तिथि से पूर्व ही रणमल की हत्या हुई होगी। रेउ ने रणमल की हत्या की तिथि 2 नवम्बर 1438 बताई है।

रणमल का व्यक्तित्व

रणमल भीमकाय, पितृ-भक्त एवं वीर व्यक्ति था। पिता के कहने से उसने राज्य पर अधिकार छोड़ दिया था किंतु अपने पिता के हत्यारों से वैर निकालने में कोई कमी न रख छोड़ी। रणमल ने जीवन भर सक्रिय रहकर अपने लिये उस युग की राजनीति में स्थान बनाये रखा। उसने न केवल अंधे एवं मदिरा में मत्त रहने वाले सत्ता से अपने पिता का राज्य वापिस छीना अपितु उसका विस्तार

भी किया। रणमल ने अपने राज्य में निश्चित वजन के बाट जारी किये। बहन हंसादेवी ने उसे दुर्दिनों में सहारा दिया था इसलिये उसने मेवाड़ राज्य की आजीवन सेवा की। रणमल ने न केवल अपने भांजे की हत्या का बदला लिया अपितु मारवाड़ छोड़कर मेवाड़ जा रहा ताकि अपनी बहिन के वंशजों का राज्य सुरक्षित रख सके। परिस्थिति वश उसे मेवाड़ की राजनीति में पूरी तरह से संलग्न हो जाना पड़ा। उस युग में यह कोई भी कैसे सहन कर सकता था कि सिसोदियों के राज्य में सिसोदियों के स्थान पर राठौड़ों को उच्च पद दिये जायें। इस कारण 12 साल के कुम्भा ने रणमल की ओर से आशंकित होकर, रणमल की हत्या करने के लिये अपनी सहमति दे दी तथा रणमल के पैतृक राज्य पर भी अधिकार कर लिया।

मरुस्थल की राजनीति में रणमल का स्थान

सीहा के मरुस्थल में आने से लेकर रणमल तक, राठौड़ों में तीन राजा सर्वाधिक प्रभावशाली हुए- मालानी, चूण्डा तथा रणमल। इनमें से मालानी निःसंदेह, अत्यंत प्रभावशाली हुआ किंतु उसके वंशज शीघ्र ही नेपथ्य में चले गये तथा मालानी के भाई वीरमदेव के वंशज चूण्डा और रणमल मरुस्थल की राजनीति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने आगे आ गये। चूण्डा का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य यह था कि उसने राठौड़ शक्ति का केन्द्र खेड़ तथा महेवा के स्थान पर मण्डोर कर दिया तथा पूरी तरह स्वतंत्र मण्डोर राज्य की स्थापना की। उसने नागौर, मोहिलों के कुछ

क्षेत्र, डीडवाना, सांभर, अजमेर, तथा नाडौल पर भी अधिकार कर लिया। इसलिये मरुस्थल की राजनीति में चूण्डा एक प्रभावशाली राजा हुआ किंतु वह अजेय नहीं था। न वह अपने राज्य का ढंग से संगठन कर सका। वह अपने सरदारों को भी प्रसन्न नहीं रख सका। वह रणमल जैसे वीर पुत्र का भी महत्त्व नहीं समझ सका और उसे अपने जीते जी ही दूर कर दिया तथा अंत में शत्रुओं द्वारा घेर कर मार डाला गया।

रणमल ने मेवाड़ की राजनीति में प्रथम बार में लगभग 4 वर्ष तक तथा दूसरी बार में लगभग 6 वर्ष तक प्रमुख भूमिका निभाई। मारवाड़ में भी उसकी कुछ भूमिका अवश्य थी। रणमल का राज्य मण्डोर से लेकर पाली, सोजत, जैतारण और नाडौल तक फैल गया। उसने जालोर के पठान शासक को भी मारा किंतु रणमल के युद्ध अभियानों का लाभ मारवाड़ की बजाय मेवाड़ को अधिक मिला। रणमल के मेवाड़ में रहने के दौरान, मेवाड़ की सेना द्वारा सारंगपुर (मालवा), नागौर, गागरौन, नराणा (जयपुर), माण्डलगढ़, बूंदी, खाटू, चाटसू (जयपुर) आदि सफल युद्ध अभियान आयोजित किये गये। इनमें से अधिकांश अभियानों में रणमल की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। मेवाड़ की राजनीति में अधिक रुचि लेने के कारण वह मारवाड़ राज्य का ढंग से निर्माण नहीं कर सका। यहाँ तक कि उसने अपने पुत्रों के लिये एक अत्यंत कमजोर राज्य छोड़ा जिसे कुम्भा ने बड़ी सरलता से अपने अधीन करके 15

साल तक दबाये रखा। इस प्रकार मरुस्थल की राजनीति में रणमल अधिक प्रभावी भूमिका नहीं निभा सका।

रणमल की संतति

जोधपुर राज्य की ख्यात के अनुसार रणमल के चौबीस पुत्र हुए। दयालदास की ख्यात, वीर विनोद तथा टॉड कृत राजस्थान में भी कुछ अंतर के साथ रणमल के चौबीस पुत्रों के नाम दिये गये हैं। रेउ ने रणमल के 26 पुत्रों की सूची दी है- 1. अखैराज, 2. जोधा, 3. कांधल, 4. चांपा, 5. लाखा, 6. भाखरसी, 7. डूंगरसी, 8. जैतमाल, 9. मंडला, 10. पाता, 11. रूपा, 12. कर्ण, 13. सांडा, 14. मांडण, 15. ऊदा, 16. वेरा, 17. हापा, 18. अड़वाल, 19. जगमाल, 20 नाथा, 21. करमचन्द, 22. सींधा, 23. तेजसी, 24. सायर, 25. सगता, 26. गोयन्द।

जोधा का दीर्घ कालीन संघर्ष

जोधा का जन्म

राव रणमल के 26 पुत्र थे। उनमें से जोधा दूसरे क्रम पर था। जोधा का जन्म राव रणमल की भटियाणी रानी कोडमदे के गर्भ से हुआ। कोडमदे वीकूंपुर और पूंगल के स्वामी केल्हण भाटी की पुत्री थी। टॉड ने लिखा है कि जोधा का जन्म धनला गांव में हुआ। गौरी शंकर हीराचंद ओझा ने जोधा को रणमल का सबसे बड़ा पुत्र बताया है किंतु विश्वेश्वर नाथ रेउ ने जोधा को रणमल का द्वितीय पुत्र बताया है। ओझा ने जोधा की जन्म तिथि 1 अप्रेल 1416 स्वीकार की है जबकि रेउ के अनुसार जोधा का जन्म 29 मार्च 1415 को हुआ। टॉड ने संवत् 1484 अर्थात् 1427 ई. में जोधा का जन्म होना लिखा है किंतु यह तिथि सही नहीं मानी जा सकती। रेउ द्वारा दी गई तिथि को ही सही माना जाना चाहिये।

पिता के साथ

1427 ई. में जिस समय रणमल ने सत्ता से मण्डोर छीना था, यद्यपि उस समय जोधा केवल 12 वर्ष का था तथापि वह अपने पिता के साथ रणक्षेत्र में गया। 1433 ई. में जब राव रणमल, महाराणा मोकल की हत्या का बदला लेने के लिये मेवाड़ गया, उस समय भी जोधा अपने पिता के साथ गया। 1438 ई. में जब मेवाड़ राजपरिवार में रणमल के विरुद्ध घातक घड़यंत्र रचा गया



तब भी जोधा अपने पिता के साथ चित्तौड़ के दुर्ग में था। जब रणमल को मेवाड़ में अपने विरुद्ध चल रहे षड़यंत्रों की भनक मिली तो रणमल ने जोधा को सावधान कर दिया तथा उसे दुर्ग से बाहर चले जाने को कहा। जोधा अपने घोड़ों को चराने के बहाने, अपने साथियों सहित चित्तौड़गढ़ दुर्ग की तलहटी में चला गया।

जोधा का चित्तौड़ से पलायन

जब राव रणमल की हत्या हुई तो एक डोम ने किले की दीवार पर चढ़कर उच्च स्वर से यह दोहा गाया-

चूण्डा अजमल आविया, मांडू हूं धक आग।
जोधा रणमल मारिया, भाग सके तो भाग।। [7]

डोम के शब्द सुनते ही तलहटी में उपस्थित जोधा तथा उसके साथियों ने जान लिया कि राव रणमल मारा गया और अब उन पर भी प्राणों का संकट आने वाला है। इसलिये जोधा अपने

[7] कुछ ख्यातों के अनुसार इस दोहे को शहनाई के सुर में बजाया गया।

700 साथियों सहित मारवाड़ की तरफ चल पड़ा। जोधा का चाचा भीम चूंडावत उस समय मद्य के नशे में बेहोश पड़ा था इसलिये वह वहीं छूट गया।

चूण्डा का प्रतिशोध

कुम्भा का ताऊ चूण्डा सिसोदिया, महाराणा लाखा का बड़ा पुत्र था तथा महाराणा लाखा के पश्चात् राज्य का अधिकारी था। उसे चूण्डा लाखानी भी कहते हैं। मारवाड़ की राजकुमारी हंसाबाई के सम्बन्ध हेतु नारियल चूण्डा के लिये ही आया था किंतु महाराणा लाखा ने परिहास किया कि अब हम वृद्धों के लिये नारियल कौन भेजेगा! चूण्डा ने ये शब्द सुन लिये और अपने पिता से कहा कि मैं हंसाबाई से विवाह नहीं करूंगा। इस पर मारवाड़ वालों ने इस शर्त पर हंसाबाई का सम्बन्ध वयोवृद्ध महाराणा लाखा से कर दिया कि यदि हंसाबाई की कोख से पुत्र जन्मेगा तो वही मेवाड़ का उत्तराधिकारी होगा। चूण्डा ने यह शर्त स्वीकार कर ली और इस प्रकार वह राज्याधिकार से वंचित हो गया। जब लाखा मर गया और हंसाबाई की कोख से जन्मा मोकल, महाराणा हुआ तो हंसाबाई ने चूण्डा को मेवाड़ छोड़कर चले जाने के लिये विवश कर दिया तथा अपने भाई रणमल को अपनी सहायता के लिये बुला लिया। चूण्डा के लिये यह निःसंदेह बहुत अपमान जनक था। फिर भी पिता को दिये वचन का अनुसरण करके चूण्डा अपने भाइयों एवं साथियों सहित माण्डू के सुल्तान के यहाँ चला गया। चूण्डा के मेवाड़ से चले जाने के बाद रणमल ने न केवल अनेक सिसोदियों

को मेवाड़ राज्य से निकाल दिया अपितु कई बड़े सरदारों को मौत के घाट उतार दिया। इतना ही नहीं, चूण्डा के भाई राघवदेव को जिसे चूण्डा, राज्य की रक्षा के लिये चित्तौड़ में छोड़ गया था, उसे भी रणमल ने भरे दरबार में बुलाकर महाराणा कुम्भा की आंखों के सामने मार डाला। इस प्रकार मारवाड़ के राठौड़ों के कारण चूण्डा ने जीवन भर कष्ट और अपमान भोगा था। अतः चूण्डा के हृदय में प्रतिशोध की आग जल रही थी जो कि रणमल के रक्त की धार से भी नहीं बुझी। ऐसे प्रबल शत्रुओं का समूल नाश किये बिना चूण्डा चैन से कैसे बैठ सकता था! इसलिये चूण्डा अपनी सेना लेकर जोधा के पीछे हो लिया।

राठौड़ों और सिसोदियों में संघर्ष

जोधा अपने सात सौ सैनिकों के साथ मरुस्थल की तरफ भागा जा रहा था। चूण्डा विकराल रूप धारण करके उसके पीछे लग गया। मेवाड़ की सेना के समक्ष जोधा की शक्ति कुछ भी न थी। जोधा के पास, धैर्य पूर्वक मण्डोर की तरफ भागते रहने के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं था। चीतरोड़ी गांव के पास पहुंचते-पहुंचते चूण्डा की सेना ने राठौड़ों के दल को आ घेरा। शत्रु के अचानक आ धमकने से दोनों पक्षों में घमासान आरम्भ हो गया। सूर्य का प्रकाश रहने तक दोनों दलों के बीच तलवारें चलती रहीं। जब रात का अंधेरा हो गया तो राठौड़ों ने फिर से मारवाड़ की राह पकड़ी। चूण्डा भी उनके पीछे लग गया। कपासन के निकट चूण्डा ने एक बार पुनः जोधा को आ घेरा। इस स्थान पर दोनों पक्षों में

घमासान हुआ जिसमें दोनों तरफ के बहुत से आदमी काम आये। इस लड़ाई में जोधा का भाई पाता रणखेत रहा तथा जोधा का चचेरा भाई वरजांग जो कि भीम चूण्डावत का पुत्र था, घायल हो जाने के कारण मेवाड़ वालों के हाथ लग गया। जोधा यहाँ से भी निकल भागने में सफल रहा। इसके बाद और भी कई स्थानों पर लड़ाईयाँ हुईं पर जोधा, चूण्डा के हाथ नहीं लगा। जिस समय राठौड़ों का दल सोमेश्वर की नाल के निकट पहुंचा, तब तक 600 राठौड़ सैनिक काम आ चुके थे। मेवाड़ की सेना अब भी उनके पीछे लगी हुई थी। राठौड़ों ने तंग घाटी में मोर्चा जमाया तथा जोधा को सात सैनिकों के साथ मण्डोर की तरफ रवाना कर दिया। सोमेश्वर की नाल में हुए घमासान में मेवाड़ के योद्धा बड़ी संख्या में मारे गये तथा राठौड़ों का पूरा दल नष्ट हो गया। जब जोधा देसूरी से 6 मील दूर माण्डल में था तब जोधा का भाई कांधल भी उससे आ मिला। विभिन्न ख्यातों में दिये गये विवरण से ज्ञात होता है कि अन्त में जोधा केवल सात घुड़सवारों के साथ मारवाड़ पहुंचने में सफल रहा।

मण्डोर राज्य पर कुम्भा का अधिकार

चूण्डा ने मारवाड़ में प्रवेश करके मण्डोर पर अधिकार कर लिया। राठौड़ों की पूरी सेना नष्ट हो चुकी थी और चूण्डा को रोकने वाला कोई नहीं था। मण्डोर हाथ से निकल गया देखकर जोधा जांगल प्रदेश में घुस गया तथा काहूनी (कावनी) गांव में जाकर ठहरा। चूण्डा इस घनघोर मरुस्थल में नहीं गया। उसने अपने पुत्रों



कुन्तल, मांजा, सूवा तथा झाला विक्रमादित्य एवं हिंगूलु आहाड़ा आदि सरदारों को मण्डोर का प्रबंध सौंप कर स्वयं चित्तौड़ लौट गया। चूण्डा ने मण्डोर के चारों ओर मेवाड़ के थाने स्थापित कर दिये ताकि जोधा मण्डोर में प्रवेश न कर सके।

रणमल का श्राद्ध कर्म

चूण्डा जब जांगलू प्रदेश में पहुंच गया तो उसने कोडमेदेसर तालाब के निकट अपने पिता का श्राद्धकर्म किया। इस तालाब की स्थापना जोधा की माता रानी कोडमदे ने की थी। रानी कोडमदे इसी तालाब के निकट रहती थी। इस अवसर पर रानी कोडमदे सती हो गई।

राघवदेव की सोजत में नियुक्ति

जब मण्डोर पर रावत चूण्डा सिसोदिया का अधिकार हो गया तब उसने महाराणा कुम्भा को संदेश भिजवाया कि वे मेवाड़ से और सेना भेजकर सोजत को सदा के लिये मेवाड़ राज्य में मिला लें। इस पर महाराणा ने मारवाड़ के स्वर्गीय राव चूण्डा राठौड़ के

पौत्र राघवदेव[8] को सोजत जागीर में देकर, सोजत पर अधिकार करने भेजा। उसे यह भी लालच दिया गया कि यदि वह सोजत का अच्छी तरह प्रबंध करेगा तो मण्डोर भी उसी के अधिकार में दे दिया जायेगा। राघवदेव ने न केवल सोजत पर अधिकार कर लिया अपितु बगड़ी, कापरड़ा, चौकड़ी और कोसाना भी अपने अधिकार में ले लिये और वहाँ अपनी चौकियाँ स्थापित कर दीं।

नरबद का जोधा पर आक्रमण

रणमल ने अपने भाई सत्ता से मण्डोर छीना था, तब सत्ता का पुत्र नरबद, रणमल से लड़ने आया था किंतु परास्त होकर भाग गया था। नरबद अभी भी जीवित था तथा महाराणा कुम्भा की सेवा में रहता था। मण्डोर पर अधिकार हो जाने के बाद महाराणा ने उसे कायलाना की जागीर दी। नरबद ने मेवाड़वालों की सहायता प्राप्त की तथा काहूनी में रह रहे जोधा के विरुद्ध अभियान किया। जब जोधा को ज्ञात हुआ कि नरबद मेवाड़ की सेना लेकर आ रहा है तो जोधा और भी विषम मरुस्थल में जा घुसा। नरबद निराश होकर लौट आया। जोधा भी गहन मरुस्थल से निकलकर काहूनी आ गया।

[8] यह स्वर्गीय चूण्डा राठोड़ के पुत्र सहसमल का पुत्र था।

राज्य प्राप्ति हेतु संघर्ष का आरम्भ

मेवाड़ के शासकों में महाराणा कुम्भा सर्वाधिक शक्तिशाली एवं प्रतापी शासक हुआ। उसने मेवाड़ राज्य को न केवल सुरक्षित बनाया अपितु अपने राज्य की उत्तर और पूर्व दिशाओं में उसकी सीमाओं का विस्तार भी किया। कुम्भा ने अपने समय के शक्तिशाली मालवा और गुजरात के सुल्तानों को परास्त किया। उसने नागौर के मुसलमानों को दण्डित किया। उससे टक्कर लेना कोई हँसी-खेल नहीं था किंतु जोधा के भाग्य में कुम्भा जैसा प्रबल शत्रु ही लिखा था। जोधा ने काहूनी गांव में राठौड़ों की सेना एकत्रित करनी आरम्भ की तथा फिर से मण्डोर प्राप्ति का प्रयास करने लगा।

वरजांग की वापसी

कपासण की लड़ाई में जोधा के चाचा भीम का पुत्र वरजांग घायल होकर मेवाड़ी सेना द्वारा बंदी बनाया गया था। कुछ समय बाद वह मेवाड़ी सेना के चंगुल से छूटने में सफल रहा तथा गागरौण के खींची चौहान चाचिगदेव के पास चला गया। चाचिगदेव ने अपनी पुत्री की विवाह वरजांग से कर दिया तथा वरजांग को विपुल धन दिया। वरजांग यह धन लेकर जोधा के पास आ गया। इस धन से जोधा को सेना तैयार करने में बहुत सहायता मिली।

मण्डोर अभियानों की असफलता

जोधा ने मण्डोर पर कई बार आक्रमण किये परन्तु उसे सफलता नहीं मिली। कुम्भा से संघर्ष करते हुए साल पर साल बीतने लगे। जोधा के पास संसाधनों का अभाव था। इसलिये उसके घोड़े मरने लगे और वह नये घोड़े खरीदने की स्थिति में नहीं था। जोधा के सैनिक भी दिन-प्रति दिन घटने लगे। ऐसी स्थिति में कोई भी राजकुमार निराश होकर राज्य की आस छोड़ बैठता किंतु जोधा हार मानने वालों में से न था। वह बार-बार शक्ति संग्रहण करके मण्डोर पर आक्रमण करता और पराजित होकर भाग आता। जोधा की पराजयों के समाचार मारवाड़ में दूर-दूर तक फैल गये।

गर्म घाट की कथा

ख्यातों में वर्णन आया है कि एक दिन जोधा मण्डोर के मोर्चे से पराजित होकर भागता हुआ एक गांव में एक जाट के घर ठहरा। जाट की स्त्री ने थाली में गरम घाट (मोठ और बाजरे की खिचड़ी) भरकर जोधा को खाने के लिये दी। जोधा उस समय भूख से व्याकुल था। उसने तुरंत थाली के बीच में हाथ डाल दिया, जिससे हाथ जल गया। यह देखकर उस स्त्री ने कहा- 'तू तो जोधा जैसा ही निर्बुद्धि दीख पड़ता है।' इस पर उसने पूछा- 'बाई, जोधा निर्बुद्धि कैसे है?' उस स्त्री ने उत्तर दिया- 'जोधा किनारे की भूमि पर तो अधिकार जमाता नहीं है और एकदम मण्डोर पर चढ़ बैठता है। इस कारण उसे अपने घोड़े और राजपूत मरवाकर भागना

पड़ता है। इसी से मैं उसे निर्बुद्धि कहती हूँ। तू भी वैसा ही है, क्योंकि किनारे से तो खाता नहीं और एकदम बीच की गरम घाट पर हाथ डालता है।' यह सुनकर जोधा ने मण्डोर लेने का विचार छोड़कर मारवाड़ राज्य के किनारे की भूमि पर अधिकार करने का निश्चय किया।[9]

[9] यह कथानक ख्यातकारों के मस्तिष्क की उपज अधिक जान पड़ता है क्योंकि किसी राज्य पर अधिकार कैसे किया जाता है, यह जोधा जैसा कर्मनिष्ठ एवं उद्यमशील व्यक्ति बहुत अच्छी तरह जानता होगा।

जोधा को मण्डोर राज्य की प्राप्ति

हंसाबाई की सहृदयता

मारवाड़ पर कुम्भा का अधिकार हुए पन्द्रह साल बीत गये किंतु जोधा को सफलता नहीं मिल रही थी। अपने भतीजे जोधा की ऐसी दुर्दशा देखकर, महाराणा कुम्भा की दादी हंसाबाई ने एक दिन कुम्भा को अपने पास बुलाकर कहा- 'मेरे चित्तौड़ ब्याहे जाने में राठौड़ों का सब प्रकार नुकसान ही हुआ है। रणमल ने मोकल को मारने वाले चाचा और मेरा को मारा, मुसलमानों को हराया और मेवाड़ का नाम ऊंचा किया परन्तु अन्त में वह भी मरवाया गया और आज उसी का पुत्र जोधा निस्सहाय होकर मरू भूमि में मारा-मारा फिरता है।' महाराणा ने कहा- 'मैं प्रकट रूप से तो चूण्डा के विरुद्ध जोधा को सहायता नही दे सकता क्योंकि रणमल ने उसके भाई राघवदेव को मरवाया था। आप जोधा को लिख दें कि वह मण्डोर पर अधिकार कर ले, मैं इस बात से नाराज नहीं होऊंगा।' तदनन्तर हंसाबाई ने आशिया चारण डूला को जोधा के पास यह संदेश देने के लिए भेजा। डूला चारण, जोधा को ढूंढता हुआ मारवाड़ की थलियों के गांव भाडंग और पड़ावे के जंगलों में पहुंचा, जहाँ जोधा अपने कुछ साथियों सहित बाजरे के सिट्टों से

क्षुधा शांत कर रहा था। चारण ने उसे पहचान कर हंसाबाई का संदेश सुनाया।[10]

कुम्भा के सरदारों से मेल

अपनी बुआ हंसाबाई का संदेश पाकर जोधा का हौंसला बढ़ गया। उसने नये सिरे से राज्य प्राप्ति के प्रयास आरम्भ किये तथा कूटनीति का सहारा लेते हुए तेजी से अपने मित्रों की संख्या बढ़ानी आरम्भ की। जोधा ने चूण्डा की ओर से मारवाड़ में नियुक्त सरदारों से भी सम्पर्क किया तथा उनमें से कुछ को अपना मित्र बनाने में सफलता प्राप्त कर ली। जब चूण्डा ने मारवाड़ राज्य पर अधिकार किया था तब बहुत से भाटी सरदारों ने राठौड़ों से शत्रुता होने के कारण, मेवाड़ की अधीनता स्वीकार कर ली थी। रणमल ने भी भाटियों को मारा था किंतु अब मण्डोर पर सिसोदियों को अधिकार हुए 15 साल बीत गये थे इससे भाटियों और राठौड़ों की शत्रुता में भी कमी आ गई थी। इसके अतिरिक्त जोधा की माँ, भाटियों की

---

[10] डॉ. दशरथ शर्मा ने लिखा है कि विशुद्ध राजनीतिक मामलों में इस प्रकार के अनुरोधों का कोई महत्व नहीं होता। जोधा और कुम्भा की सेनाओं के मध्य लड़े जाने वाले निरन्तर युद्ध इस प्रकार की मान्यता का अपने आप खण्डन करते हैं। यह भी ध्यान देने की बात है कि जोधा द्वारा मण्डोर पर अधिकार कर लेने के बाद स्वंय कुम्भा ने सेना सहित जोधा के विरुद्ध प्रस्थान किया था।

राजकुमारी थी। इसलिये बहुत से भाटी सरदार भी जोधा की सहायता करने के लिये तैयार हो गये।

चूण्डा सिसोदिया की मृत्यु

इसी बीच 1453 ई. में जोधा के सौभाग्य से महाराणा कुम्भा के ताऊ चूण्डा सिसोदिया की मृत्यु हो गई। अब कुम्भा को यह भय नहीं रहा कि यदि जोधा को मण्डोर दे दिया जाये तो चूण्डा नाराज हो जायेगा। चूण्डा की मृत्यु से जोधा का हौंसला और अधिक बढ़ गया।

हरभू सांखला का आशीर्वाद

भुण्डेल के महाराज सांखला के पुत्र हरभूजी, बाबा रामदेव के मौसेरे भाई थे। हरभू ने रामदेव की प्रेरणा से अस्त्र-शस्त्र त्यागकर गुरु बाली नाथ से दीक्षा ली थी। वे सिद्ध माने जाते थे तथा मरुस्थल की प्रजा पर उसका बड़ा प्रभाव था। जोधा ने हरभू से सहयोग लेने का निश्चय किया तथा हरभू का आशीर्वाद लेने जा पहुंचा। हरभू ने जोधा को एक कटार दी तथा विजयी होने का आशीर्वाद देते हुए भविष्यवाणी की कि जोधा का राज्य मेवाड़ से जांगलू तक फैलेगा। इस प्रकार हरभू सांखला भी जोधा के सहायक हो गये। हरभूजी के सहयोग से जोधा की स्थिति में सुधार आता चला गया। जोधा ने कुछ नये अश्व खरीदे और चौहान तथा भाटी सरदारों के सहयोग से एक नई सेना संगठित करके कुम्भा को चुनौती देने की तैयारी करने लगा।

जोधा को घोड़ों की प्राप्ति

जोधा के पास मण्डोर पर अभियान करने के लिये पर्याप्त घोड़े नहीं थे। इसलिये वह सेतरावा के रावत लूणकरण के पास गया और उससे अनुरोध किया कि मेरे पास राजपूत तो हैं परन्तु घोड़े मर गये हैं। आपके पास 500 घोड़े हैं, उनमें से 200 घोड़े मुझे दे दें। लूणकरण, जोधा का मौसा लगता था किंतु वह महाराणा की ओर से नियुक्त था इसलिये उसने जोधा को उत्तर दिया कि मैं राणा का आश्रित हूँ। यदि मैं तुम्हें घोड़े दूंगा तो राणा मेरी जागीर छीन लेगा। इस पर जोधा, लूणा की ठकुरानी के पास गया। लूणा की ठकुरानी, भाटियों की राजकुमारी थी तथा जोधा की सगी मौसी थी। उसने जोधा को उदास देखकर, उसकी उदासी का कारण पूछा। जोधा ने कहा कि मैने रावतजी से घोड़े मांगे थे, पर उन्होंने घोड़े देने से मना कर दिया। इस पर भटियाणी ने कहा कि चिंता मत कर मैं तुझे घोड़े दिलाती हूँ। भटियाणी ने अपने पति को महल में बुलाया तथा उसे कुछ आभूषण देकर कहा कि इन आभूषणों को तोशाखाने में रख दो। जब रावत आभूषण रखने तोशाखाने में गया तो भटियाणी ने बाहर से किवाड़ बन्द करके ताला लगा दिया और जोधा के साथ अपनी एक दासी भेजकर अस्तबल वालों से कहलाया कि रावत का आदेश है कि जोधा को सामान सहित घोड़े दे दें। इस प्रकार जोधा वहाँ से 140 घोड़े लेकर रवाना हो गया। कुछ देर बाद भटियाणी ने अपने पति को ताला खोलकर बाहर निकाला। रावत अपनी ठकुराणी और कामदारों पर बहुत अप्रसन्न हुआ और उसने

घोड़ों के चरवादारों को पिटवाया परन्तु जोधा के साथ गये हुए घोड़े किसी भी तरह वापस नहीं मिल सके।

अन्य राजपूतों का सहयोग

हरभू सांखला का आशीर्वाद तथा लूणकरण से घोड़े प्राप्त करके जोधा ने विभिन्न शाखाओं के राठौड़ों एवं अन्य कुलों के मित्र राजपूतों से सम्पर्क किया। मालानी के राठौड़, सिवाना के जैतमलोत राठौड़, पोकरन के पोकरणा राठौड़, सेतरावा के देवराजोत राठौड़ जोधा का साथ देने को तैयार हो गये। इसी प्रकार रूण के सांखला राजपूत, ईंदावाटी के ईंदा, सेखाला (शेरगढ़ तहसील) के गोगादे चौहान, गागरौन के खींची चौहान, बीकमपुर के भाटी, पूगल के भाटी तथा जैसलमेर के भाटी भी जोधा की सहायता के लिये आगे आ गये।

चौकड़ी तथा कोसाना पर अधिकार

1453 ई. में महाराणा कुम्भा मालवा और गुजरात के सुल्तानों से संघर्ष करने में व्यस्त था। मण्डोर पर अधिकार जमाने के लिये यही उपयुक्त समय था। जोधा ने अपनी सेना को तीन भागों में विभक्त किया। उसने एक सेना वरजांग के साथ मण्डोर की तरफ भेजी। दूसरी सेना चांपा की अध्यक्षता में कोसाना पर भेजी तथा तीसरी सेना जोधा स्वयं लेकर चौकड़ी की तरफ गया। कोसाना तथा चौकड़ी में अर्द्धरात्रि के समय आक्रमण किये गये। इससे उन गांवों में नियुक्त सैनिक टुकड़ियों में अव्यवस्था फैल गई तथा दोनों

गांव राठौड़ों के अधिकार में आ गये। मेवाड़ वालों के घोड़े भी जोधा के हाथ लगे। ख्यातों के अनुसार जिस समय चौकड़ी पर आक्रमण हुआ उस समय सोजत का ठाकुर राघवदेव भी चौकड़ी में था किंतु वह जान बचाकर मेवाड़ की तरफ भाग गया।

जोधा द्वारा मण्डोर राज्य पर अधिकार

कोसाना तथा चौकड़ी पर अधिकार कर लेने के बाद ये दोनों सेनाएं रात्रि में चलकर मण्डोर के निकट वरजांग की सेना से आ मिलीं। प्रातः होने से पूर्व मण्डोर दुर्ग पर आक्रमण किया गया तथा मेवाड़ी अधिकारियों को मारकर मण्डोर दुर्ग पर अधिकार कर लिया गया। इन आक्रमणों में महाराणा की ओर से नियुक्त वणवीर भाटी, राणा बीसलदेव, रावल दूदा आदि मेवाड़ी अधिकारी मारे गये। मण्डोर के युद्ध में रावत चूण्डा सिसोदिया के दो पुत्र कुंतल तथा सूआ, चचेरा भाई अक्का तथा आहाड़ा हिंगोला[11] भी मारे गये। जोधा के भी बहुत से सैनिक मारे गये। मान्यता है कि हरभू सांखला भी इस युद्ध में जोधा की तरफ से लड़ते हुए काम आये। इस प्रकार 1453 ई. में मण्डोर पर जोधा का अधिकार हो गया। इसके बाद जोधा ने सोजत पर भी अधिकार कर लिया। मण्डोर में नियुक्त अधिकांश सिसोदिया सैनिकों को मौत के घाट उतार कर राठौड़ों ने अपना पुराना हिसाब चुकता किया।

---

[11] आहाड़ा हिंगोला की छतरी मण्डोर में बनी हुई है।

क्या मण्डोर का द्वार धोखे से खुलवाया गया था?

कुछ ख्यातों में यह लिखा है कि राव रणमल के दादा वीरमदेव का एक विवाह मांगलिया शाखा के सिसोदियों की पुत्री से हुआ था। जब रणमल चित्तौड़ में रहता था तो मांगलिया कल्याणसिंह और रणमल के बीच घनिष्ठ मित्रता हो गई थी। जब 1453 ई. में जोधा ने मण्डोर पर आक्रमण किया तो यही मांगलिया कल्याणसिंह मण्डोर का कोतवाल था। पुरानी मैत्री का विचार करके कल्याणसिंह ने मण्डोर दुर्ग का द्वार खुलवा दिया। इस कारण जोधा को मण्डोर दुर्ग जीतने में अधिक समय नहीं लगा।

ख्यातों में बिना सिर-पैर की बहुत सी अनर्गल बातें लिखी हैं। राव वीरमदेव को मरे हुए 70 वर्ष तथा राव रणमल को मरे हुए 15 वर्ष हो चुके थे। रोटी-बेटी का सम्बन्ध राजपूतों में होता ही रहता था। एक ही घर की दो बेटियां परस्पर शत्रुता रखने वाले राजपरिवारों में ब्याह दी जाती थीं। अतः वीरमदेव से मांगलियों के वैवाहिक सम्बन्ध का अब कोई अर्थ नहीं रह गया था। यह भी सत्य प्रतीत नहीं होता कि मांगलिया कल्याणसिंह ने अपने जीवित स्वामी से धोखा करके अपने मृत मित्र के पुत्र के लिये उस दुर्ग के द्वार खुलवा दिये जिसका कि वह स्वयं मुख्य रक्षक था। क्या कोई भी दुर्ग रक्षक अपने एक मृत मित्र के पुत्र को दुर्ग सौंपने के लिये दुर्ग में स्थित अपने ही सैनिकों को मृत्यु के मुख में जाने के लिये उनसे छल कर सकता था? यदि मांगलिया कल्याणसिंह और महाराणा कुम्भा के बीच कोई अनबन रही हो तो ऐसा होना संभव

था किंतु इस आशय की कोई जानकारी ख्यातों से नहीं मिलती। अतः ख्यातों की इस कपोल-कल्पना का कोई आधार प्रतीत नहीं होता।

जोधा का राजतिलक

जब मण्डोर राठौड़ों के अधिकार में आ गया तो जोधा के बड़े भाई अखैराज ने अपनी तलवार से अपना अंगूठा चीरकर जोधा का राजतिलक किया। जोधा ने उसी समय घोषणा की कि मेवाड़ वालों से बगड़ी छीनकर पुनःअखैराज को दी जायेगी। इस घटना से दो तथ्यों की पुष्टि होती है। पहला तथ्य यह कि बड़े भाई अखैराज के रहते हुए भी जोधा ने ही पैतृक राज्य प्राप्त करने का संघर्ष किया था और सफलता अर्जित की थी। इसलिये जोधा को राजा बनाया गया न कि अखैराज को। दूसरा तथ्य यह कि स्वर्गीय रणमल ने अपने जीवन काल में अखैराज को बगड़ी की जागीर दे रखी थी जिसे मेवाड़ वालों ने छीन लिया था।

कापरड़ा तथा रोहट पर अधिकार

मण्डोर पर अधिकार करने के बाद जोधा ने अपने भाई चांपा को कापरड़ा पर तथा वरजांग को रोहट पर अधिकार करने भेजा। चांपा ने सरलता से कापरड़ा पर अधिकार कर लिया। वरजांग रोहट पर अधिकार करने के बाद पाली, खैरवा तथा नाडौल को भी अपने अधिकार में करके नारलाई तक पहुंच गया। यह मेवाड़ राज्य की सीमा थी। वरजांग ने रावत चूण्डा सिसोदिया के पुत्र मांजा को

भी मार डाला। इससे सिसोदियों का उत्साह भंग हो गया और वे चौकियां छोड़ कर भागने लगे।

सोजत पर अधिकार

सोजत, मारवाड़ और मेवाड़ की सीमा पर स्थित था। इसलिये जोधा स्वयं सेना लेकर सोजत गया तथा उसने अपने भाई चचेरे भाई राघवदेव को सोजत से भगाकर सोजत पर अधिकार कर लिया। इसी अवसर पर उसने बगड़ी पर अधिकार करके अपने बड़े भाई अखैराज को बगड़ी की जागीर प्रदान की।[12] थोड़े ही दिनों में जोधा ने अपने पैतृक राज्य का अधिकांश भाग अपने अधिकार में ले लिया।

नरबद का मण्डोर दुर्ग पर अधिकार

जिस समय समय जोधा सोजत में रहकर सिरियारी के मार्ग से मेवाड़ पर आक्रमण करने की योजना बना रहा था, जोधा का चचेरा भाई तथा सत्ता का पुत्र नरबद गुजरात के सुल्तान की सेना लेकर मण्डोर पर चढ़ बैठा और दुर्ग रक्षकों को मारकर मण्डोर में अपने सैनिक नियुक्त कर दिये। जोधा ने कांधल के नेतृत्व में

---

[12] इसके बाद से मारवाड़ राज्य में यह प्रथा चल पड़ी कि जोधपुर के राजा का निधन होने पर बगड़ी की जागीर जब्त कर ली जाती थी। जब नया राजा पाट पर बैठता तो बगड़ी ठाकुर द्वारा अपना अंगूठा चीरकर नये राजा का अपने रक्त से तिलक करता। इसके बाद ठाकुर को बगड़ी की जागीर वापस दे दी जाती।

राठौड़ों की एक सेना मण्डोर के लिये रवाना की तथा दुर्ग रक्षकों को संदेश भिजवाया कि तुम्हें दण्ड देने के लिये सेना आ रही है परंतु सेना के मण्डोर पहुंचने से पहले तुम्हें यह सोच लेना चाहिये कि नरबद जैसे अंधे स्वामी[13] का आश्रय लेकर तुम लोग अधिक समय तक हमारा विरोध कर पाओगे या नहीं? दुर्ग रक्षकों ने भविष्य का अनुमान लगाकर मण्डोर दुर्ग जोधा को सौंपेने का निर्णय किया। इस पर नरबद फिर से गुजरात के सुल्तान के पास भागा किंतु गुजरात पहुंचने से पहले ही उसकी मृत्यु हो गई। जब कांधल मण्डोर पहुंचा तो उसने सहज ही मण्डोर दुर्ग पर अधिकार कर लिया।

मेवाड़ की सेना के अभियान

जिस समय जोधा ने मण्डोर राज्य पर अधिकार किया, उस समय महाराणा कुम्भा मालवा के सुल्तान से युद्ध में उलझा हुआ था। इसलिये कुम्भा ने स्वयं मारवाड़ आने की बजाय अपने सेनापतियों के नेतृत्व में जोधा के विरुद्ध सेना भेजी किंतु मेवाड़ की सेना परास्त होकर भाग गई। इसके बाद कुम्भा ने कई बार सेना भेजी किंतु मेवाड़ की सेना को सफलता नहीं मिली। उल्टे जोधा ने मेवाड़ के गोड़वाड़ क्षेत्र में धावे मारने आरम्भ कर दिये जिससे मेवाड़ को काफी क्षति उठानी पड़ रही थी।

राघवदेव का आक्रमण

---

[13] नरबद अंधा नहीं था, उसका बाप सत्ता अंधा था।

जोधा का चचेरा भाई राघवदेव सोजत से भाग तो गया किंतु उसने हार न मानी। कुछ दिन बाद उसने सिसोदियों की सेना लेकर पुनः सोजत पर आक्रमण किया। वरजांग ने राघवदेव का सामना किया तथा राघवदेव को परास्त करके भगा दिया। इस युद्ध में वरजांग बुरी तरह घायल हो गया। इस पर चूण्डा ने अपने अन्य भाई बैरसल को राघवदेव के पीछे भेजा तथा वरजांग को रोहट जाकर उपचार करवाने के आदेश दिये। बैरसल ने राघवदेव का पीछा किया तथा मेवाड़ के मार्गों पर अपनी चौकियां बैठा दीं। बैरसल ने घाणेराव को उजाड़कर वहाँ के निवासियों को गूंदोज में ला बसाया।

मारवाड़ और मेवाड़ राज्यों में संधि

जोधपुर की ख्यातों में वर्णन आया है कि मालवा और गुजरात की तरफ का दबाव कम होते ही महाराणा कुम्भा ने जोधा के विरुद्ध अभियान किया। वह बड़ी सेना के साथ मारवाड़ आया और पाली में आकर ठहरा। इधर से जोधा भी लड़ने को चला परन्तु उसके पास पर्याप्त घोड़े नहीं थे। इस कारण जोधा ने 5,000 बैलगाड़ियों में 20,000 राठौड़ सैनिकों को बैठाया और उन्हें लेकर पाली की ओर अग्रसर हुआ। महाराणा कुम्भा, राव जोधा के नक्कारों की आवाज सुनते ही अपने सैन्य सहित बिना लड़े ही भाग गया। कुछ ख्यातों में लिखा है कि जब कुम्भा ने यह सुना कि जोधा अपने सैनिकों को बैलगाड़ियों में ला रहा है तो उसने अपने सरदारों से विचार विमर्श किया कि राठौड़ घोड़ों की बजाय बैलगाड़ियों पर आ रहे हैं क्योंकि वे युद्ध क्षेत्र से जीवित नहीं लौटना चाहते। अतः उनसे लड़ने में मेवाड़ के सैनिकों का भयानक संहार होगा। इसलिये कुम्भा अपनी सेना लेकर मेवाड़ की तरफ रवाना हो गया।

चित्तौड़ पर आक्रमण

कई ख्यातों में यह भी लिखा है कि जोधा ने मेवाड़ पर धावा करके चित्तौड़ दुर्ग के किवाड़ जला दिये तथा जिस महल में राव रणमल की हत्या हुई थी, वहाँ पहुंचकर जोधा ने रणमल को नमन

किया। जोधा के समकालीन कवि गाडण पसाइत ने अपनी रचना गुण जोधायण में लिखा है-

बलो प्रबत लंघीयो चडे पाषरीये घोड़े।
जाए दीना घाव, कोट चीत्रोड़ किमाड़े।
बोल ढोल बोलीयो, च्यार श्रमणे उत सुंणिया।
कूंभनेर नारीयां ग्रभ पेटा हूं छणिया।
चीतोड़ तणे चूण्डाहरा किमांणे पराजालीये।
जोहार जाय जोधे कियो, राव रिणमल मालीये।।

सेठ पद्चंद का अपहरण

इसके बाद जोधा, मेवाड़ के गांवों को लूटता हुआ पीछोला झील तक पहुंचा। रामचंद ढाढी ने अपनी रचना निसाणी में लिखा है- 'जोधे जंगम आपरा पीछोले पाया।' नैणसी ने लिखा है- 'पछै मेवाड़ मारने पीछोलै घोड़ा पाया।' जोधा, मेवाड़ के प्रसिद्ध सेठ पद्मचंद को पकड़ कर ले आया। इस सम्बन्ध में एक प्राचीन छप्पय कहा जाता है- 'पद्मचंद सेठ लायौ पकड़ दाह मेवाड़ां उरदयौ।' इस सेठ ने खैरवा पहुचंने पर जोधा को बहुत सा धन देकर बंधन से मुक्ति पाई। इसी धन से जोधपुर का दुर्ग बनवाया गया तथा सेठ की स्मृति में दुर्ग की तलहटी में पद्मसर तालाब बनवाया गया।

ख्यातकारों की अतिरंजना

ख्यातों में आये अतिरंजित विवरणों के घटाटोप से सत्य तक नहीं पहुंचा जा सकता। ख्यातकारों ने तथ्यों एवं परिस्थितियों की

जांच किये बिना, अपने-अपने पक्ष के राजा की वीरता का वर्णन किया है। यह कैसे सम्भव है कि जो कुम्भा गुजरात और मालवा से टक्कर ले रहा था और जिसका राज्य दूर-दूर तक फैल गया था, वह कुम्भा उस जोधा से बिना लड़े ही डरकर भाग गया जिसके पास पर्याप्त घुड़सवार भी नहीं थे और जो अपनी सेना बैलगाड़ियों में बैठाकर लाया था। कुछ ख्यातों के अनुसार जोधा ने चित्तौड़ पर आक्रमण करके दुर्ग के द्वार जलाये उसके बाद महाराणा ने जोधा पर आक्रमण किया।

सत्यता क्या है ?

यह संभव है कि जोधा किसी समय अचानक चित्तौड़ पहुंचकर दुर्ग के द्वार जला दे। यह भी संभव है कि कुम्भा के चित्तौड़ में उपस्थित न होने की स्थिति में जोधा चित्तौड़ दुर्ग में प्रवेश करके रणमल के महल तक भी पहुंच जाये किंतु यह संभव नहीं है कि कुम्भा के नेतृत्व में लड़ने के उद्देश्य से आई मेवाड़ी सेना, भयभीत होकर बिना लड़े भाग जाये। अधिक संभावना इस बात की है कि जब जोधा मेवाड़ की सीमा में धावे मारने लगा तो महाराणा कुम्भा ने जोधा पर आक्रमण किया किंतु महाराणा, मारवाड़ से न तो बैर बढ़ाना चाहता था, न जोधा से राज्य वापस छीनना चाहता था और न स्वयं ही पराजय का कलंक लेना चाहता था। इसलिये संभव है कि कुम्भा ने युद्ध के स्थान पर संधि का मार्ग अपनाया। यह भी पर्याप्त संभव है कि कुम्भा ने अपनी दादी हंसाबाई को दिये हुए वचन का मान रखने के लिये संधि की नीति अपनाई हो किंतु युद्ध

के मैदान में कुम्भा द्वारा युद्ध की बजाय संधि का मार्ग अपनाने के पीछे कुम्भा की दूरगामी राजनीति स्पष्ट दिखाई देती है।

कुम्भा के राजनीतिक उद्देश्य

कुम्भा एक परिपक्व राजनीतिज्ञ था। दिल्ली सल्तनत के बिखराव के बाद गुजरात, मालवा, दिल्ली, नागौर, सांभर, अजमेर सहित चारों ओर छोटे-बड़े मुसलमान अमीरों ने अपने राज्य स्थापित कर लिये थे और वे अपनी सीमाओं पर स्थित हिन्दू राज्यों को नष्ट करके अपने राज्यों का विस्तार कर रहे थे। कुम्भा चाहता था कि गंगा-यमुना के मैदानों एवं उनसे लगते हुए सम्पूर्ण क्षेत्र को स्वदेशी शासन व्यवस्था के नीचे लाया जाये। इसलिये वह सम्पूर्ण उत्तरी भारत में मुसलमान राज्यों का उच्छेदन करके, विशाल हिन्दू राज्य की स्थापना का अभियान चलाये हुए था। ऐसी स्थिति में मण्डोर के हिन्दू राज्य को नष्ट करने में उसे कोई अच्छाई दिखाई नहीं दे सकती थी। जोधा की तरफ से लगातार हो रहे धावों तथा मालवा और गुजरात के नियमित आक्रमणों ने कुम्भा को अनुभव करा दिया था कि जोधा के साथ समझौता कर लेने में ही मेवाड़ का भला था। यही कारण था कि पाली के निकट महाराणा ने जोधा का विशेष प्रतिरोध नहीं किया तथा दोनों पक्ष संधि करने को प्रस्तुत हो गये।

मेवाड़ और मारवाड़ की सीमाओं का निर्धारण

महाराणा कुम्भा ने अपने पुत्र उदयसिंह (ऊदा) तथा नापा सांखला को जोधा के शिविर में भेजा। दोनों पक्षों में बहुत सी कहा-सुनी होने के बाद संधि की शर्तें निश्चित हुईं। मण्डोर पर अधिकार कर लेने के बाद से जोधा लगातार मेवाड़ राज्य में लूट मचा रहा था। इसलिये इस संधि में मेवाड़ तथा मारवाड़ राज्यों के बीच, सोजत के निकट आंवळ-बांवळ की सीमा निर्धारित की गई। जिस भूमि में तरवड़ (आँवळ-आँवळ) वनस्पति होती थी, वह मेवाड़ में रही तथा जिस भूमि में बबूल पैदा होती थी, वह मारवाड़ में रही। अर्थात् सम्पूर्ण पर्वतीय प्रदेश मेवाड़ में एवं सम्पूर्ण मरुस्थलीय प्रदेश मारवाड़ में रखा गया। यह एक व्यावहारिक एवं युक्ति-युक्त निर्धारण था।

जोधा की राजकुमारी का विवाह

मारवाड़ और मेवाड़ की संधि के अवसर पर जोधा ने अपनी पुत्री श्रृंगार देवी का विवाह कुम्भा के दूसरे पुत्र रायमल के साथ किया ताकि इस मैत्री को स्थाई बनाया जा सके। राजपूतों में शत्रुता समाप्त करने के लिये इस तरह के विवाहों की परम्परा थी। श्रृंगार देवी ने चित्तौड़ से लगभग 12 मील उत्तर में स्थित घोसुंडी गांव में वि.सं. 1561 (1504 ई.) में एक बावली बनवाई थी, जिसकी संस्कृत प्रशस्ति में, श्रृंगार देवी का जोधा की पुत्री होने तथा रायमल के साथ विवाह होने आदि का विस्तृत वृत्तान्त है। न तो

मारवाड़ के किसी ख्यातकार ने और न मेवाड़ के किसी ख्यातकार ने जोधा की इस राजकुमारी का उल्लेख किया है। यदि घोसुण्डी का शिलालेख नहीं मिला होता तो इस महीयसी राजकुमारी का इतिहास सदा के लिये नेपथ्य में चला गया होता। शृंगार देवी का शिलालेख इस बात का साक्ष्य है कि यह राजकुमारी अत्यंत विदुषी, प्रतिभा सम्पन्न एवं प्रभावशाली थी। अतः निश्चित है कि उसने मेवाड़ के महलों में रहकर मेवाड़ और मारवाड़ के बीच मित्रता की ज्योति को दीर्घ काल तक प्रदीप्त रखा होगा।

मारवाड़-मेवाड़ मैत्री का परिणाम

मारवाड़-मेवाड़ मैत्री के दूरगामी परिणाम हुए। इस संधि के बाद मेवाड़ ने अपने राज्य के दक्षिण की ओर तथा मारवाड़ ने अपने राज्य के उत्तर की ओर विजय अभियान किये। इन अभियानों में दोनों ही राज्यों को उल्लेखनीय सफलताएं मिलीं। मारवाड़ राज्य का विजय अभियान हिसार की सीमा पर जाकर रुक गया। इस संधि के बाद मेवाड़ के महाराणा जो कि पहले से ही अजेय समझे जाते थे, अब राजपूताना के दूसरे शासकों के लिये भी सम्माननीय बन गये। राजपूताना के समस्त राजाओं में उनका स्थान सर्वप्रथम माना जाने लगा।

जोधा का राज्याभिषेक

कुम्भा से संधि हो जाने के बाद जोधा सर्वमान्य राजा हो गया। अब वह पूरे आत्म-विश्वास से शासन कर सकता था। सोजत से

जोधा ने एक सेना सींधल राठौड़ों पर कार्यवाही करने भेजी और स्वयं मण्डोर की ओर रवाना हो गया। जोधा की सेना ने सींधलों से पाली परगने के 30 गांव छीन लिये। जोधा ने मण्डोर पहुंचकर 1458 ई. में शास्त्र सम्मत विधि से अपना राज्याभिषेक करवाया। इस अवसर पर उन सब लोगों को पुरस्कार, दान एवं भेंट आदि दी गईं जिन्होंने विपत्ति में जोधा का साथ दिया था। इस अवसर पर मण्डोर के पास जोधेलाव नामक तालाब बनवाया गया।

जोधपुर दुर्ग एवं नगर की स्थापना

मण्डोर दुर्ग की अनुपयुक्तता

मण्डोर का दुर्ग गुप्तों से भी पहले के काल में अरावली की दुर्गम पहाड़ियों के बीच बहने वाली नागाद्रि नदी के तट पर स्थित था। नदी के नाम से अनुमान होता है कि नागों ने इस दुर्ग का निर्माण आरम्भ किया होगा और वे ही यहाँ के प्रारम्भिक शासक रहे होंगे। समुद्रगुप्त एवं उसके पुत्र चंद्रगुप्त (द्वितीय) ने पश्चिमी भारत के नागों को परास्त करके अपने अधीन किया था। संभवतः उसी समय यह दुर्ग गुप्तों के अधीन चला गया। जब आठवीं शताब्दी ईस्वी में मण्डोर के प्रतिहारों का उदय हुआ तो मण्डोर दुर्ग मरुस्थल में प्रतिहारों की शक्ति का प्रतीक बन गया। जिस काल में इस दुर्ग का निर्माण हुआ, उस काल में यह दुर्ग चारों तरफ उत्तुंग अरावली पहाड़ियों से घिरे हुए होने से पर्याप्त दुर्गम एवं शत्रुओं के आक्रमणों को झेलने में सक्षम रहा होगा। आठवीं शताब्दी के बाद के किसी काल खण्ड का एक अभिलेख इस दुर्ग के निकट प्राप्त हुआ है जिसमें लिखा है- 'मांडवस्याश्रमे पुण्ये नदीनिर्झर शोभते।' इससे स्पष्ट है कि उस समय तक यह क्षेत्र नदियों एवं झरनों से सम्पन्न था।

समय के साथ इस क्षेत्र में वर्षा का औसत घटता चला गया। पहले के युग में तेज वर्षा की चोट से और बाद के युग में रेतीली

आंधियों की रगड़ से, इस क्षेत्र की पहाड़ियां घिस-घिस कर छोटी होती चली गई होंगी। राव जोधा का काल आते-आते न केवल मण्डोर की पहाड़ियां बहुत छोटी हो गई होंगी अपितु यह दुर्ग भी जीर्ण-शीर्ण अवस्था को प्राप्त हो गया होगा तथा शत्रुओं के आक्रमण झेलने में नितांत असक्षम हो गया होगा। यही कारण रहा होगा कि यह दुर्ग प्रतिहारों के हाथों से निकलकर बड़ी आसानी से मुसलमानों के हाथों में चला गया। राव चूण्डा ने भी इसे सरलता से मुसलमानों से छीन लिया था। राव रणमल की हत्या के बाद मेवाड़ वालों ने भी इसे सरलता से जीत लिया था। यहाँ तक कि स्वयं जोधा भी इसे बहुत कम साधनों से जीतने में सफल रहा था।

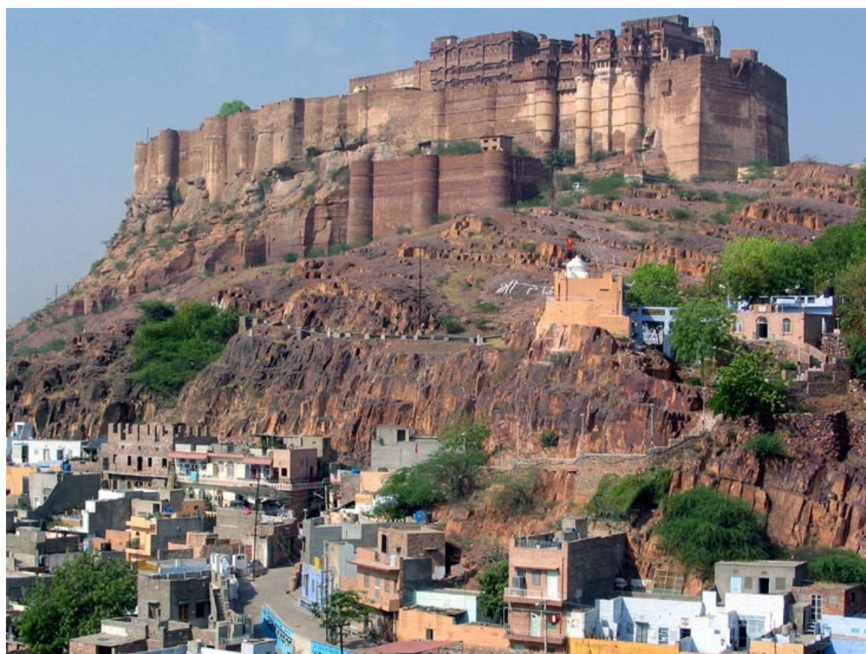
उस युग में राजा, राजधानी, कोष, सेना और राजपरिवार की सुरक्षा दुर्ग की अजेयता पर अत्यधिक निर्भर करती थी। दुर्ग की अजेयता उसकी दुर्गम भौगोलिक स्थिति पर आधारित होती थी। इन सब बातों पर विचार करके ही जोधा ने मण्डोर दुर्ग को राजधानी के लिये अनुपयुक्त पाया होगा और उसने एक नई राजधानी बसाने का निर्णय लिया होगा जो एक अजेय दुर्ग के भीतर सुरक्षित रह सके।

नये दुर्ग की स्थापना के पीछे इतिहासकारों का यह भी मत है कि राजकुमार अखैराज ने जोधा के समर्थन में अपने अधिकार का त्याग किया था। इसलिये अखैराज या उसके उसके वंशज, राव जोधा की मृत्यु के बाद मण्डोर राज्य पर अधिकार जता सकते थे जैसे कि रणमल ने कान्हा की मृत्यु के बाद सत्ता को हटाकर

मण्डोर पर अधिकार कर लिया था क्योंकि रणमल ने कान्हा के पक्ष में राज्याधिकार का त्याग किया था न कि सत्ता अथवा किसी भी अन्‌य राजकुमार के पक्ष में। अतः मण्डोर के स्थान पर जोधपुर को राजधानी बनाये जाने से अखैराज अथवा उसके वंशजों का राज्याधिकार क्षीण हो जाना स्वाभाविक था।

मेहरानगढ़ की स्थापना

राव जोधा ने नये दुर्ग की स्थापना के लिये एक सुरक्षित स्थान ढूंढना आरम्भ किया। उसकी दृष्टि मसूरिया नामक पहाड़ी पर गई जो दूर-दूर तक दूसरी पहाड़ियों से घिरी हुई थी।[14] इस कारण शत्रु को इस पहाड़ी पर पहुंचने से पहले ही सरलता से देखा जा



पचेटिया पहाड़ी पर स्थित मेहरानगढ़

सकता था। इस पहाड़ी पर उस समय एक साधु रहता था। उसने जोधा को सलाह दी कि यह पहाड़ी तुम्हारे नये दुर्ग के लिये सुरक्षित नहीं है इसलिये तुम पचेटिया पहाड़ी पर अपना दुर्ग बनाओ। मसूरिया पहाड़ी[15] पर जल की उपलब्धता भी नहीं थी जबकि पचेटिया पहाड़ी पर एक झरना बहता था जिससे दुर्ग के निर्माण एवं बाद में मनुष्यों के पीने के लिये जल की पर्याप्त उपलब्धता हो सकती थी। इसलिये जोधा ने पचेटिया पहाड़ी को अपने नये दुर्ग के निर्माण के लिये चुना। यह भी कहा जाता है कि बाबा रामदेव के गुरु बालीनाथ, प्रेतात्मा के रूप में इस पहाड़ी पर रहते थे। इस कारण इस पहाड़ी पर दुर्ग नहीं बनाया जा सका।

चिड़ियानाथ की कहानी

पचेटिया पहाड़ी पर चिड़ियानाथ नामक एक योगी रहता था। इस कारण इस पहाड़ी को चिड़ियानाथ की टूंक भी कहते थे।[16] जब नया दुर्ग बनना आरम्भ हुआ तो चिड़ियानाथ का आश्रम दुर्ग के भीतर आ गया। योगी ने जोधा के अधिकारियों से कहा कि वे मेरी झौंपड़ी को छोड़कर दुर्ग बनायें किंतु ऐसा करने पर दुर्ग तिरछा हो जाता। इसलिये योगी की बात अनसुनी करके, उसकी झौंपड़ी दुर्ग के भीतर ले ली गई। इस पर योगी ने रुष्ट होकर सुलगती हुई धूणी

15

16 यह पर्वत पक्षी की आकृति का था इसलिये इसे विहंग कूट भी कहते थे।

अपनी झोली में डाली तथा दुर्ग से अग्निकोण की दिशा में नौ कोस दूर स्थित पालासनी[17] गांव चला गया। मान्यता है कि इस योगी ने राजा को श्राप दिया कि यहाँ से मेरी धूनी उठाई गई है जो सूर्यरूप थी सो यहाँ अकाल पड़ते रहेंगे और लोग अन्न-जल को तरसेंगे।[18] जब राजा को योगी के रुष्ट होने का समाचार मिला तो राजा ने उसके लिये दुर्ग के नीचे[19] एक मठ बनवाया और अपने आदमी भेजकर योगी से कहलवाया कि वह नये मठ में आ जाये। योगी ने उन आदमियों से कहा कि मैं कुछ दिन बाद आउंगा। अंत में वह योगी कुछ दिनों के लिये इस मठ में आया। उस योगी ने इस मठ के निकट एक शिवालय बनवाया।[20]

---

[17] पालासनी गांव में उस योगी की समाधि बनी हुई है।

[18] यह भी कहा जाता है कि शाप देने के बाद योगी ने झरने में से चार चुलुक पानी पिया जिससे झरने का जल सूखकर टपकती हुई बूंदों में बदल गया।

[19] यह स्थल सरदार मार्केट के निकट है।

[20] योगी के कहने से जोधाजी ने प्रतिदिन एक रोट बनवाकर किसी साधु-सन्यासी को देने की प्रथा प्रचलित की। समय के साथ यह शिवालय जीर्ण हो गया। 1914 ई. में जोधपुर राज्य की ओर से इस शिवालय का जीर्णोद्धार करवाया गया।

दुर्ग का शिलान्यास

राव जोधा ने मण्डोर से 6 मील दूर दक्षिण में चिड़ियानाथ की टूंक पर 12 मई 1459 को नया दुर्ग बनवाना आंरभ किया। इस सम्बन्ध में एक दोहा कहा जाता है-

पन्दरा सौ पन्दरोतरे, जेठ मास जोधाण।
सुद इग्यारस वार शनि, मंडियौ गढ़ मेहराण।।

ख्यातों में आये विवरण के अनुसार दुर्ग के द्वार के शिलान्यास हेतु लाई जाने वाली शिला, निश्चित मुहूर्त्त पर नहीं आ सकी। इस पर निकट ही स्थित एक ऊँट चराने वाले के बाड़े से एक शिला लाकर उससे द्वार का शिलान्यास किया गया।[21] अगले 500 वर्ष तक यह दुर्ग, मरुस्थल की राजनीतिक एवं सामरिक गतिविधियों का सर्वप्रमुख केन्द्र बना रहा।[22]

---

[21] इस पत्थर पर बाड़े के द्वार को बंद करने के लिये लगाए जाने वाले डण्डों के छेद हैं।

[22] यह दुर्ग तीन बार मुलसमानों के अधिकार में रहा।

1544 ई. में शेरशाह सूरी ने मालदेव को परास्त कर जोधपुर दुर्ग पर अधिकार किया किंतु अगले ही वर्ष 1545 ई. में शेरशाह की मृत्यु हो जाने पर मालदेव ने पुनः इस दुर्ग पर अधिकार किया। इस प्रकार लगभग एक वर्ष तक यह दुर्ग शेरशाह सूरी के अधिकार में रहा।

करणी माता द्वारा दुर्ग का शिलान्यास

1565 ई. में अकबर की सेना ने राव चन्द्रसेन को परास्त कर जोधपुर दुर्ग पर अधिकार किया। दुर्ग में मुगल सूबेदार रहने लगा। 1572 ई. में अकबर ने जोधपुर का राज्य, बीकानेर के राजा रायसिंह को दिया जो कि राव जोधा का ही वंशज था। 3 साल तक जोधपुर दुर्ग रायसिंह के अधिकार में रहा। बाद में पुनः इस दुर्ग पर मुसलमान अधिकारी नियुक्त किये गये। 1583 ई. में अकबर ने राव चन्द्रसेन के बड़े भाई उदयसिंह को जोधपुर का राजा बनाकर यह दुर्ग पुनः राठौड़ों को दे दिया। इस प्रकार 18 साल तक यह दुर्ग अकबर के अधिकार में रहा।

1678 ई. में महाराजा जसवंतसिंह (प्रथम) की मृत्यु हो जाने पर औरंगजेब ने मारवाड़ राज्य खालसा करके मेहरानगढ़ पर मुसलमान सेनापति नियुक्त कर दिया। 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु हो जाने पर राठौड़ों ने पुनः इस दुर्ग पर अधिकार किया। इस प्रकार 29 वर्ष तक यह दुर्ग औरंगजेब के अधिकार में रहा।

जुलाई 1740 में जयपुर नरेश सवाई जयसिंह ने जोधपुर दुर्ग को घेर लिया। तब महाराजा अभयसिंह ने जयसिंह को 1 लाख रुपये नगद एवं 25 हजार रुपये के आभूषण देकर दुर्ग से घेरा उठवाया। युद्ध क्षति पूर्ति के लिये जयसिंह को 20 लाख रुपये अलग से दिये।

1839 ई. में राजा मानसिंह ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अधिकारी कर्नल सदरलैण्ड को दुर्ग की चाबियां सौंप दी किंतु कर्नल सदरलैण्ड ने स्वीकार नहीं कीं।

चारण परिवार में उत्पन्न करणी माता बीकानेर के राठौड़ों की पूज्य देवी हैं। वह जोधा तथा उसके पुत्र बीका की समकालीन थीं। कुछ स्थानों पर उल्लेख आया है कि करणी माता ने जोधा को इस दुर्ग के लिये स्थान बताया तथा करणी ने स्वयं अपने हाथों से दुर्ग का शिलान्यास किया।[23]

राजिया भाम्बी की कहानी

एक तान्त्रिक की सलाह पर दुर्ग की नींव में किसी जीवित पुरुष को गाढ़ने का निर्णय लिया गया ताकि यह दुर्ग सदैव जोधा के वंशजों के पास रहे। राजा ने पूरे राज्य में मुनादी करवा दी कि जो व्यक्ति इस नींव में जीते जी गढ़ेगा, उसके परिवार को राजकीय संरक्षण एवं धन सम्पदा दी जायेगी। राजिया अथवा राजाराम नामक भाम्बी इस कार्य के लिये तैयार हुआ। उसे जीवित ही नींव में चिनवाया गया। उसके परिवार को जोधपुर नगर में भूमि दी गई जो बाद में राजबाग के नाम से प्रसिद्ध हुई। जिस स्थान पर राजिया को गाढ़ा गया उसके ऊपर खजाना तथा नक्कारखाने के भवन बनवाये गये। राजिया के प्रति आभार प्रदान करने के लिये राज्य से प्रकाशित होने वाली पुस्तकों में उसका उल्लेख श्रद्धा के साथ किया

---

[23] नैणसी ने लिखा है- श्री जोधपुर रौ किलौ सं. 1515 रा जेठ सुद 11 शनीवार राव जोधाजी नीम दीवी श्री करनीजी पधार नै सो विगत पैला तौ चौबुरजो जीवरखौ कोट करायौ, चिड़ियां टूक ऊपर।

गया। किसी-किसी स्थान पर उल्लेख मिलता है कि नींव में दो व्यक्तियों को जीवित चुना गया। रेउ ने लिखा है कि राजिया एवं उसके पुत्र को नींव में गाढ़ा गया।

पुष्करणा ब्राह्मणों को निमंत्रण

दुर्ग की स्थापना के अवसर पर राव जोधा ने बड़ी संख्या में ब्राह्मणों को आमंत्रित किया। तब सिंध से 65 पुष्करणा ब्राह्मण परिवार, राजा को आशीर्वाद देने जोधपुर आये तथा यहीं बस गये।

दुर्ग का नामकरण

ख्यातों के अनुसार दुर्ग की कुण्डली के आधार पर इस दुर्ग का नाम चिंतामणि रखा गया। यह भी कहा जाता है कि सिंध से आये पुष्करणा ब्राह्मण गणपतदत्त के पुत्र मोरध्वज के नाम पर इस दुर्ग का नाम मोरध्वज गढ़ रखा गया। यह भी माना जाता है कि मण्डोर का दुर्ग नागों का बनाया हुआ था। नागों के शत्रु मोर होते हैं इसलिये नये दुर्ग का नाम मयूर ध्वज रखा गया। यह दुर्ग मिहिर गढ़ के नाम से प्रसिद्ध हुआ। मिहिर शब्द का अर्थ सूर्य होता है। अर्थात् सूर्य-वंशियों का गढ़ होने से यह मिहिर गढ़ कहलाया। बाद में इसे मिहिरानगढ़ और मेहरानगढ़ कहने लगे।

दुर्ग की भव्यता

मेहरानगढ़ विश्व के भव्यतम दुर्गों में से एक है। यह अपने निकट की भूमि से 400 फुट ऊँचा है तथा बहुत दूर से दिखाई पड़ता है। इसका कोट 20 से 120 फुट ऊँचा और 12 से 20 फुट

चौड़ा है। सम्पूर्ण दुर्ग 500 गज लम्बाई में और 250 गज चौड़ाई में बना हुआ है।

रानीसागर और चांद बावड़ी

जिस समय जोधा ने मेहरानगढ़ दुर्ग का निर्माण करवाया, उस समय उसकी हाड़ी रानी जसमादे ने 1459 ई. में दुर्ग की तलहटी में रानी सागर नामक तालाब बनवाया और जोधा की सोनगरी रानी चांद कुंवरी ने एक बावली बनवाई जो चांद बावड़ी के नाम से प्रसिद्ध हुई। इसे चौहान बावड़ी भी कहा जाता था। रानी जसमादे ने अपने जीवन काल में दुर्ग के भीतर एक कुआं भी खुदवाया।

चामुण्डा मंदिर की स्थापना

1394 ई. में जब चूण्डा ने मण्डोर दुर्ग पर अधिकार किया, तब इसमें प्रतिहारों की कुलदेवी चामुण्डा की एक प्राचीन प्रतिमा स्थापित थी। 1459 ई. में जोधपुर दुर्ग की स्थाना के बाद 1460 ई. में जोधा ने चामुण्डा को मण्डोर से लाकर मेहरानगढ़ दुर्ग में स्थापित किया। देवी की यह प्रतिमा चमत्कारी मानी जाती है। इसकी कृपा से जोधपुर विगत पांच सौ वर्षों से किसी बड़े सकंट में नहीं पड़ा।[24]

---

[24] 9 अगस्त 1857 को महाराजा तख्तसिंह के समय बारूद खाने में आग लग जाने से बड़े-बड़े पत्थर शहर पर आ गिरे। इससे 200 व्यक्ति अपने घरों में दब कर मर गये। 1965 ई. के भारत-पाक युद्ध में जब पाकिस्तानी सेना द्वारा बम गिराये जा रहे थे तब लोगों ने

जोधाजी का फलसा

राव जोधा ने लोहा पोल से चामुण्डाजी के बुर्ज तक कोट तथा बुरजें बनवाईं एवं फलसे तक दुर्ग का निर्माण करवाया। जोधा ने चामुण्ड बुर्ज पर मण्डप चुनवाया। जोधा के काल में इस किले का जहाँ तक प्रसार था, वहाँ तक का क्षेत्र जोधाजी का फलसा कहलाता था। समस्त उमराव, सरदार, राजपुरुष अथवा अन्य कर्मचारियों को इस स्थान पर अपनी सवारी छोड़नी होती थी। केवल राजा ही यहाँ से आगे सवारी पर बैठकर जा सकता था। यह सीमा समय के साथ बदलती रही।

जोधा का तिलक

मेहरानगढ़ के निर्माण के पश्चात् इसका मध्य बिंदु ज्ञात किया गया तथा वहाँ एक चौकी पर राव जोधा को बैठाकर उसका तिलक किया गया।

झरनेश्वर महादेव मंदिर

पचेटिया पहाड़ी पर जिस झरने के निकट योगी चिड़ियानाथ रहता था, वहाँ राव जोधा ने एक कुण्ड और एक छोटा शिव मंदिर

अपने घरों के बाहर देवी के हाथ के प्रतीक के रूप में मेंहदी से भरे हाथ अंकित किये। इससे जोधपुर नगर पूरी तरह सुरक्षित रहा तथा केवल दो स्थानों पर अत्यल्प हानि हुई। 30 सितम्बर 2008 को मंदिर में हुई भगदड़ में 216 युवकों की मृत्यु हुई।

बनवाया। वह स्थान झरनेश्वर महादेव के नाम से जाना गया। बाद में यह झरना लगभग सूख गया।

कोडमदेसर तालाब की प्रतिष्ठा

1459 ई. में मेहरानगढ़ दुर्ग की नींव रखने के बाद उसी वर्ष् बलोचों ने जांगलू के राजा नापा सांखला पर आक्रमण किया। इस पर जोधा, नापा की सहायता के लिये जांगलू की तरफ गया। मार्ग में जोधा ने अपनी माता के बनवाये कोडमदेसर तालाब की प्रतिष्ठा करवाई तथा वहाँ एक कीर्ति स्तम्भ स्थापित किया। इस कीर्ति स्तम्भ पर संस्कृत भाषा में एक लेख उत्कीर्ण है जिसमें लिखा है कि राठौड़ रणमल के पुत्र जोधा राय ने इस तालाब की प्रतिष्ठा करवाई तथा माता श्रीकोडमदे निमित्त कीर्ति स्तम्भ स्थापित किया। जब राव रणमल की हत्या हुई थी तब जोधा की माता कोडमदे इसी तालाब के किनारे सती हुई थी। कोडमदेसर से लौटकर जोधा ने अपने कुल पुरोहित को एक नया दानपत्र लिखकर दिया।

राव जोधा की तीर्थ यात्रा

जोधपुर नगर की स्थापना के तीन वर्ष पश्चात् 1462 ई. में राव जोधा ने प्रयाग, काशी और गया तीर्थों की यात्रा की। पंद्रहवीं शताब्दी में किसी बड़े हिन्दू राजा द्वारा दूरस्थ तीर्थों की यात्रा करना दुःसाध्य कार्य था। इसके कई कारण थे। राजा हर समय शत्रुओं से घिरा रहता था। दिल्ली, गुजरात तथा मालवा के सुल्तानों के आक्रमणों से लेकर, पड़ौसी मुस्लिम सूबेदारों, बड़े हिन्दू राजाओं के आक्रमणों, स्वजातीय हिन्दू जागीरदारों तथा अपने ही राजकुमारों द्वारा किये जाने वाले घातक षड़यंत्रों के कारण यह संभव नहीं था कि राजा अपनी राजधानी से लम्बे समय के लिये दूर चला जाये। मार्ग में भी उसे शत्रुओं का भय रहता था। यदि बड़ी सेना राजा के साथ तीर्थ यात्रा पर जाती तो पीछे से शत्रु उसके राज्य पर अधिकार कर लेते थे। इन सारी बाधाओं के उपरांत भी 1462 ई. में राव जोधा ने काशी एवं गया आदि तीर्थों की यात्रा का निर्णय लिया तो उससे यही निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मण्डोर राज्य पर दुबारा से अधिकार कर लेने के बाद के 9 वर्षों में राव जोधा ने अपने राज्य की स्थिति अत्यंत सुदृढ़ कर ली थी तथा वह अपने शत्रुओं की ओर से निर्भय था।

बहलोल लोदी से भेंट

जोधपुर राज्य की ख्यात में लेख है कि जब जोधा आगरा पहुंचा तो बहलोल लोदी के कृपापात्र कान्ह ने जो कि कन्नौज का राठौड़ था, जोधा को बंधु समझ कर हर तरह से इनका आदर किया[25] तथा जोधा को बहलोल लोदी से मिलवाया। जोधा ने बादशाह से अनुरोध किया कि वह गया तीर्थ में आने वाले तीर्थ यात्रियों से कर हटा ले। बादशाह ने यह कर हटा लिया तथा इसकी भरपाई के लिये जोधा से कहा कि वह मार्ग में पड़ने वाली दो गढ़ियों को तोड़कर वहाँ के भोमियों को दण्डित करे। जोधा जब गया की तीर्थयात्रा से लौट रहा था, तब उसने ग्वालियर के पास दो गढ़ियों को तोड़कर बादशाह को दिये वचन की पूर्ति की। जोधा

[25] रेउ ने इस राजा का नाम कर्ण बताया है। ओझा ने प्रश्न उठाया है कि उन दिनों कन्नौज पर मुसलमानों का शासन था इसलिये कान्हा या कर्ण वहाँ का शासक कैसे हो सकता था? रेउ ने लिखा है कि यह कन्नौज के राठौड़ घराने का था तथा बादशाह ने उसे शम्साबाद (खोर) का सूबेदार नियुक्त कर रखा था। तारीखे फरिश्ता में भी बादशाह द्वारा कर्ण को शम्साबाद का सूबेदार नियुक्त किया जाना वर्णित है। हमारे विचार से यह कर्ण या कान्हा कन्नौज का राठौड़ भले ही न रहा हो किंतु वह कोई प्रमुख राठौड़ सरदार था जिसे बहलोल लोदी ने खोर का सूबेदार नियुक्त कर रखा था। इसी की सहायता से जोधा ने बहलोल लोदी से भेंट की थी।

द्वारा इन गढ़ियों के तोड़ने की सूचना घोसुण्डी के लेख से भी मिलती है।

जौनपुर के बादशाह से भेंट

आगरा से गया जाते समय राव जोधा ने जौनपुर के बादशाह हुसैनशाह से भेंट की। रेउ ने लिखा है कि गया के तीर्थ यात्रियों से लिये जाने वाले कर की मुक्ति के लिये जोधा ने हुसैनशाह से अनुरोध किया तथा हुसैनशाह ने उसे ग्वालियर की तरफ के भोमियों को दण्डित करने के लिये कहा। कुछ ख्यातों में लिखा है कि जोधा ने प्रयाग, काशी, गया और द्वारिका आदि तीर्थों की यात्रा की तथा लौटते समय हुसैनशाह के शत्रुओं की गढ़ियों को नष्ट-भ्रष्ट कर अपनी प्रतिज्ञा निभाई।

जोधा की तीर्थ यात्रा का राजनीतिक महत्त्व

किसी बड़े राजा की तीर्थ यात्रा केवल तीर्थ यात्रा नहीं होती थी, उसमें राजनीतिक प्रयोजन भी सन्निहित होते थे। निःसंदेह राव जोधा की तीर्थ यात्रा में भी राजनीतिक प्रयोजन सन्निहित थे। राव जोधा द्वारा इस यात्रा के दौरान बहलोल लोदी तथा होशंगशाह से भेंट करना तथा ग्वालियर के निकट गढ़ियों को तोड़कर वहाँ के भोमियों को दण्डित करना, इस बात की पुष्टि करता है। इसलिये यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि राव जोधा की तीर्थ यात्रा उसके जीवन की एक महत्त्वपूर्ण राजनीतिक घटना थी।

जोधा की तीर्थ यात्रा के उल्लेख

जोधा की तीर्थ यात्रा का उल्लेख उसकी पुत्री श्रृंगार देवी की घोसुंडी गांव में बनवाई हुई बावली पर लगे वि.सं. 1561 (1504 ई.) के लेख में आया है। इस शिलालेख में लिखा है कि जोधा की तलवार से अनेक पठान मारे गये। इन्होंने गया के यात्रियों पर लगने वाले कर को छुड़वाकर अपने पूर्वजों को और कशी में सुवर्ण दान कर वहाँ के विद्वानों को संतुष्ट किया। जोधा की प्रयाग और गया की यात्रा का उल्लेख बीठू सूजा रचित 'जैतसी रो छन्द' नामक पुस्तक में भी आया है।

जोधा द्वारा मारवाड़ राज्य का विस्तार

राव जोधा ने मेड़ता, फलौधी, पोकरण, भाद्राजून, सोजत, जैतारण, सिवाना, शिव, नागौर तथा मेवाड़ राज्य के अंतर्गत स्थित गोड़वाड़ प्रदेश का कुछ भाग आदि क्षेत्र अपने राज्य में सम्मिलित कर लिये। इससे पहले सीहा के वंश के अधिकार में इतना बड़ा राज्य कभी नहीं रहा। जोधा ने अपने राज्य के उत्तर में हिसार तक का क्षेत्र मिलाने का प्रयत्न किया किंतु अफगान प्रतिरोध के कारण जोधा सफल नहीं हो सका।

मेड़ता पर अधिकार

जब जोधा ने मण्डोर पर अधिकार किया तब मेड़ता, माण्डू के सुल्तान की ओर से अजमेर में नियुक्त मुस्लिम सूबेदार के अधीन था। 1461 ई. में राव जोधा ने अपने पुत्रों वरसिंह तथा दूदा को अजमेर पर अधिकार करने भेजा। इन दोनों भाइयों ने थोड़े से युद्ध के बाद ही मेड़ता तथा उसके निकटवर्ती 360 गांवों पर अधिकार कर लिया। मेड़ता पर अधिकार हो जाने के बाद 1462 ई. में तत्कालीन मेड़ता के दक्षिण में नई बस्ती बसाई गई।

राज्याधिकारियों की नियुक्ति

इतने बड़े राज्य का संचालन राजधानी मण्डोर से करना संभव नहीं था। इसलिये जोधा ने अपने भाइयों और पुत्रों को विभिन्न स्थानों पर नियुक्त कर दिया। चूण्डा ने मारवाड़ राज्य में सामंत

व्यवस्था की शुरुआत की थी। जोधा ने उस व्यवस्था को और मजबूत बनाया। जोधा ने अपने पुत्र सातल को फलौदी, नींबा को सोजत तथा वरसिंह एवं दूदा को मेड़ता की जागीर दी।

सींधलों के उत्पात

1462 ई. में राव जोधा काशी एवं गया आदि तीर्थों की यात्रा पर गया। इस स्थिति का लाभ उठाने के लिये भाद्राजून के सींधल आपमल ने जोधा के पुत्र शिवराज को सिवाना दिलवाने का लालच देकर शिवराज की सहायता से सिवाना के राजा बिजा को मार डाला। इसके बाद आपमल ने सिवाना का अधिकार बिजा को न देकर स्वयं सिवाना पर अधिकार कर लिया। जब बिजा के पुत्र देवीदास को इस बात की जानकारी हुई तब उसने फिर से सिवाना पर आक्रमण किया तथा आपमल से सिवाना छीन लिया। जब जोधा तीर्थ यात्रा से लौटा तो उसे सारे घटनाक्रम की जानकारी हुई। जोधा आपमल से नाराज हुआ। इस पर देवीदास ने भाद्राजूण पर आक्रमण करके आपमल को मार डाला तथा अपने पिता की मृत्यु का बदला लिया।

1464 ई. में बीसलपुर का स्वामी जैसा सींधल, पाली से मवेशियों को पकड़कर ले गया। उस समय जोधा का पुत्र नींबा सोजत का प्रबंध कर रहा था। नींबा ने तुरंत जैसा पर चढ़ाई की तथा वटोवड़ा गांव के पास उसको घेर लिया। इस लड़ाई में जैसा तो रणक्षेत्र में ही मारा गया किंतु नींबा भी बुरी तरह घायल हो जाने

से पांच माह बाद मृत्यु को प्राप्त हुआ। तब जोधा ने अपने पुत्र सूजा को फलौधी से बुलाकर सोजत का प्रबंध सौंपा।

मोहिलों के उत्पात

छापर-द्रोणपुर का स्वामी मोहिल अजीतसिंह, राव जोधा का जामाता था। 1464 ई. में अजीतसिंह ने अपने मंत्रियों के बहकावे में आकर मारवाड़ में उपद्रव करना आरम्भ किया। कुछ दिन तक तो राव जोधा उसे अपना दामाद समझकर चुप रहा परन्तु जब मामला बढ़ता ही गया तब लाचार होकर जोधा को अजीतसिंह के विरुद्ध सेना भेजनी पड़ी। गगराणे के पास संघर्ष होने पर अजीतसिंह मारा गया और उसका भतीजा बछराज छापर-द्रोणपुर का स्वामी हुआ। ख्यातों में इस घटना का वर्णन अत्यंत अतिरंजित करके लिखा गया है।

नैणसी का कथन है कि राव जोधा की एक पुत्री राजबाई का विवाह छापर द्रोणपुर के राजा मोहिल अजीतसिंह से हुआ था। एक बार जब वह अपनी ससुराल मण्डोर आया हुआ था तो राव जोधा ने मोहिलों की भूमि हस्तगत करने का विचार किया परन्तु अजीतसिंह के रहते वह प्रदेश हाथ नहीं आ सकता था। तब राव जोधा ने अपने जामाता अजीतसिंह को मार डालने का विचार किया। राव जोधा की राणी भटियाणी (अजीतसिंह की सास) को अपने पति के प्रयत्न का पता लग गया और उसने अजीतसिंह के सरदारों को इसकी सूचना दे दी। अजीतसिंह के सरदारों ने यह

सोचकर कि अजीतसिंह यहाँ से भागना पसन्द नहीं करेगा, अजीतसिंह से कहा कि छापर से समाचार आया है कि यादवों ने राणा बछराज (सांगावत) पर आक्रमण कर दिया है तथा बछराज ने अजीतसिंह को सहायता के लिए बुलाया है। यह सुनते ही अजीतसिंह ने तुरंत वहाँ से प्रस्थान किया। राव जोधा को इस बात का पता लगा तो वह समझ गया कि अजीतसिंह पर की जानेवाली चूक का भेद खुल गया और उसने अजीतसिंह का पीछा किया। अजीतसिंह के सरदारों ने अजीतसिंह को सही बात बता दी। इस पर अजीतसिंह अपने सरदारों पर बहुत बिगड़ा। द्रोणपुर से तीन कोस दूर गणोड़ा गांव में दोनों पक्षों में युद्ध हुआ जिसमें अजीतसिंह अपने 85 राजपूतों सहित काम आया। उसी दिन से राठौड़ों तथा मोहिलों में वैर बंध गया। अजीतसिंह का भतीजा बछराज छापर-द्रोणपुर का राणा बना।

इस घटना के एक वर्ष बाद बछराज ने अपने चाचा का बदला लेने के लिये मारवाड़ राज्य के क्षेत्रों में लूटमार आरम्भ की। इस पर राव जोधा ने सेना लेकर फिर से मोहिलों पर चढ़ाई की। राणा बछराज 165 साथियों सहित मारा गया और राव जोधा की विजय हुई परन्तु बछराज का पुत्र मेघा[26] वहाँ से निकल भागा। छापर के इलाके पर राव जोधा का अमल हो जाने पर मेघा, छापे मार कर जोधा को तंग करने लगा। राव जोधा ने जान लिया कि जब तक

[26] मेघा, राव जोधा के जामाता अजीतसिंह का भतीजा था।

मेघा जीवित है छापर-द्रोणपुर जैसे कठिन क्षेत्र पर अधिकार बनाये रखना असम्भव है। अतः जोधा, ने मेघा से संधि कर ली तथा उसे छापर-द्रोणपुर का राज्य सौंपकर मंडोर चला आया।

बीका द्वारा अलग राज्य की स्थापना

जोधा के समय में जांगलू प्रदेश में जाट बड़ी संख्या में निवास करते थे। जाटों के मुखिया परस्पर लड़ते रहते थे। इस कारण इस क्षेत्र में अव्यवस्था बनी हुई थी। राव जोधा ने इस क्षेत्र को अपने नियंत्रण में लेने का विचार किया। उसने अपने पुत्र बीका को आदेश दिया कि वह जांगलू की तरफ के प्रदेश में अपना राज्य स्थापित करे। ख्यातों में लिखा है कि एक दिन कांधल और बीका, दरबार में बैठे हुए बातें कर रहे थे। इतने में राव जोधा वहाँ आ गया। उसने कांधल और बीका की ओर देखकर हँसते हुए कहा कि क्या आज चाचा-भतीजे मिलकर किसी नए प्रदेश को दबाने की सलाह कर रहे हैं? कांधल ने उत्तर दिया कि यह कोई बड़ी बात नहीं है। ईश्वर चाहेगा तो ऐसा ही होगा। इसके बाद सांखला नापा और जाट निकोदर की सलाह से ये लोग, कुछ चुने हुए वीरों को अपने साथ लेकर जांगलू की तरफ गये।

1593 ई. में जयसोम द्वारा रचित 'कर्मचन्द्रवंशोत्कीर्तनक काव्यम्' में लिखा है- जोधा की दूसरी महाराणी जसमादेवी के तीन लड़के- नींबा, सूजा, और सातल नाम के थे और वह राजा का जीवन सर्वस्व थी। जब देवयोग से नींबा की कथा ही बाकी रह

गई (अर्थात् वह मर गया) तब जसमादेवी ने जिसे स्त्री स्वभाव से अपनी सौतों के प्रति द्वेष उत्पन्न हुआ- यह होनहार ही है, ऐसा सोचकर एकांत में विक्रम नाम के अपनी सौत के पुत्र की अनुपस्थिति में राजा को अपने पुत्र के विषय में कुछ रोचक कथा कही। तब राजा ने पत्नी के कपट से मोहित होकर अपने बेटे विक्रम (बीका) को जांगलदेश में निकाल देने की इच्छा से अपने पास बुलाकर यह कहा- 'हे पुत्र! बाप के राज्य को बेटा भोगे इसमें कोई अचरज की बात नहीं परन्तु जो नया राज्य प्राप्त करे वही बेटों में मुख्य गिना जाता है। पृथ्वी पर कठिनता से वश में आने वाला जांगल नामक देश है, तू साहसी है इसलिए तुझे मैंने इस काम में (अर्थात् उसे वश में करने में) नियुक्त किया है।'

पिता का आदेश पाकर बीका ने 1465 ई. में अपने चाचा कांधल और सांखला नापा आदि को साथ लेकर ससैन्य जांगलू की तरफ प्रस्थान किया। बीका ने मण्डोर से अपने इष्टदेव भैरव की मूर्ति अपने साथ ली। इसके बाद देशणोक पहुंच कर करणीजी का आशीर्वाद लिया। फिर कुछ दिन चूण्डासर में निवास करने के बाद कोडमदेसर पहुंचकर वहाँ भैरव की मूर्ति की स्थापना की। इसके बाद बीस वर्ष तक बीका जांगलू देश में जाटों, भाटियों एवं सांखलों से लड़ता रहा और उनके क्षेत्रों को छीनकर अपने राज्य में सम्मिलित करता रहा। 1485 ई. में बीका ने नये दुर्ग का शिलान्यास किया तथा 12 अप्रेल 1488 को बीकानेर नामक नगर की स्थापना की।

नागौर पर अधिकार

राव चूण्डा ने 1399 ई. में नागौर पर अधिकार कर लिया था किंतु इस घटना के 24 साल बाद मुसलमानों ने भाटियों की सहायता से, राव चूण्डा को मारकर नागौर पुनः हस्तगत कर लिया था। इसके बाद मेवाड़ के महाराणा मोकल ने नागौर पर अधिकार करने का असफल प्रयास किया था। जब रणमल महाराणा कुम्भा के पास रहता था तब उसने भी मेवाड़ की तरफ से नागौर पर अधिकार किया। इस युद्ध में रणमल की विजय हुई तथा नागौर के मुस्लिम शासक को गायें काटने के अपराध में भलीभांति दण्डित किया गया किंतु संभवतः मेवाड़, नागौर पर अपना अधिकार बनाये न रख सका। इसलिये अब तक नागौर पर मुसलमानों का शासन चला आता था। 1467 ई. में राव जोधा के तीन पुत्र- करमसी, रायपाल और वणवीर नागौर के कायमखानी शासक फतनखाँ के पास पहुंचे। फतनखाँ ने करमसी को खींवसर और रायपाल को आसोप की जागीर देकर अपने पास रख लिया। वणवीर अपने बड़े भाई करमसी के पास रहने लगा। जब राव जोधा को इसकी सूचना हुई तो उसने अपने पुत्रों को वापस बुलाया। इस पर तीनों भाई फतनखाँ को छोड़कर अपने बड़े भाई बीका के पास चले गये। फतनखाँ ने इसे अपना अपमान समझा तथा सेना लेकर मारवाड़ के गांवों को लूटने लगा। इस पर राव जोधा ने नागौर पर चढ़ाई की। फतनखाँ हारकर झुंझुनूं की तरफ भाग गया। इसके

बाद राव जोधा ने नागौर पर अधिकार कर लिया तथा करमसी को खींवसर और रायपाल को आसोप की जागीर दी।

अजमेर और सांभर की प्राप्ति

1468 ई. में कुम्भा का राज्य लोभी ज्येष्ठ पुत्र ऊदा (उदयसिंह) अपने पिता महाराणा कुम्भा को कटार से मारकर मेवाड़ का स्वामी बन गया परन्तु उसके इस दुष्ट कार्य से सरदार उसके विरोधी हो गये और उस पितृ-घाती को राज्यच्युत करने का उद्योग करने लगे। ऊदा ने अपना पक्ष मजबूत करने के लिए पड़ौसियों को अपना सहायक बनाने का निश्चय किया और वह उन्हें भूमि देने लगा। राव जोधा को भी उसने अजमेर और सांभार के क्षेत्र दिये। यह भी कहा जाता है कि इससे पहले कि ऊदा की योजना सफल होती, कुम्भा के पुत्र रायमल ने जो कि जोधा का जामाता भी था, ऊदा को माण्डू की तरफ धकेल दिया।

राजपूताने का सबसे प्रभावशाली राजा

1468 ई. में महाराणा कुम्भा की हत्या हो जाने के बाद राव जोधा, राजपूताने का सर्वाधिक अनुभवी और प्रभावशाली राजा बन गया। जोधा ने बहलोल लोदी के सेनापति सारंग खाँ को परास्त करके दूर-दूर तक अपनी धाक जमा ली तथा मरुस्थल की राजनीति को राष्ट्रीय राजनीति में स्थान दिलवाया। जोधा ने 1453 ई. से 1489 ई. तक पैंतीस साल लम्बी अवधि तक मरुस्थल के बड़े भाग पर शासन किया।

छापर-द्रोणपुर पर अधिकार

मुंहणोत नैणसी ने लिखा है- 1473 ई. में छापर-द्रोणपुर के राणा मेघा का देहान्त हो गया तथा उसका पुत्र बैरसल वहाँ का राणा हुआ। वह एक निर्बल शासक था। इसलिये उसके भाई-बंधु स्वाधीन होकर इधर-उधर लूटपाट मचाने लगे। इस कारण मोहिलों के प्रदेश में अराजकता फैल गई तथा मोहिल सरदार परस्पर लड़ने लगे, जिससे उनका बल क्षीण होने लगा। इस कारण 1474 ई. में राव जोधा ने मोहिलों पर चढ़ाई की। राणा बैरसल[27] तथा उसका छोटा भाई नरबद[28] युद्ध किये बिना ही फतहपुर भाग गये। राव जोधा ने छापर-द्रोणपुर पर अधिकार करके फतहपुर पर आक्रमण किया। तीन दिन के भीषण युद्ध के बाद फतनखाँ हार गया। राव जोधा ने फतहपुर को जला कर भस्म कर दिया। फतनखाँ को नष्ट हुआ देखकर बैरसल और नरबद फतहपुर से भागकर झुंझुनूं और भटनेर होते हुए अंत में मेवाड़ महाराणा के

---

[27] यह महाराणा कुम्भा का दौहित्र था।

[28] रेउ ने लिखा है कि नरबद, जोधा के छोटे भाई कांधल का दौहित्र था। इसलिये जोधा ने नरबद को कहलवाया कि यदि वह जोधा के पास आ जाये तो उसे छापर का राज्य दिला दिया जायेगा किंतु नरबद ने यह बात स्वीकार नहीं की।

पास पहुंचे किंतु महाराणा ने उनकी कोई सहायता नहीं की।[29] इस पर नरबद; और कांधल का पुत्र बाघा राठौड़, दिल्ली के बादशाह बहलोल लोदी के पास गये। बहलोल लोदी ने सारंग खाँ पठान को पांच हजार घुड़सवार सेना देकर उनकी सहायता के लिये भेजा। नरबद व बाघा राठौड़, सारंग खाँ के साथ झुंझुनूं के निकट पहुंचे जहाँ राणा बैरसल भी उनसे आ मिला। राव जोधा छः हजार सैनिक लेकर उनका सामना करने के लिये आया। राव बीका भी अपनी सेना लेकर पिता की सहायता करने आ गया।[30]

युद्ध आरम्भ होने से पहले जोधा ने अपने भतीजे बाघा राठौड़ को गुप्त रीति से अपने पास बुलाया और कहा- 'शाबाश भतीजे! मोहिलों के वास्ते तू अपने भाइयों पर तलवार उठाकर भोजाइयों और स्त्रियों को कैद करावेगा।' यह सुन कर बाघा के मन में विचार हुआ कि उसका कार्य अनुचित है और वह जोधा का सहायक हो गया। दोनों पक्षों में हुए भीषण युद्ध में सारंग खाँ 555 पठानों सहित मारा गया, बैरसल मेवाड़ भाग गया तथा नरबद फतहपुर के पास पड़ा रहा। इस प्रकार 1475 ई. में छापर-द्रोणपुर पर राव जोधा का

---

[29] इस समय जोधा का जामाता रायमल मेवाड़ का महाराणा था। रायमल किसी भी सूरत में राव जोधा से सम्बन्ध बिगाड़ने को तैयार नहीं था।

[30] इस समय तक जोधा के बड़े पुत्र नींबा की मृत्यु हो चकी थी जिसे राव जोधा ने सोजत का अधिकार दिया था।

अधिकार हो गया। वह अपने पुत्र जोगा को द्रोणपुर छोड़कर स्वयं मण्डोर लौट गया। जोगा, द्रोणपुर का शासन नहीं संभाल सका। इस पर राव जोधा ने उसे वापस बुला लिया और उसके स्थान पर अपने दूसरे पुत्र बीदा को भेजा। बीदा ने इस क्षेत्र का कड़ाई से प्रबंध किया। बीदा से पहले यह क्षेत्र मोहिलवाटी कहलाता था किंतु बीदा के शासक बन जाने पर यह क्षेत्र बीदावाटी कहलाने लगा।

दयालदास की ख्यात में इस घटना का वर्णन भिन्न प्रकार से मिलता है- 'जोधा ने छापर-द्रोणपुर का इलाका बरसल (वैरसल) से लेकर वहाँ का अधिकार जोगा को दिया पर उसके ठीक तरह से राज्य न कर सकने के कारण उसे वहाँ से हटाकर बीदा को वहाँ का स्वामी बनाया, जिसने बड़ी उत्तमता से समस्त प्रबंध कर मोहिलों को अपने अधीन किया। बरसल अपना राज्य खोकर अपने भाई नरबद को साथ ले दिल्ली के बादशाह बहलोल लोदी के पास गया। राव जोधा के भाई कांधल का पुत्र बाघा भी उसके साथ था। बहुत दिनों बाद जब बादशाह उनकी सेवा से प्रसन्न हुआ, तो उसने बरसल का इलाका उसे वापस दिलाने के लिए हिसार के सूबेदार सारंग खाँ को सेना देकर उसके साथ कर दिया। जब वह सेना द्रोणपुर पहुंची तो बीदा ने उसका सामना करना उचित नहीं समझा तथा बरसल से सुलह करके अपने भाई बीका के पास बीकानेर चला गया। छापर-द्रोणपुर पर पुनः बरसल का अधिकार हो गया। बीदा के बीकानेर पहुंचने पर बीका ने अपनी पिता

(जोधा) से कहलवाया कि यदि आप सहायता दें तो बीदा को फिर से द्रोणपुर का इलाका दिला देवें।

जोधा ने एक बार हाड़ी रानी के कहने से बीदा से लाडणूं मांगा था परन्तु उसने देने से मना कर दिया था। इस कारण जोधा, बीदा से अप्रसन्न था और उसने बीका की प्रार्थना पर ध्यान नहीं दिया। तब बीका स्वयं सैन्य एकत्र कर कांधल, मांडल आदि के साथ बरसल पर गया। इस अवसर पर जोहिये आदि भी उसकी सहायतार्थ साथ थे। बीका ने देशणोक में करणीजी के दर्शन किये तथा द्रोणपुर की ओर अग्रसर हुआ। देशणोक से चार कोस की दूरी पर बीका की सेना ने डेरा डाला। सारंग खाँ उन दिनों वहीं था। एक दिन बीका ने अपने चचेरे भाई बाघा को, जो बसरल का सहायक था, एकान्त में बुलाकर उपालम्भ दिया कि- 'काका कांधल तो ऐसे हुए, जिन्होंने जाटों का राज्य नष्ट कर एक नया इलाका कायम किया और तू (कांधल का पुत्र) मोहिलों के बदले में मेरे ऊपर ही चढ़कर आया है। ऐसा करना तेरे लिए उचित नहीं।' इस पर बाघा, बीका का सहायक बन गया और उसने वचन दिया कि वह मोहिलों को पैदल आक्रमण करने की सलाह देगा जिनके दांई ओर सारंग खाँ की सेना रहेगी। ऐसी दशा में उन्हें पराजित करना कठिन नहीं होगा। दूसरे दिन युद्ध में ऐसा ही हुआ। फलतः मोहिल तथा तुर्क परास्त होकर भाग खड़े हुए। नरबद तथा बरसल मारे गये और बीका की विजय हुई। कुछ दिनों वहाँ रहने के उपरान्त बीका ने

छापर द्रोणपुर का अधिकार बीदा को सौंप दिया और स्वयं बीकानेर लौट गया।

उपर्युक्त दोनों विवरणों में से, दयालदास का विवरण अधिक विश्वसनीय प्रतीत हाता है, क्योंकि आगे चलकर मुंहणोत नैणसी ने स्वयं अपने कथन का खण्डन कर दिया है। नैणसी लिखता है कि बीका के कहलवाने पर कांधल को मारने के वैर में राव जोधा ने सारंग खाँ पर चढ़ाई करके उसे मारा था। उस अवसर पर बीका भी ससैन्य जोधा के साथ था और सेना की हिरोल में था। इससे स्पष्ट है कि सारंग खाँ इसके बाद वाली दूसरी लड़ाई में मारा गया था। साथ ही राव बीका द्वारा बीदा को पुनः छापर द्रोणपुर का राज्य दिलाया जाना ही अधिक युक्तिसंगत प्रतीत होता है क्योंकि ये इलाके मारवाड़ राज्य के अन्तर्गत न होकर बीकानेर के अधीन रहे। बीकानेर राजपरिवार से मैत्री सम्बन्ध रहने से बीदावत बाद में उन्हीं के अधीन हो गये। जोधपुर राज्य की ख्यात में उपर्युक्त घटना का उल्लेख नही है। आगे की कुछ घटनाएं भी जोधपुर राज्य की ख्यात में नहीं हैं परन्तु दयालदास की ख्यात में उन घटनाओं का विस्तार से विवरण मिलता है। अन्य ख्यातों से भी उनकी पुष्टि होती है।

लाडनूं पर अधिकार

जब राव जोधा ने बीदा को छापर-द्रोणपुर का अधिकार दिया तब लाडनूं पर आक्रमण करके उसे भी राठौड़ों के राज्य में मिला

लिया गया। बाद में राव बीका ने लाडनूं, अपनी पिता राव जोधा को भेंट किया।

बीका को जोधपुर राज्य पर अधिकार न जताने का निर्देश

ख्यातों में वर्‌णन आया है कि मोहिल युद्ध की समाप्ति के बाद द्रोणपुर में राठौड़ों की सेनाओं के डेरे हुए। उस समय राव जोधा ने बीका को अपने पास बुलाकर कहा- 'बीका तू सपूत है अतः तुझ से एक वचन मांगता हूँ?' बीका ने उत्तर दिया- 'आप पिता हैं, आपकी आज्ञा शिरोधार्य है।' जोधा ने कहा- 'एक तो लाडणूं मुझे दे दे और दूसरे अब तूने अपने बाहुबल से अपने लिए नया राज्य स्थापित कर लिया है, इसलिए अपने भाईयों से जोधपुर के राज्य के लिए दावा न करना।' बीका ने इन बातों को स्वीकार करते हुए कहा- 'मेरी भी यह प्रार्थना है कि तख्त, छत्र आदि राज्यचिन्ह तथा आपकी ढाल एवं तलवार मुझे मिली चाहिये, क्योंकि मैं बड़ा हूँ।' जोधा ने इन सब वस्तुओं को जोधपुर पहुंचकर भेज देने का वचन दिया। अनन्तर दोनों ने अपने अपने राज्य की और प्रस्थान किया।

जोधावास की स्थापना

ख्यातों में वर्णन आया है कि जब राव जोधा, सारंग खाँ को परास्त करके लौट रहा था तब मार्ग में, चमार जाति का एक आदमी जो हकलाकर और तुतलाकर बोलता था, राव जोधा की बड़ी प्रशंसा कर रहा था। जोधा ने प्रसन्न होकर उस आदमी को

उसी क्षेत्र में बहुत सी भूमि प्रदान की। उस व्यक्ति ने वहाँ जोधावास नामक गांव की स्थापना की।

जालोर तथा सिरोही के शासकों का दमन

1478 ई. में जालोर के शासक उस्मान खाँ तथा सिरोही के रावल लाखा ने मारवाड़ राज्य में लूटपाट आरम्भ की। जोधा ने अपने चचेरे भाई वरजांग को उन दोनों के विरुद्ध सेना देकर भेजा। वरजांग ने इस अभियान का सफलता पूर्वक संचालन किया। जालोर तथा सिरोही दोनों ही शासकों ने राव जोधा से संधि कर ली।

सांभर की रक्षा

सांभर पर दिल्ली सल्तनत की ओर से मुस्लिम सूबेदार नियुक्त रहता था किंतु राव चूण्डा ने उसे मारकर भगा दिया था। जब चूण्डा मर गया तब मुसलमानों ने फिर से सांभर पर अधिकार कर लिया। जब राव रणमल, महाराणा मोकल की सेवा में मेवाड़ में रहता था तब रणमल ने मेवाड़ की सेना लेकर सांभर पर अधिकार किया तथा उसे मेवाड़ राज्य में मिला दिया। 1468 ई. में जब ऊदा ने महाराणा कुम्भा की हत्या की तो उसने मारवाड़ वालों को शांत बने रहने के लिये अजमेर तथा सांभर प्रदान किये। तब से सांभर, जोधा के राज्य में बना हुआ था। सांभर झील से राज्य को अच्छी आय होती थी इसलिये 1486 ई. में आमेर नरेश चंद्रसेन ने सांभर पर चढ़ाई की। राव जोधा ने समाचार मिलते ही तुरंत एक सेना

सांभर भिजवाई। इस कारण आमेर की सेना सांभर पर अधिकार नहीं कर सकी।

शिव की रक्षा

जैसलमेर के रावल देवीदास की आज्ञा से उसकी सेना ने शिव पर अधिकार कर लिया। राव जोधा ने वरजांग के नेतृत्व में एक सेना को शिव पर पुनः अधिकार करने के लिये भेजा। वरजांग ने शिव पहुंचकर प्रबल आक्रमण किया जिससे जैसलमेर की सेना भाग छूटी। इसके बाद वरजांग ने जैसलमेर पर आक्रमण करने का निर्णय लिया किंतु जैसलमेर के भाटियों ने दण्ड स्वरूप कुछ रुपये देकर राव जोधा से समझौता कर लिया।

राव जोधा का परिवार

जोधा की रानियां

विभिन्न ख्यातों के अनुसार राव जोधा की 6 रानियां थीं- (1.) हाड़ी रानी जसमादे, (2.) भटियाणी रानी पूरां, (3.) सांखली रानी नौरंगदे, (4.) हूलणी रानी जमना, (5.) सोनगरी रानी चम्पा तथा (6.) बाघेली रानी वीनां।

जोधा के पुत्र

विभिन्न ख्यातों में जोधा के पुत्रों की संख्या अलग-अलग दी हुई है। कुछ ख्यातों में उसके 19 पुत्र होने का उल्लेख है तो कुछ ख्यातें 17 तथा 14 पुत्र होने का उल्लेख करती हैं। उसके 17 पुत्रों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार से है-

(1.) नींबा: नींबा का जन्म राव जोधा की हाड़ी रानी जसमादे के गर्भ से हुआ था। यह जोधा का सबसे बड़ा पुत्र था और कुंवरपदे में ही मर गया था।

(2.) सातल: इसका जन्म भी हाड़ी रानी जसमादे के गर्भ से हुआ था। इसने पोकरण और फलोदी के पास के प्रदेश पर अधिकार किया तथा सातलमेर नामक नगर बसाया। वरसिंह के मरने पर इसने मेड़ता पर भी अधिकार कर लिया। जोधा की मृत्यु के बाद सातल जोधपुर की गद्दी पर बैठा।

(3.) सूजाः इसका जन्म भी हाड़ी रानी जसमादे के गर्भ से हुआ था। सातल की निःसंतान अवस्था में असामयिक मृत्यु हो जाने पर सूजा, सातल का उत्तराधिकारी हुआ तथा जोधपुर की गद्दी पर बैठा।

(4.) कर्मसीः इसका जन्म भटियाणी राणी पूरां के गर्भ से हुआ। इसके वंशज कर्मसिंहोत कहलाये। कर्मसी ने खींवसर बसाया। जोधा ने इसे नादसर दिया था और कांधल को भी साथ भेज था। इसका एक विवाह मांगलिया भोज हमीरोत की पुत्री से हुआ था, जिससे पांच पुत्र- उदयकरण, पंचायण, धनराज, नारायण तथा पीथूराव हुए। कर्मसी, भोमियों से युद्ध करते हुए लूणकरण के साथ नारनोल में मारा गया।

(5.) रायपालः इसका जन्म भटियाणी राणी पूरां के गर्भ से हुआ। इसके वंशज रायपालोत कहलाये। इसने आसोप बसाया।

(6.) वणवीरः इसका जन्म भटियाणी राणी पूरां के गर्भ से हुआ। इसके वंशज वणवीरोत कहलाये।

(7.) जसवन्त (जसूत)ः इसका जन्म भटियाणी राणी पूरां के गर्भ से हुआ।

(8.) कूंपाः इसका जन्म भटियाणी राणी पूरां के गर्भ से हुआ।

(9.) चांदरावः इसका जन्म भटियाणी राणी पूरां के गर्भ से हुआ।

(10.) बीकाः इसका जन्म सांखली राणी नौरगंदे के गर्भ से हुआ। इसने बीकानेर राज्य की स्थापना की। वि.सं. 1545 (ई.सं. 1488) में इसने अपने नाम पर बीकानेर नगर बसाया। इसके वंशज बीका कहलाये जो भारत को आजादी मिलने तक बीकानेर राज्य पर शासन करते रहे।

(11.) बीदाः इसका जन्म सांखली राणी नौरगंदे के गर्भ से हुआ। इसके वंशज बीदावत कहलाये जो बीकानेर राज्य में बीकों के साथ रहे। जोधा ने छापर द्रोणपुर को जीतकर वहाँ का अधिकार पहले जोगा को सौंपा था परन्तु उसको अयोग्य देखकर बाद में बीदा को वहाँ का अधिकारी बना दिया। बीदा के पुत्र उदयकरण, हीरा और खलसी हुए।

(12.) जोगा : इसका जन्म हूलणी राणी जमना के गर्भ से हुआ। राव जोधा ने छापर द्रोणपुर पर विजय प्राप्त कर, वहाँ का अधिकार पहले इसी को दिया था।

(13.) भारमलः इसका जन्म हूलणी राणी जमना के गर्भ से हुआ। इसके वंशज भारमलोत कहलाये। राव जोधा ने इसे बिलाड़ा का क्षेत्र प्रदान किया।

(14.) दूदाः इसका जन्म सोनगरी राणी चंपा के गर्भ से हुआ। 1489 ई. में जोधा की मृत्यु होने पर इसने मेड़ता में अपना ठिकाना बांधा। इसके वंशज मेड़तिया राठौड़ कहलाये। दूदा ने अपने पिता राव जोधा के संकेत पर बहुत थोड़े से साथियों को साथ ले,

नरसिंह सींधल के पुत्र को जा घेरा और उसे अकेले द्वंद्व-युद्ध में मारकर राठौड़ों का पुराना वैर लिया। इसने देश में बिगाड़ करने वाले अजमेर के सूबेदार सिरिया खाँ को मारा। दूदा के पांच पुत्र थे- वीरमदे, रतनसी, रायमल, रायसल और पंचाथण। वीरमदे के पुत्र चांदा के वंशज चांदावत कहलाये।

(15.) वरसिंह: इसका जन्म सोनगरी राणी चंपा के गर्भ से हुआ। इसके वंशज वरसिंहोत कहलाये। इसका एक पुत्र जेता हुआ। बांकीदास ने लिखा है- 'राव जोधा ने वरसिंह और दूदा को सम्मिलित रूप से मेड़ता दिया था। जोधा की मृत्यु के बाद वरसिंह ने दूदा को मेड़ता से बाहर निकाल दिया। इस पर दूदा बीकानेर चला गया। एक बार वरसिंह ने दुष्काल पड़ने पर बादशाह के अधिकार वाले सांभर नगर में लूट मार की। इस पर मुसलमानों ने वरसिंह को अजमेर में कैद कर लिया। दूदा तथा बीका ने बीकानेर से आकर इसे मुक्त कराया। वरसिंह की मृत्यु होने पर सातल ने मेड़ता पर अधिकार कर लिया और दूदा भी वहीं आ गया। दूदा ने आधी भूमि वरसिंह के पुत्र सीहा को दे दी।

(16.) सामन्तसिंह: इसका जन्म बाघेली राणी वीनां के गर्भ से हुआ। इसने खैरवा पर अधिकार किया।

(17.) सिवराज: इसका जन्म बाघेली राणी वीनां के गर्भ से हुआ। राव जोधा ने इसे दुनाड़ा का क्षेत्र प्रदान किया।

अधिकांश ख्यातों के अनुसार राव जोधा के सत्रह पुत्रों में नींबा सबसे बड़ा था परन्तु नींबा के बाद कौनसा पुत्र बड़ा था, यह विवाद का विषय है। कुछ ख्यातें बीका को तो कुछ ख्यातें सूजा को जोधा का द्वितीय पुत्र बताती हैं। जोधा के बाद उसका पुत्र सातल जोधपुर का राजा हुआ। सातल के निःसंतान मर जाने के कारण जोधा का अन्य पुत्र सूजा जोधपुर की गद्दी पर बैठा।

रेउ ने जोधा के 20 पुत्रों की सूची दी है। उसकी सूची में नींबा के बाद जोगा को दूसरे नम्बर पर, सातल को तीसरे नम्बर पर, सूजा को चौथे नम्बर पर तथा बीका को पांचवे नम्बर पर बताया है। रेउ द्वारा दी गई सूची इस प्रकार से है- 1. नींबा, 2. जोगा, 3. सातल, 4. सूजा, 5. बीका, 6. बीदा, 7. वरसिंह, 8. दूदा, 9. करमसी, 10. वणवीर, 11. जसवंत, 12. कूंग, 13. चांदराव, 14. भारमल, 15. शिवराज, 16. रायपाल, 17. सांवतसी, 18. जगमाल, 19. लक्ष्मण और 20. रूपसिंह। यह सूची सही नहीं है। क्योंकि यदि बीका पांचवे नम्बर का पुत्र होता तो वह सूजा के समय में जोधपुर पर आक्रमण करके अपना अधिकार नहीं जताता।

जोधा की पुत्रियां

राव जोधा के कई पुत्रियां हुई थीं जिनकी अब पूरी जानकारी उपलब्ध नहीं होती। जोधा की एक पुत्री राजबाई का विवाह मोहिलों के राजा अजीतसिंह से हुआ। दूसरी पुत्री श्रृंगार देवी का विवाह महाराणा कुम्भा के पुत्र रायमल से हुआ। श्रृंगारदेवी का नाम किसी भी ख्यात में नहीं मिलता। घोसुंडी गांव से मिली वृहत् प्रशस्ति से ही श्रृंगार देवी के होने की जानकारी मिल सकी है।

युग निर्माता राव जोधा

जोधा जीवन भर शत्रुओं से घिरा रहा, फिर भी वह अपने अधिकांश उद्देश्यों में सफल हो गया। यह किसी चमत्कार से कम नहीं था। जीवन की छलनाएं हर समय उसके पीछे लगी रहीं, बाधाओं ने कभी भी उसका पीछा नहीं छोड़ा किंतु वह समस्त छलनाओं को जीतकर और समस्त बाधाओं को चीरकर भारत के इतिहास में उज्ज्वल नक्षत्र की तरह दैदीप्यमान हुआ। उसने अपने युग के समक्ष हार नहीं मानी अपितु अपने बलबूते पर अपने युग का निर्माण किया।

असाधारण धैर्यशील

राव जोधा वीर और साहसी होने के साथ ही असाधारण धैर्यशील था। वह संघर्षों की आग में तपकर बड़ा हुआ था। इसलिये विपत्ति में घबराता नही था। उसने अपने पिता के साथ युद्ध के मैदानों में रहकर तलवार चलाना सीखा और मेवाड़ जैसी प्रबल रियासत में घनघोर षड़यंत्रों के बीच राजनीति की शिक्षा प्राप्त की। वह असाधारण घुड़सवार था। इसी कारण अनेक बार उसके प्राणों की रक्षा हुई। असाधारण परिस्थिति में पिता के मारे जाने पर भी वह घबराया नहीं वरन् पीछा करने वाले मेवाड़ सैन्य से वीरता पूर्वक लड़ता हुआ चित्तौड़ से निकल आया। सिसोदिया राजकुमार चूण्डा

से छुटकारा पाने के लिये वह जांगलू के घनघोर मरुस्थल में जा छिपा तथा वहाँ की कठिनाइयों को झेलता रहा।

असाधारण योद्धा

जोधा असाधारण योद्धा था। उसने जीवन भर युद्ध किया। पूरे पंद्रह साल तक वह मण्डोर प्राप्त करने के लिये जूझता रहा। वह भूखों रहा, खेतों में छिपकर रहा। बाजरे के सिट्टे खाकर जीवित रहा किंतु राज्य प्राप्ति का विचार मन से न जाने दिया। जब मण्डोर पर अधिकार हो गया तब भी उसने संघर्ष का मार्ग नहीं त्यागा। उसने मेवाड़ राज्य के गोड़वाड़ प्रदेश में लूटमार करके अपने राज्य की समृद्धि के प्रयास किये। उसने एक-एक करके अपने समस्त पड़ौसियों भाटी, सांखला, जोहिया, परिहार, चौहान तथा तुर्कों को परास्त किया। वह हिसार के सूबेदार तक से जा भिड़ा। यहाँ तक कि उसने बहलोल लोदी के सेनापति सारंग खाँ को परास्त करके युद्ध के मैदान में मार डाला। उसने 15 साल राज्य प्राप्त करने में लगाये तो 35 साल उसका विस्तार करने में लगाये।

मित्र बनाने की असाधारण प्रतिभा

जोधा में मित्र बनाने की असाधारण प्रतिभा थी। उसने मेवाड़ की राजमाता तथा अपनी बुआ हंसाबाई का विश्वास कभी नहीं खोया। इस कारण हंसाबाई जीवन भर उसके पक्ष में रही। हंसाबाई के परामर्श से ही कुम्भा ने जोधा को उसका राज्य लौटाने का मन बनाया। हंसाबाई की मध्यस्थता के कारण ही जोधा की पुत्री श्रृंगार

देवी का विवाह कुम्भा के पुत्र रायमल से होना संभव हुआ। जोधा ने अपनी मौसी जो कि रावत लूणा की ठकुरानी थी, का विश्वास इस सीमा तक अर्जित कर रखा था कि ठकुरानी ने रावत लूणा को तोषाखाना में बंद करके, रावत के घोड़े चूण्डा को सौंप दिये। जोधा ने उस काल के सर्वाधिक आदरणीय व्यक्तियों में से एक, हरभू सांखला का विश्वास अर्जित करके उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया। इतना ही नहीं हरभू सांखला जैसे पूज्य व्यक्ति ने जोधा के लिये युद्ध करते हुए अपने प्राण न्यौछावर किये।

समय की असाधारण समझ

जोधा में अपने समय की असाधारण समझ थी। इस कारण उसे समस्त कार्यों में सफलता मिली। चित्तौड़ से समय पर निकल आना, चूण्डा की मृत्यु हो जाने पर अपने लिये अनुकूल समय आया जानकर मण्डोर पर भीषण प्रहार करना तथा महाराणा के आक्रमण के समय उससे संधि के लिये तत्पर होना और उसी समय अपनी पुत्री का विवाह महाराणा के पुत्र से करना, जोधा के कई ऐसे महत्त्वपूर्ण कार्य थे जिनके कारण सफलता उसके चरण चूमती चली गई। जोधा में अपने समय से आगे की भी सूझ थी। जब मण्डोर पर अधिकार हो गया तो वह मण्डोर के भरोसे ही न बैठा रहा। वह समझता था कि उसकी राजधानी सामरिक रूप से उतनी सुदृढ़ नहीं है जितनी कि होनी चाहिये। इसलिये मण्डोर पर अधिकार करने के 6 वर्ष बाद ही उसने मेहरानगढ़ दुर्ग तथा जोधपुर नगर की नींव रखी। यह पहाड़ी दुर्ग शत्रुओं के लिये अजेय

था। जोधा में भविष्य को भांपने की भी असाधारण समझ थी। इसलिये उसने समय रहते ही बीका से वचन ले लिया कि वह बीकानेर राज्य में रहेगा तथा जोधपुर राज्य पर जोधा के अन्य पुत्रों में से किसी का अधिकार होगा। यदि जोधा इस शपथ को नहीं लेता तो बीका निश्चित रूप से जोधपुर पर अधिकार कर लेता। इससे दोनों राज्यों का स्वतंत्र विकास अवरुद्ध हो जाता।

असाधारण भाग्य का धनी

जोधा भाग्य का प्रबल धनी था। रणमल ने उसे अपनी हत्या से पहले ही चित्तौड़ के दुर्ग से बाहर निकाल दिया था। रणमल की हत्या की सूचना भी उसे समय रहते मिल गई जिससे उसे बच निकलने का समय मिल गया। चित्तौड़ से कपासन के बीच चूण्डा ने जोधा को घेर लिया किंतु जोधा बच निकलने में सफल रहा। चूण्डा के पास केवल 700 सैनिक थे जो पल-पल छीजते रहे किंतु जोधा अंत में सात आदमियों के साथ जांगलू के भयानक मरुस्थल तक पहुंचने में सफल रहा। जोधा को अपनी बुआ हंसाबाई की सामयिक सहायता प्राप्त हुई। हंसाबाई ने महाराणा से जोधा की अनुशंषा की और महाराणा ने मण्डोर की तरफ से ध्यान हटा लिया। फलतः कुछ ही समय बाद, जोधा ने अपने खोये हुए पैतृक राज्य पर पुनः अधिकार कर लिया। इसके बाद उसने जोधपुर के दुर्ग तथा नगर की स्थापना की।

लक्ष्य पर असाधारण पकड़

जोधा जीवन में कभी अपने लक्ष्य से नहीं चूका। वह जीवन भर शक्ति और संघर्ष की आराधना करता रहा। राज्य प्राप्त करते ही जोधा ने राज्य की स्थिति दृढ़ करने पर ध्यान केन्द्रित किया और साथ ही राज्य का विस्तार भी किया। जोधा के सौभाग्य से उसके पुत्र भी बड़े पराक्रमी हुए और उन्होंने भी राठौड़ राज्य की उन्नति में हाथ बंटाया। वस्तुतः राव जोधा ही मरुस्थल का पहला प्रतापी राजा हुआ।

मेवाड़ से मैत्री का अद्भुत निर्णय

कुम्भा द्वारा राव रणमल की हत्या करने की अनुमति देने एवं 15 साल तक मण्डोर राज्य को अपने अधिकार में रखने के कारण यह एक कठिन बात थी कि जोधा, कुम्भा को क्षमा कर देता किंतु जीवन भर के संघर्ष ने जोधा को परिपक्व राजनीतिज्ञ बना दिया था। वह जानता था कि यदि मेवाड़ के साथ सम्बन्ध नहीं सुधारे गये तो वह अपने लिये स्थाई और सशक्त राज्य का निर्माण नहीं कर सकता। इसलिये उसने अपनी पुत्री का विवाह कुम्भा के पुत्र रायमल से करके शत्रुता को समाप्त करने की पहल की। इस मित्रता के कई सुखद परिणाम निकले। मेवाड़ की तरफ से निश्चिंत होकर जोधा को अपने राज्य का निर्माण करने का समय मिल गया।

मेवाड़ से अति शीघ्र मित्रता का हाथ बढ़ाने के पीछे जोधा के मन में और भी कई विचार थे। जब रणमल, मेवाड़ की ओर से

मालवा एवं गुजरात के सुल्तानों से लड़ रहा था तो जोधा ने उत्तर और मध्य भारत की राजनीति का अच्छा अध्ययन कर लिया था। वह जानता था कि भले ही मेवाड़, हंसाबाई के प्रभाव के कारण अब मारवाड़ राज्य से छेड़-छाड़ न करे किंतु मालवा एवं गुजरात के सुल्तान इस बात का भरसक प्रयास करेंगे कि वे कमजोर मारवाड़ राज्य पर अधिकार कर लें और ऐसा करना उनके लिये कुछ कठिन भी नहीं होगा। अतः आवश्यकता इस बात की नहीं थी कि मेवाड़, मारवाड़ के प्रति शत्रुवत् न रहकर उदासीन अथवा निरपेक्ष रहे रहे अपितु आवश्यकता इस बात की थी कि मेवाड़ का सक्रिय सहयोग, मारवाड़ को प्राप्त हो।

जोधा की पहल पर मारवाड़ और मेवाड़ के बीच दुबारा से स्थापित हुई मित्रता, कुम्भा की मृत्यु के बाद भी काम आई। 1527 ई. में जब कुम्भा का पुत्र सांगा, बाबर से लड़ने के लिये खानवा के मोर्चे पर गया तो सांगा ने हिन्दू राजाओं का एक संगठन बनाया। जोधा के वंशज गांगा और मालदेव भी उस संगठन में सम्मिलित होना स्वीकार करके, सांगा की तरफ से युद्ध के मोर्चे पर खानवा पहुंचे। कुछ पुस्तकों में वर्णन मिलता है कि सांगा की तरफ से बाबर के विरुद्ध पहली तोप मालदेव ने ही दागी थी।

निर्णय बदलने की क्षमता

जोधा में अपने निर्णय को समय रहते ही बदलने की क्षमता थी। उसने छापर-द्रोणपुर अपने पुत्र जोगा को दिया किंतु जब

जोधा ने देखा कि जोगा राज्य करने में असक्षम है तो उसने जोगा के स्थान पर बीदा को छापर-द्रोणपुर का शासक नियुक्त किया।

शक्ति का संचय

राजनीति का एक शाश्वत सिद्धांत है- 'राजत्व बन्धुत्व को नहीं जानता।' जोधा इस सिद्धांत को अच्छी तरह समझता था। इसलिये उसने अपनी पुत्री का विवाह मेवाड़ के राजकुमार के साथ करके अपने राज्य को सुरक्षित नहीं समझ लिया अपितु अपनी शक्ति का संचय भी लगातार जारी रखा। वह जानता था कि राज्य को शक्ति के सहारे ही सुदृढ़ एवं स्थाई बनाया जा सकता है न कि वैवाहिक सम्बन्धों के माध्यम से।

जोधा का निधन

राव जोधा के निधन की तिथियों में अंतर मिलता है। रेउ ने जोधा का निधन 16 अप्रेल 1488 को होना बताया है। ओझा ने जोधा के निधन की तिथि 1489 ई. लिखी है। गोपीनाथ शर्मा ने 1489 ई. तक जोधा द्वारा राज्य किया जाना लिखा है। सामान्य मान्यता है कि जोधा ने 1489 ई. तक राज्य किया। जोधा का निधन उसकी अपनी नई राजधानी जोधपुर में हुआ। इस प्रकार राव जोधा ने 73-74 वर्ष की आयु पाई। जीवन के प्रारम्भिक 23 वर्ष तक वह अपने पिता की छत्रछाया में राजनीति और राजधर्म का प्रशिक्षण लेता रहा। उसके बाद 15 वर्ष तक वह अपने पिता का राज्य वापस प्राप्त करने के लिये घनघोर संघर्ष और विपत्तियों का सामना करता

रहा। तत्पश्चात् 35 वर्ष तक वह राज्य का विस्तार और उन्नति करने में लगा रहा।

जोधा के निधन के समय मारवाड़ राज्य

राव जोधा के निधन के समय मारवाड़ राज्य में मण्डोर, जोधपुर, सोजत, पाली, फलौधी, पोकरण, मेड़ता, महेवा, भाद्राजून, गोड़वाड़ का कुछ भाग, जैतारण, शिव, सिवाणा, सांभर, अजमेर और नागौर आदि नगर एवं उनसे लगते हुए गांव थे। बीकानेर और छापर-द्रोणपुर उसके पुत्रों के अधिकार में स्वतंत्र राज्य थे। इस प्रकार मारवाड़ राज्य की पश्चिमी सीमा जैसलमेर राज्य तक, पूर्वी सीमा आम्बेर राज्य तक, दक्षिणी सीमा मेवाड़ तक तथा उत्तरी सीमा हिसार तक पहुंच गई थी। कर्नल टॉड ने जोधा के राज्य का विस्तार 80 हजार मील की लम्बाई-चौड़ाई में विस्तृत होना बताया है।

जोधा द्वारा दान दिये गये गांव

राव जोधा ने अपने जीवन में अनेक गांव दान किये थे इनमें से 24 गांवों की सूची इस प्रकार से है- 1. कंवलियां, 2. खगड़ी, 3. रेपडावास, 4. साकड़ावास, 5. मथाणिया, 6. बेवटा, 7. बडलिया, 8. चांचलवा, 9. जटियावास कलां, 10. धोलेरिया, 11. खाराबेरा, 12. बासणी, 13. मोडी बड़ी, 14. तोलेयासर, 15. तिवरी, 16. मांडियाई खुर्द, 17. बासणी सेपां, 18. थोब, 19. कोलू-पुरोहितों का वास, 20. खोड़ेचां, 21. लूंडावास, 22. बासणी नरसिंघ, 23. साटीका कलां। 24. जोधावास।

राव जोधा के वंशज

राव जोधा का बड़ा पुत्र नींबा था किंतु जोधा के जीवन काल में ही नींबा का निधन हो चुका था। इसलिये सरदारों ने जोधा के अन्य पुत्र जोगा को उत्तराधिकारी घोषित किया परंतु जोगा के आलस्यपूर्ण व्यवहार के कारण 14 मई 1488 को सातल को गद्दी पर बैठाया गया तथा जोगा को बिलाड़ा और खारिया की जागीरें दी गईं। 13 मार्च 1491 को सातल अजमेर के हाकिम मल्लू खाँ से हुई लड़ाई में अत्यधिक घायल हो जाने के कारण मृत्यु को प्राप्त हुआ। उसके बाद सूजा को मारवाड़ का राव बनाया गया।

जब सूजा जोधपुर राज्य का शासक हुआ तो बीका ने जोधपुर पर अपना अधिकार जताते हुए पड़िहार बेला को जोधपुर भेजकर राव जोधा के छत्र-चंवर आदि राजकीय चिह्न मांगे। सूजा ने राजकीय चिह्न देने से मना कर दिया। इस पर बीका ने जोधपुर पर आक्रमण करके जोधपुर दुर्ग को घेर लिया। इस अवसर पर बीदा द्रोणपुर से 3 हजार सैनिक लेकर बीका की सहायता के लिये आया। दस दिन की घेराबंदी के बाद सूजा की माता हाड़ी जसमादे, बीका से मिली। राजमाता ने बीका से कहा कि तू ने तो अब नया राज्य स्थापित कर लिया है। अपने छोटे भाइयों को रखेगा तो वे रहेंगे। इस पर बीका ने कहा कि मैं तो केवल पूजनीक चीजें चाहता हूँ। इस पर राजमाता के कहने से बीका को निम्नलिखित

राजकीय चिह्न सौंपे गये- (1) राव जोधा की ढाल और तलवार (2) तख्त (3) चंवर (4) छत्र (5) हरभू सांखला की दी हुई कटारी (6) हिरण्यगर्भ लक्ष्मीनारायण की मूर्ति (7) अट्ठारह हाथांे वाली नागणेची की मूर्ति (8) करंड (9) भंवर ढोल (10) वैरिशाल नगारा (11) दलसिंगार घोड़ा और (12) भुंजाई की देग। इनमें से अधिकांश वस्तुएं- तख्त, ढाल, तलवार, कटार, छत्र, चंवर आदि बीकानेर दुर्ग के एक कक्ष में रखी हुई हैं। बीकानेर नरेश विजयादशमी के दिन इस सामग्री एवं प्रतिमाओं का पूजन करते है।

2 अक्टूबर 1515 को सूजा का निधन हो गया। उसके बाद सूजा का पौत्र गांगा जोधपुर का शासक हुआ। इस प्रकार पांच सौ साल तक जोधा के वंशज अपने शत्रुओं से लड़ते रहे और मारवाड़ राज्य पर शासन करते रहे। 1947 ई. में भारत के स्वतंत्र होने के बाद 1949 ई. में मारवाड़ राज्य, राजस्थान में सम्मिलित हो गया।

राव चूण्डा के 24 पुत्र थे। राव रणमल के 26 पुत्र थे। राव जोधा के 20 पुत्र हुए। इस प्रकार इन तीन राजाओं के 70 पुत्र थे। टॉड ने लिखा है कि तीन शताब्दियों में मारवाड़ राज्य में 50 हजार राठौड़ों की सेना तैयार हो गई जो कि एक ही पिता के वंशज थे। इनके अधीन 80 हजार वर्गमील क्षेत्र था।

जोधा के वंशजों द्वारा स्थापित राज्य

राव जोधा के वंशजों ने भारत में कई स्वतंत्र राज्यों की स्थापना की। इनमें से अधिकांश राज्य 1947 ई. में भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद रियासतों के एकीकरण के समय तक चलते रहे।

बीकानेरः राव जोधा के पुत्र अर्थात् दूसरी पीढ़ी के राजकुमार बीका ने, पिता के आदेश से नवीन बीकानेर राज्य की स्थापना की।

बीदावाटीः राव जोधा के पुत्र राजकुमार बीदा को, जोधा एवं बीका ने मोहिलवाटी का राज्य जीतकर दिया जो बीदावाटी कहलाया। यह जोधा एवं बीका के जीवन काल में स्वतंत्र राज्य रहा किंतु बाद में बीकानेर राज्य में मिल गया।

मेड़ताः राव जोधा ने वरसिंह तथा दूदा को मेड़ता की जागीर दी किंतु बाद में वरसिंह ने दूदा को रायण भेज दिया। दूदा कुछ दिन रायण में रहा किंतु वहाँ से अपने बड़े भाई बीका के पास बीकानेर चला गया। जोधा के पुत्र सूजा के समय में वरसिंह की मृत्यु हो गई तथा वरसिंह का पुत्र सीहा मेड़ता का स्वामी हुआ। सीहा अयोग्य तथा मदिरा के नशे में धुत्त में रहता था। इसलिये राव दूदा ने बीकानेर से मेड़ता आकर सीहा को हटा दिया और स्वयं मेड़ता का स्वतंत्र शासक बन गया। राव मालदेव के समय में मेड़ता राज्य, जोधपुर राज्य में सम्मिलित हो गया।

झाबुआः जोधा के पुत्र वरसिंह जिसे जोधा ने मेड़ता की जागीर पर नियुक्त किया था, उसके वंशजों ने मालवा क्षेत्र में झाबुआ राज्य की स्थापना की।

अमझेराः जोधा के छठी पीढ़ी के राव राम, जो कि राव मालदेव का पुत्र था, ने अमझेरा का राज्य स्थापित किया। 1857 ई. में हुए प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में अमझेरा के शासक बख्तावरसिंह ने क्रांतिकारी सैनिकों का साथ दिया। इसलिये यह राज्य सिंधिया को दे दिया गया।

किशनगढ़ः जोधा की आठवीं पीढ़ी के राजकुमार किशनसिंह, जो कि मोटा राजा उदयसिंह का पुत्र था, ने किशनगढ़ राज्य की स्थापना की।

रतलामः जोधा की नौंवी पीढ़ी के राजकुमार राव रतनसिंह ने रतलाम का राज्य स्थापित किया।

सीतामऊः रतलाम की शाखा के राजकुमारों ने सीता मऊ का राज्य स्थापित किया।

सैलानाः रतलाम की शाखा के राजकुमारों ने सैलाना का राज्य स्थापित किया।

नागौरः राव जोधा के दसवीं पीढ़ी के राजकुमार राव अमरसिंह ने जोधपुर राज्य में से पृथक एवं स्वतंत्र नागौर राज्य की स्थापना की। महाराजा अजीतसिंह के समय में नागौर राज्य पुनः जोधपुर राज्य में सम्मिलित कर लिया गया।

नागौरः राव जोधा के बारहवीं पीढ़ी के राजकुमार, राजाधिराज बखतसिंह ने जोधपुर राज्य में से अर्द्ध-स्वतंत्र नागौर राज्य की स्थापना की जो स्वयं बखतसिंह के जोधपुर का राजा बन जाने पर जोधपुर राज्य में सम्मिलित हो गया।

रूपनगढ़ः जोधा के वंशज सावंतसिंह के पुत्र राजकुमार सरदारसिंह ने किशनगढ़ राज्य में से अलग रूपनगढ़ राज्य की स्थापना की। बाद में बिड़दसिंह के समय यह राज्य पुनः किशनगढ़ राज्य में सम्मिलित हो गया।

ईडरः ईडर राज्य की स्थापना मूलतः सीहा के पुत्र सोनिंग ने की थी। जोधपुर नरेश अभयसिंह के समय में मुगल बादशाह ने ईडर का राज्य अभयसिंह को दे दिया। अभयसिंह के भाई आनंदसिंह ने अभयसिंह से असंतुष्ट होकर ईडर राज्य पर अधिकार कर लिया तथा ईडर राज्य की पुनर्स्थापना की।

जोधा के वंश के प्रमुख व्यक्ति

राव जोधा के वंश में ऐसे कई व्यक्ति हुए जिन्होंने इतिहास में अपने लिये विशेष स्थान बनाने में सफलता प्राप्त की। एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका एवं एनसाइक्लोपीडिया इण्डिका जैसे विश्व-कोष एवं विकीपीडिया जैसी विश्व स्तरीय वैबसाइट जोधा के वंशजों के परिचय से भरे पड़े हैं। भारतीय सिनेमा ने जोधा के अनेक वंशजों को सिनेमा के पर्दे पर स्थान दिया। भारत सरकार ने जोधा के अनेक वंशजों पर डाक टिकट जारी किये। सैंकड़ों पुस्तकों में जोधा तथा उसके वंशजों का उल्लेख किया गया है। जोधा के कई वंशजों के भारत एवं भारत से बाहर सैंकड़ों मंदिर बने जो आज भी अस्तित्व में हैं। जोधा के अनेक वंशज दुराधर्ष योद्धा, उत्तम चित्रकार, उत्कृष्ट कोटि के साहित्यकार, उच्च स्तरीय भक्त एवं महादानी हुए। उसके वंशज हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये युगों तक जाने जाते रहेंगे।


मीरां बाई

मीरां बाई : मीरां बाई, राव जोधा के पुत्र दूदा की पौत्री तथा रत्नसिंह की पुत्री थी। मीरां बाई का विवाह महाराणा सांगा के बड़े पुत्र भोजराज

से हुआ था। मीरां बाई ने कृष्ण भक्ति करके विश्व स्तर पर ख्याति प्राप्त की तथा वैष्णव भक्तों में एवं हिन्दी साहित्य जगत में अपना नाम अमर किया। मीरां बाई पर भारत सरकार ने डाक टिकट जारी किया।

जयमल राठौड़ : राव जोधा के पुत्र दूदा का पौत्र तथा वीरमदेव का पुत्र जयमल राठौड़, मीरां बाई का चचेरा भाई था। उसने अकबर के चित्तौड़ आक्रमण के समय चित्तौड़ दुर्ग की रक्षा करते हुए अद्भुत पराक्रम का परिचय दिया तथा वीरगति को प्राप्त हुआ। अकबर ने इसकी मूर्ति आगरा के महलों में लगवाई। आगरा, दिल्ली, माण्डू तथा काठमाण्डू में भी इसकी मूर्तियां लगीं।



जयमल राठौड़

कल्ला राठौड़ : जोधा का वंशज कल्ला राठौड़, राव जयमल के छोटे भाई आससिंह का पुत्र था। मीरां, कल्ला राठौड़ की बुआ थी। अकबर के चित्तौड़ घेरे के दौरान राठौड़ जयमल जब अकबर की गोली से घायल हो गया तब इसी कल्ला राठौड़ ने जयमल को अपने कंधों पर बैठा कर युद्ध किया था। दो हाथों से जयमल द्वारा एवं दो हाथों से कल्ला द्वारा तलवार चलाये जाने के


कल्ला राठौड़

कारण कहा जाता है कि कल्लाजी चतुर्भुज रूप में प्रकट हुए। उन्हें चार हाथों वाला लोकदेवता तथा शेषनाग का अवतार माना जाता है। वे सर्पदंश का अचूक उपचार करते थे। मारवाड़, मेवाड़, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, गुजरात तथा मध्यप्रदेश में उनके लगभग पाँच सौ मंदिर हैं।

मालदेव : मालदेव, जोधा के वंश में सर्वाधिक प्रतापी राजा हुआ। अपने पराक्रम से उसने जोधपुर राज्य की सीमाएं गुजरात से लेकर आगरा और दिल्ली तक विस्तृत कर दीं। शेरशाह से परास्त होकर हुमायूं ने मालदेव से शरण मांगी किंतु मालदेव ने मना कर दिया। शेरशाह के छल-कपट के कारण मालदेव शेरशाह से परास्त हो गया किंतु शीघ्र ही उसने अपने राज्य पर फिर से अधिकार कर लिया।

चंद्रसेन : जोधा के वंश में उत्पन्न मालदेव का पुत्र चंद्रसेन अपनी वीरता के साथ-साथ स्वातंत्र्य प्रेम के लिये इतिहास में महाराणा प्रताप के समान ही उच्च स्थान रखता है। इसने महाराणा

प्रताप के साथ मिलकर अकबर के विरुद्ध राजपूताना के राजाओं का एक संघ बनाया।

कल्ला राठौड़ : जोधा का यह वंशज, मारवाड़ नरेश मालदेव का पौत्र तथा रायमल का पुत्र था। इसे सिवाना की जागीर मिली हुई थी। एक बार अकबर ने बूंदी के हाड़ा शासक से कहा कि हमारी इच्छा है कि आपकी पुत्री का विवाह शहजादे सलीम से हो। भरे दरबार में यह प्रस्ताव सुनकर हाड़ा हतप्रभ रह गया। उसने सहायता के लिये दरबार में दृष्टि दौड़ाई। समस्त हिन्दू राजाओं ने दृष्टि नीची कर ली किंतु सिवाना का कल्ला रायमलोत निर्भीकता से मूंछों पर ताव देते हुए हाड़ा की तरफ देखने लगा। कल्ला से दृष्टि मिलते ही हाड़ा को बचाव का रास्ता मिल गया। हाड़ा ने कहा, मेरी बेटी की सगाई हो चुकी है। बादशाह ने पूछा किसके साथ? कल्ला ने अपनी मूंछों पर ताव देते हुए कहा, मेरे साथ। बादशाह समझ गया कि इस बात में सच्चाई नहीं है किंतु स्वाभिमान की चौखट पर खड़े हिंदू राजा की बात को अभिमानी बादशाह काट नहीं सका। एक हिंदू नारी की अस्मिता की रक्षा के लिये अकबर के दरबार में दिखाये गये इस साहस का भुगतान कुछ दिन बाद कल्ला रायमलोत को अपने प्राणों से हाथ धोकर करना पड़ा।

अमरसिंह राठौड़ : यह जोधपुर नरेश महाराजा गजसिंह का पुत्र तथा महाराजा जसवंतसिंह का बड़ा भाई था। यह इतना स्वाभिमानी था कि अपने पिता की गलत बातों को भी सहन नहीं करता था। इसलिये इसे जोधपुर राज्य छोड़ना पड़ा। शाहजहां ने



अमरसिंह राठौड़ पर
बने चलचित्र का पोस्टर

उसे नागौर का पृथक राज्य प्रदान किया। यह अकेला हिन्दू राजा था जिसने शाहजहां के दरबार में नंगी तलवार निकालकर शाहजहां के बख्शी को मार डाला। अपने स्वाभिमान की रक्षा करते हुए ही यह शाहजहां के दरबार में युद्ध करता हुआ मारा गया।

जसवंतसिंह : जोधपुर नरेश जसवंतसिंह औरंगजेब के शासन में हिन्दू शक्ति के प्रतीक माने जाते थे। दारा और औरंगजेब के बीचे हुए उत्तराधिकार के युद्ध में जसवंतसिंह ने दारा का पक्ष लिया किंतु धरमत के युद्ध में दारा को कड़ी पराजय का सामना करना पड़ा। औरंगजेब ने जसवंतसिंह को गुजरात का सूबेदार बनाकर छत्रपति शिवाजी के विरुद्ध लड़ने भेजा। जसवंतसिंह ने छत्रपति के विरुद्ध विशेष सफलता अर्जित नहीं की। इस पर

औरंगजेब जसवन्तसिंह से अत्यधिक नाराज हो गया तथा उसे पठानों के विरुद्ध लड़ने के लिये काबुल भेज दिया तथा पीछे से उसके पुत्र पृथ्वीसिंह की हत्या करवा दी। 28 नवम्बर 1678 को काबुल के मोर्चे पर जसवंतसिंह की मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु का समाचार पाकर औरंगजेब ने कहा, आज कुफ्र का दरवाजा टूट गया। उसी समय औरंगजेब की बेगम ने कहा, आज शोक का दिन है क्योंकि साम्राज्य का दृढ़ स्तंभ टूट गया। जसवंतसिंह की मृत्यु के बाद मारवाड़ राज्य मुगल सल्तनत में मिला लिया गया। जोधा के वंशज 29 वर्ष तक जोधपुर में नहीं घुस सके।

दुर्गादास : दुर्गादास राठौड़, आसकरण का पुत्र था। शिशु-राजा अजीतसिंह को औरंगजेब की दाढ़ में से सफलतापूर्वक निकालने का काम वीर दुर्गादास तथा मुकुनदास खींची ने किया था। जब औरंगजेब ने मारवाड़ खालसा कर लिया तब दुर्गादास ने 29 वर्ष तक राठौड़ राज्य की स्वतंत्रता के लिये हुए युद्ध का नेतृत्व किया।



उसके लिये यह दोहा कहा जाता है- 'डम्बक डम्बक ढोल बाजे, दे-दे ठौर नगारां की। आसे घर दुरगो नहिं होतो, होती सुन्नत सारां की।'

कर्णसिंह : जोधा का वंशज कर्णसिंह बीकानेर का राजा तथा शाहजहां और औरंगजेब का समकालीन था। उसके समय में औरंगजेब ने भारत के समस्त हिन्दू राजाओं को ईरान ले जाकर उनकी सुन्नत करने का षड़यंत्र रचा। साहबे के सैयद फकीर ने यह बात हिन्दू राजाओं को बता दी। उस समय ये लोग अटक में डेरा डाले हुए थे। बीकानेर नरेश कर्णसिंह ने धर्म की रक्षा के लिये अपना सिर कटवाने का निश्चय करके योजना निर्धारित की कि जब औरंगजेब अटक नदी पार कर ले तब समस्त हिन्दू सरदार अपने-अपने राज्य को लौट जायें। जब औरंगजेब ने नदी पार कर ली तब समस्त हिन्दू नरेशों ने नावें इकट्ठी करके उनमें आग लगा दी। सारे राजाओं ने कर्णसिंह का बड़ा सम्मान किया और उसे जंगलधर पादशाह की उपाधि दी। औरंगजेब को हिन्दू राजाओं के निश्चय का पता लगा तो वह कुरान हाथ में लेकर राजाओं के पास आया और ऐसा करने का कारण पूछा। तब राजाओं ने जवाब दिया, तुमने तो हमें मुसलमान बनाने का षड़यंत्र रच लिया इसलिये तुम हमारे बादशाह नहीं। हमारा बादशाह तो बीकानेर का राजा है। जो वह कहेगा वही करेंगे, धर्म छोड़कर जीवित नहीं रहेंगे। तब औरंगजेब ने कुरान सामने रखकर शपथ ली कि अब ऐसा नहीं होगा, जैसा आप लोग कहोगे, वैसा ही करूंगा। आप

लोग मेरे साथ दिल्ली चलो। आप लोगों ने कर्णसिंह को जंगल का बादशाह कहा है तो वह जंगल का ही बादशाह रहेगा। दिल्ली लौटकर औरंगजेब ने कर्णसिंह का राज्य छीनकर औरंगाबाद भेज दिया जहाँ 22 जून 1669 को महाराजा कर्णसिंह ने स्वर्गारोहण किया।

अनूपसिंह : जब महाराजा कर्णसिंह से राजपाट छीना गया तब अनूपसिंह बीकानेर का राजा हुआ। अनूपसिंह संस्कृत भाषा का अधिकारी विद्वान था उसने अनूप विवेक (तंत्रशास्त्र), काम प्रबोध (कामशास्त्र), श्राद्ध प्रयोग चिंतामणि और गीत गोविंद की अनूपोदय नामक टीका लिखी। उसके दरबार में संस्कृत के अनेक विद्वान रहते थे। अनूपसिंह संगीत विद्या में भी निष्णात था। उसने संगीत सम्बन्धी अनेक ग्रंथों की रचना की। अनूपसिंह ने अनूपगढ़ नामक दुर्ग का निर्माण करवाया। उसने देश भर के दुर्लभ संस्कृत-ग्रंथों को खरीद कर बीकानेर के पुस्तकालय में सुरक्षित करवाया ताकि उन्हें औरंगजेब नष्ट न कर सके। इस ग्रंथागार में इतनी बड़ी संख्या में ग्रंथ संग्रहीत हैं कि देखकर आश्चर्य होता है। पुस्तकों की ही भांति मूर्तियों को भी उसने हिन्दुस्तान के विभिन्न स्थानों से खरीदकर बीकानेर में संग्रहीत करवाया ताकि उन्हें मुसलमानों द्वारा नष्ट किये जाने से बचाया जा सके। मूर्तियों का यह विशाल भण्डार 33 करोड़ देवताओं का मंदिर कहलाता है।

केसरीसिंह और पद्मसिंह : महाराजा कर्णसिंह के पुत्र केसरीसिंह, पदमसिंह और मोहनसिंह अत्यंत पराक्रमी थे।

औरंगजेब ने चतुराई, कपट और कृत्रिम विनय से उन्हें अपने कब्जे में कर रखा था। जब केसरीसिंह और पद्मसिंह दारा शिकोह को खजुराहो के मैदान में परास्त कर औरंगजेब के पास लाये तो औरंगजेब ने अपने रूमाल से उनके बख्तरों की धूल साफ की। पद्मसिंह को बीकानेर राजवंश का सबसे वीर पुरुष माना जाता है। उसकी तलवार का वजन आठ पौण्ड तथा खाण्डे का वजन पच्चीस पौण्ड था। वह घोड़े पर बैठकर बल्लम से शेर का शिकार करता था।

चारुमति : राव जोधा के वंश में उत्पन्न चारुमति किशनगढ़ राज्य की राजकुमारी तथा भगवान की बड़ी भक्त थी। उसने भक्ति भाव के कई पद लिखे हैं। जब चारुमति का भाई एवं किशनगढ़ का राजा मानसिंह अवयस्क था, तब औरंगजेब ने चारुमति का डोला मंगवाया। चारुमति ने मेवाड़ के महाराणा राजसिंह से कहलवाया कि मैंने आपको अपना पति माना है, मेरे धर्म की रक्षा करें। इस पर राजसिंह चारुमति को ले गया तथा औरंगजेब देखता ही रह गया।

नागरीदास : राव जोधा के वंश में उत्पन्न सांवलदास किशनगढ़ राज्य का उत्तराधिकारी था किंतु उसने अपना जीवन श्री कृष्ण भक्ति में अर्पित किया तथा अपने राज्य में न आकर वृंदावन में ही निवास किया। राधारानी का एक नाम नागरी भी है इसलिये सावंतदास ने अपना नाम नागरीदास रख लिया। उसने किशनगढ़ की चित्रकला शैली का प्रवर्तन किया। इस शैली का बनी-ठनी का चित्र विश्व स्तर पर प्रसिद्ध हुआ। बनी-ठनी पर भारत सरकार ने डाक टिकट जारी किया।



महाराजा सावंतदास ने अपना नाम नागरीदास रख लिया

रूपसिंह : राव जोधा के वंश में उत्पन्न किशनगढ़ का राजा रूपसिंह, शाहजहां का समकालीन था। वह भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति करके वैष्णव भक्तों के इतिहास में अमर हुआ। उसने भगवान को अर्पित करके कई पदों की रचना की। वह अच्छा चित्रकार भी था। शाहजहां के पुत्रों के बीच हुए उत्तराधिकार के युद्ध में रूपसिंह

ने दारा का पक्ष लिया। शामूगढ़ के युद्ध में इसने औरंगजेब के हाथी की अम्बारी की रस्सी काट दी। इस कारण औरंगजेब हाथी से नीचे गिरने लगा किंतु औरंगजेब के सैनिकों ने औरंगजेब को बचा लिया तथा रूपसिंह के शरीर के टुकड़े कर दिये।

विजयसिंह : जोधपुर नरेश विजयसिंह के समय में मराठे पूरे उत्तर भारत को रौंदते रहे थे। महाराजा विजयसिंह उत्तर भारत का अकेला ऐसा राजा था जो 40 साल तक मराठों से लोहा लेता रहा। तुंगा की लड़ाई में उसने महादजी सिंधिया को परास्त करके ऐतिहासिक जीत प्राप्त की। मआसिरुल उमरा ने लिखा है कि मारवाड़ का राजा विजयसिंह रियाया परवरी, अधीन होने वालों की परवरिश और सरकशों की सर शिकनी में मशहूर है।

मानसिंह : जोधा का वंशज जोधपुर नरेश मानसिंह उद्भट विद्वान था। उसने दो दर्जन से अधिक ग्रंथों की रचना की जो भक्ति एवं श्रृंगार रस से परिपूर्ण हैं। उसके दरबार में कई कवि एवं विद्वान आश्रय पाते थे। महाराजा मानसिंह ने नाथ आयसनाथ को अपना गुरु बनाया। अंग्रेजी रेजीडेण्ट कप्तान लडलू ने नाथों को पकड़ कर अजमेर भिजवा दिया तथा कई प्रमुख नाथों को देश निकाला दे दिया जिससे मानसिंह राज्य के प्रति उदासीन होकर राज्य त्यागकर मण्डोर चले गये तथा देह का त्याग कर दिया। महाराजा ने 27 कवियों को लाख पसाव तथा 61 कवियों को जागीरें दीं। सुप्रसिद्ध कवि आसिया बांकीदास इनका काव्य गुरु था जिसे राजा अत्यंत श्रद्धा से देखता था किंतु राजा ने बांकीदास को केवल



जोधपुर नरेश मानसिंह

इसलिये देश निकाला दे दिया कि उसने एक पद में नाथों की आलोचना कर दी थी। राजा ने एक बार एक गधे पर भगवा कपड़ा पड़ा हुआ देखा तो उसे श्रद्धा पूर्वक नमस्कार किया। दरबारियों के पूछने पर राजा ने बताया कि जिसने भगवा धारण कर रखा हो वह मेरे लिये पूज्य है।

गंगासिंह : जोधा का वंशज गंगासिंह बीकानेर का प्रतापी राजा हुआ। उसने बीकानेर राज्य में गंगनहर का निर्माण करवाया जिसके कारण बीकानेर के किसानों को हिमालय पर्वत का जल उपलब्ध हो सका। अंग्रेजों के शासन में उसकी बहुत प्रतिष्ठा थी। प्रथम विश्वयुद्ध (ई.1914-1919) में उसकी सेना- गंगा रिसाला, स्वेज नहर, इजिप्ट, पर्सिया एवं इराक के मोर्चे पर लड़ने के लिये


महाराजा गंगासिंह

गई। वह ब्रिटिश साम्राज्य की पहली युद्ध परिषद तथा बाद में वर्साइ की संधि में भारतीय नरेशों के प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित हुआ। 1917 ई. में लन्दन में आयोजित साम्राज्यिक सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिये जिन तीन भारतीयों को मनोनीत किया गया उनमें से महाराजा गंगासिंह एक था। 9 फरवरी 1921 को उसे नरेन्द्र मण्डल का प्रथम चांसलर चुना गया, 1926 ई. तक वह इस पद पर रहा।


महाराजा सादूलसिंह

सादूलसिंह : जोधा का वंशज सादूलसिंह बीकानेर का अंतिम राजा था। उसने भारत के एकीकरण में प्रमुख भूमिका निभाई तथा भोपाल नवाब हमीदुल्ला खाँ के नेतृत्व में चल रहे उस षड़यंत्र को विफल कर दिया जिसके द्वारा मुहम्मद अली जिन्ना कुछ राजपूत रियासतों को

पाकिस्तान में मिलाकर भारत को सदैव के लिये कमजोर कर देना चाहता था। सरदार पटेल ने इस राजा को पत्र लिखकर उसकी प्रशंसा करते हुए लिखा कि भारत सदैव आपका ऋणी रहेगा।


महाराजा उम्मेदसिंह

महाराजा उम्मेदसिंह : जोधा का वंशज जोधपुर नरेश उम्मेदसिंह प्रजापालक राजा था। उसे आधुनिक जोधपुर का निर्माता कहा जाता है। उसने जोधपुर में नागरिक उड्डयन सेवाएं आरम्भ कीं तथा किसानों के खेतों में सिंचाई के लिये जवाई बांध बनवाया। जब देश का स्वतंत्रता आंदोलन चरम पर पहुंचा और प्रजातंत्र के झौंके तीव्र हो गये तो इस प्रजापालक राजा ने सरदार समन्द क्षेत्र की भूमि अपने पैतृक पट्टे में लिखवाकर अपने को काश्तकार घोषित कर दिया। कहा जाता है कि एक बार उसने प्रजा के साथ भ्रष्ट आचरण करने वाले अपने एक सामंत को चाबुक से ठीक किया।

तिथिक्रम

29 मार्च 1415 : जोधा का जन्म (पं. विश्वेश्वर नाथ रेउ के अनुसार)

1 अप्रेल 1416 : जोधा का जन्म (गौरीशंकर हीराचंद ओझा के अनुसार)

1427 ई. : राव रणमल के साथ सत्ता के विरुद्ध मण्डोर युद्ध में भागीदारी।

1433 ई. : राव रणमल के साथ, महाराणा मोकल की हत्या का बदला लेने के लिये किये गये मेवाड़ अभियान में भागीदारी।

1438 ई. : राव रणमल की हत्या हो जाने के बाद 700 साथियों सहित चित्तौड़ से पलायन। मेवाड़ पर महाराणा कुम्भा की सेना का अधिकार। जोधा की माता कोडमदे, कोडमदे तालाब के किनारे सती हुई।

1453 ई. : जोधा द्वारा कोसाना, चौकड़ी, मण्डोर एवं सोजत पर पुनः अधिकार। बड़े भाई अखैराज द्वारा अपने अंगूठे के रक्त से जोधा का राज्याभिषेक। कापरड़ा तथा रोहट पर अधिकार। नरबद का मण्डोर दुर्ग पर अधिकार। राव जोधा द्वारा नरबद को भगाकर पुनः मण्डोर पर अधिकार। राव जोधा द्वारा चित्तौड़ दुर्ग पर आक्रमण

एवं सेठ पद्मचंद का अपहरण। महाराणा कुंभा तथा राव जोधा के बीच आंवळ-बांवळ की संधि। राव जोधा की पुत्री श्रृंगार देवी का महाराणा कुम्भा के पुत्र रायमल के साथ विवाह।

1458 ई. : सींधल राठौड़ों के 30 गांवों पर राव जोधा का अधिकार। राव जोधा का शास्त्रोक्त विधि से राज्याभिषेक। राव जोधा द्वारा मण्डोर के निकट जोधेलाव तालाब का निर्माण।

1504 ई. : राव जोधा की पुत्री श्रृंगार देवी द्वारा घोसुंडी गांव में पक्की बावली का निर्माण।

12 मई 1459 : करणी माता द्वारा मण्डोर से 6 मील दूर दक्षिण में चिड़ियानाथ की टूंक पर मेहरानगढ़ दुर्ग का शिलान्यास। सिंध से 65 पुष्करणा ब्राह्मण परिवारों का जोधा को आशीर्वाद देने के लिये आगमन तथा जोधपुर में स्थाई निवास। जोधा की हाड़ी रानी जसमादे द्वारा दुर्ग की तलहटी में रानी सागर तालाब का निर्माण। जोधा की सोनगरी रानी चांद कुंवरी द्वारा चांद बावड़ी का निर्माण। बलोचों द्वारा जांगलू के राजा नापा सांखला पर आक्रमण किये जाने पर राव जोधा द्वारा नापा की सहायता के लिये जांगलू की तरफ अभियान।

जोधा द्वारा अपनी माता द्वारा बनवाये गये कोडमदेसर तालाब की प्रतिष्ठा तथा कीर्ति स्तम्भ की स्थापना।

1460 ई. : मण्डोर स्थित चामुण्डा विग्रह की मेहरानगढ़ दुर्ग में स्थापना। चौकेलाव में राव जोधा का तिलक। राव जोधा द्वारा मेड़ता, फलौधी, पोकरण, भाद्राजून, सोजत, जैतारण, सिवाना, शिव, नागौर तथा मेवाड़ राज्य के गोड़वाड़ प्रदेश के कुछ भाग पर अधिकार।

1461 ई. : राव जोधा के आदेश पर उसके पुत्रों वरसिंह तथा दूदा द्वारा मेड़ता तथा उसके निकटवर्ती 360 गांवों पर अधिकार।

1462 ई. : राव जोधा द्वारा प्रयाग, काशी और गया तीर्थों की यात्रा। बहलोल लोदी से भेंट। जौनपुर के बादशाह से भेंट। ग्वालियर के निकट गढ़ियों को तोड़कर भोमियों को दण्ड। मेड़ता के दक्षिण में नई बस्ती की स्थापना।

1464 ई. : राव जोधा के बड़े पुत्र नींबा द्वारा बीसलपुर के स्वामी जैसा सींधल पर आक्रमण। घायल नींबा की पांच माह बाद मृत्यु। जोधा द्वारा सूजा की सोजत में नियुक्ति।

1464 ई. : छापर-द्रोणपुर के स्वामी एवं राव जोधा के जामाता मोहिल अजीतसिंह, द्वारा मारवाड़ राज्य में उपद्रव। जोधा द्वारा अजीतसिंह के विरुद्ध सैनिक अभियान, अजीतसिंह की मृत्यु।

1465 ई. : जोधा के दूसरे नम्बर के राजकुमार बीका द्वारा अपने चाचा कांधल और सांखला नापा आदि के साथ जांगलू की तरफ प्रस्थान एवं बीस वर्ष तक लगातार संघर्ष करके बीकानेर राज्य का निर्माण।

1485 ई. : राव बीका द्वारा नये दुर्ग का शिलान्यास तथा बीकानेर नगर की स्थापना।

1467 ई. : राव जोधा के राजकुमारों करमसी, रायपाल और वणवीर का नागौर के कायमखानी शासक फतनखाँ के पास पहुंचना। फतनखाँ द्वारा करमसी को खींवसर और रायपाल को आसोप की जागीर दिइया जाना। राव जोधा के निर्देश पर राजकुमारों द्वारा फतनखां द्वारा प्रदत्त जागीरों का त्याग तथा अपने बड़े भाई बीका के पास गमन। फतनखाँ द्वारा मारवाड़ के गांवों में उत्पात। राव जोधा द्वारा नागौर पर चढ़ाई एवं अधिकार। राव जोधा द्वारा करमसी को खींवसर और रायपाल को आसोप की जागीर का अधिकार।

1468 ई. : कुम्भा के राज्य लोभी ज्येष्ठ पुत्र ऊदा द्वारा महाराणा कुम्भा की हत्या एवं जोधा को अजमेर एवं सांभर का अधिकार।

1474 ई. : राव जोधा द्वारा छापर-द्रोणपुर पर आक्रमण। दिल्ली सल्तनत का सेनापति सारंग खां की पराजय एवं मृत्यु।

1475 ई. : राव जोधा द्वारा छापर-द्रोणपुर पर अधिकार करके जोगा को वहाँ का शासक नियुक्त किया जाना। जोगा के असफल रहने पर बीदा को छापर-द्रोणपुर का शासक नियुक्त किया जाना। जोधपुर एवं बीकानेर की संयुक्त सेनाओं द्वारा लाडनूं पर अधिकार। बीका द्वारा जोधा को लाडनूं भेंट किया जाना। जोधा द्वारा बीका को जोधपुर राज्य का उत्तराधिकार त्यागने का निर्देश।

1478 ई. : जोधा के निर्देश पर जोधा के चचेरे भाई वरजांग द्वारा जालोर के शासक उस्मान खाँ तथा सिरोही के रावल लाखा का दमन।

1486 ई. : आमेर नरेश चंद्रसेन द्वारा सांभर पर चढ़ाई। राव जोधा द्वारा सेना भेजकर सांभर की रक्षा। जैसलमेर के रावल देवीदास द्वारा शिव पर अधिकार। राव जोधा के निर्देश पर वरजांग द्वारा शिव पर पुनः अधिकार एवं भाटियों से दण्ड की वसूली।

16 अप्रेल 1488 : राव जोधा का निधन (पं. विश्वेश्वर नाथ रेउ के अनुसार)।

1489 : राव जोधा का निधन (गौरीशंकर हीराचंद ओझा एवं डॉ. गोपीनाथ शर्मा के अनुसार)।

संदर्भ सूची

ख्यात एवं वात साहित्य

बांकीदास री ख्यात, दयालदास री ख्यात, मूथा नैणसी री ख्यात, जोधपुर राज्य की ख्यात, नैणसी : मारवाड़ रा परगनां री विगत, राव रणमल री वात, रामचंद ढाढी कृत निसाणी, बात दूदै जोधावत री, छंद राव जैतसी रो, राव जोधा रै बेटों री विगत, कवि गाडण पसाइत कृत गुण जोधायण, गुण रूपक। जयसोम द्वारा रचित कर्मचन्द्रवंशोत्कीर्तनक काव्यम्।

गजेटियर्स

- अर्सकिन, के. डी. (मेजर) : इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया, प्रोविंसियल सीरिज राजपूताना, प्रथम संस्करण 1908, प्रथम रीप्रिण्ट, 2007 बुक्स ट्रीजर, जोधपुर।
- राजपूताना गजेटियर्स, दी वेस्टर्न राजपूताना स्टेट्स रेजीडेंसी एण्ड बीकानेर,(टैक्स्ट एण्ड स्टेटेस्टिकल वॉल्यूम्स) रीप्रिण्ट 1992, विन्टेग बुक्स, गुड़गांव।
- पाउलेट : गजेटियर ऑफ दी बीकानेर स्टेट।
- वॉल्टर : गजेटियर ऑफ मारवाड़।

आधुनिक काल के ग्रंथ

- ओझा, गौरीशंकर हीराचंद (महामहोपाध्याय): जोधपुर राज्य का इतिहास, प्रथम एवं द्वितीय खण्ड, 1997, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर।

  बीकानेर राज्य का इतिहास, प्रथम एवं द्वितीय खण्ड, प्रथम संस्करण 1940, द्वितीय संस्करण 2007, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर।

  उदयपुर राज्य का इतिहास, प्रथम एवं द्वितीय खण्ड, प्रथम आवृत्ति 1928, द्वितीय संस्करण 2006, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर।
- गहलोत, जगदीशसिंह : मारवाड़ राज्य का इतिहास, प्रथम संस्करण 1925, मानसिंह पुस्तक प्रकाश, जोधपुर।
- गहलोत, सुखवीरसिंह (सं.) : जोधपुर का सांस्कृतिक वैभव।
- गुप्ता, मोहनलाल (डॉ.) : दर्शनीय जोधपुर, प्रथम संस्करण, 1999, शुभदा प्रकाशन, जोधपुर।

  जोधपुर संभाग का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन, छठा संस्करण, 2013, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर।

  नागौर का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, प्रथम संस्करण 1999, शुभदा प्रकाशन, जोधपुर।

  जालोर का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, प्रथम संस्करण, 1995, मातृछाया प्रकाशन, जालोर।
- टॉड, जेम्स (कर्नल) : एनल्स एण्ड एण्टिक्विटीज ऑफ राजस्थान,

- मेहर, जहूर खाँ : राजस्थान के इतिहास का सर्वेक्षण
- मेहर, जहूर खाँ एवं नगर महेन्द्रसिंह (डॉ.): जोधपुर का ऐतिहासिक दुर्ग मेहरानगढ़, मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट, जोधपुर
- रामकर्ण आसोपा: मारवाड़ का मूल इतिहास।
- रेउ, विश्वेश्वर नाथ (पं.) : मारवाड़ राज्य का इतिहास, प्रथम एवं द्वितीय भाग, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, प्रथम संस्करण 1940, संशोधित पुनर्मुद्रण, 1998, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर।

  ग्लोरीज ऑफ मारवाड़ एण्ड द ग्लोरियस राठौड़स
- शर्मा, गोपीनाथ (डॉ.) : राजस्थान का इतिहास, जयपुर।

  राजस्थान थ्रू दी एजेज, वोल्यम 2 (फ्रॉम 1300-1761), प्रथम संस्करण 1990, राजस्थान स्टेट आर्काइव्ज, बीकानेर।
- शेखावत, कल्याणसिंह (प्रो.,डॉ.) : मीराँबाई का ऐतिहासिक एवं प्रामाणिक जीवनवृत्त, 2013, आनन्द प्रकाशन, जोधपुर।
- व्यास, मांगीलाल : जोधपुर राज्य का इतिहास।
- श्यामलदास, वीर विनोद।
- शारदा, हर विलास : महाराणा कुम्भा।